कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा
(संयोजक: बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा)

संयोजक: बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व

: संपादक :

पुनीत कुमार मिश्र

सदस्य सचिव - नराकास (बैंक), वडोदरा
एवं सहायक महाप्रबंधक, बैंक ऑफ़ बड़ौदा

: संपादन सहयोग :

प्रोमिला गोयत, वरिष्ठ प्रबंधक

हिमानी पटेल, व्यवसाय सहयोगी

समिति सचिवालय
राजभाषा विभाग
प्रधान कार्यालय
"बड़ौदा भवन"
पांचवा तल
आर सी दत्त रोड,
अलकापुरी, बड़ौदा - 390007
फोन : 0265-2316581
ई-मेल: banknarakas.baroda@bankofbaroda.com

© नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा

प्रथम संस्करण
सन् 2023

इस पुस्तक में अभिव्यक्त विचार, शब्द चयन एवं भाषा संबंधी प्रयोग लेखकों के अपने हैं।
नगर समिति अथवा बैंक ऑफ़ बड़ौदा का इससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

आमुख

वर्तमान समय में ईएसजी भारत सरकार के साथ-साथ समाज, सभी संस्थाओं और कॉर्पोरेट जगत के प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल है। विकास की दिशा में अग्रसर रहने के साथ ही हमें पर्यायवरण के प्रति भी अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए। स्वच्छ पर्यावरण ही समृद्धशाली भविष्य का आधार है। हम नियमित आधार पर प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को निभाते हैं, परंतु इसके प्रति कहीं न कहीं व्यक्ति, समाज और कॉर्पोरेट जगत में एक केंद्रित प्रयासों की कमी भी दृष्टिगोचर हुई है। ईएसजी की संकल्पना ने इस विषय वस्तु की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा समाज की आर्थिक उन्नति के साथ ही पर्यावरण के संरक्षण के प्रति भी जागरूक है। बैंक ऑफ़ बड़ौदा द्वारा कर्मचारियों और समाज के बीच पर्यावरण तथा हरित पहल के प्रति जागरूकता प्रसारित करने के उद्देश्य से बैंक के स्थापना दिवस यानी 20 जुलाई, 2023 को बॉब अर्थ लॉंगो का अनावरण किया गया। इसके अंतर्गत बैंक द्वारा पर्यावरण संरक्षण तथा हरित पहल के तहत सभी गतिविधियों यथा: ग्रीन बिल्डिंग पहल, रूफ़टॉप पर सोलर पैनल को इंस्टाल करना, वर्षा जल संरक्षण, बायो गैस प्लांट इत्यादि से संबंधित पहल शामिल हैं।

बदलते बैंकिंग परिवेश में ईएसजी के बढ़ते प्रभाव को देखते हुए तथा ग्राहकों द्वारा निवेश से पहले किसी भी संस्थान द्वारा ईएसजी के प्रति किए जा रहे पहलों और रुझान के आकलन के प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा के मंच से इस विषय पर क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई के अंतर्गत कार्यरत सभी नगर समितियों के स्टाफ सदस्यों के लिए "कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व" विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया ताकि इस समसामयिक विषय पर सभी स्तरों पर समुचित जागरूकता का प्रसार हो सके तथा संदर्भित विषय पर उपयोगी पठन सामग्री को एक बड़े पाठक वर्ग तक पहुंचाया जा सके।

सेमिनार हेतु निर्धारित विषय पर हमें विभिन्न संस्थाओं के स्टाफ सदस्यों से कई महत्त्वपूर्ण और उत्कृष्ट आलेख प्राप्त हुए हैं। इन आलेखों की उपयोगिता और महत्त्व को समझते हुए इन्हें पुस्तक के रूप में संकलित किया जा रहा है। निश्चय ही समिति के इस प्रयास से समाज और कॉर्पोरेट क्षेत्र में इस विषय को लेकर संजीदगी बढ़ेगी और लोग इस विषय के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए तदनुसार कार्यव्यवहार करने की दिशा में अग्रसर होंगे।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के गठन का उद्देश्य केंद्र सरकार के कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों में राजभाषा कार्यान्वयन को गति प्रदान करना है। अपनी इन्हीं जिम्मेदारियों का निर्वहन करते हुए नराकास (बैंक), वडोदरा द्वारा समय-समय पर नवोन्मेषी कार्यों/ गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। ऐसे सेमिनारों का आयोजन भी इन्हीं जिम्मेदारियों का एक अहम हिस्सा है।

मुझे विश्वास है कि 'कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व' से संबंधित विविध आयामों पर आधारित आलेखों का पुस्तक के रूप में यह संकलन सभी पाठकों को अवश्य ही पसंद आएगा तथा नई संभावनाओं को नई दिशा देने में आप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

शुभकामनाओं सहित,

- अजय कुमार खोसला
अध्यक्ष, नराकास (बैंक), वडोदरा एवं
मुख्य महाप्रबंधक (परिचालन)

अपनी बात

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा में राजभाषा कार्यान्वयन की 37 वर्षों की एक समृद्ध परंपरा रही है। अपनी इस गौरवशाली यात्रा के दौरान समिति ने कई नवोन्मेषी कार्य किए हैं तथा देश भर की विभिन्न समितियों की श्रेणी में एक विशिष्ट पहचान बनाई है। इसी परंपरा को कायम रखते हुए समिति द्वारा नवोन्मेषी कार्यों की श्रृंखला में 07 अगस्त, 2023 को बड़ौदा, गुजरात में 'कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया।

इस सेमिनार के लिए क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (पश्चिम), मुंबई के अंतर्गत कार्यरत सभी नगर समितियों के सदस्य कार्यालयों/ शाखाओं में कार्यरत स्टाफ सदस्यों से आलेख आमंत्रित किए गए थे। सेमिनार के लिए प्राप्त इन विविध आलेखों में से चयनित श्रेष्ठ आलेखों को सेमिनार में पीपीटी प्रस्तुति/ चर्चा हेतु आमंत्रित किया गया और उन्हें संकलित/ संपादित कर पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया जा रहा है।

इस संकलन में शामिल आलेख विभिन्न बैंकों/ वित्तीय संस्थानों/ उपक्रमों/ बीमा कंपनियों एवं अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो, भौतिक अनुसंधान प्रयोगशालाओं और भारत सरकार के अन्य कार्यालयों में कार्यरत अनुभवी एवं कुशल स्टाफ सदस्यों द्वारा लिखे गए हैं जो सुधी पाठकों के लिए सूचनाप्रद सिद्ध होंगे। आलेखों का संकलन तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है और लेखकों की मूल भावना को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। तथापि, आलेखों को संक्षिप्त और प्रभावी बनाए रखने की दृष्टि से आवश्यकतानुसार उन्हें संपादित भी किया गया है।

हमें विश्वास है कि यह पुस्तक मौजूदा समय में बेहद प्रासंगिक विषय 'कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान एवं भविष्य' के अलग-अलग पहलुओं को उजागर करने में सफल होगी तथा इसमें प्रकाशित आलेख आप सभी के लिए रुचिकर एवं उपयोगी सिद्ध होंगे।

सादर,

- पुनीत कुमार मिश्र
सदस्य सचिव, नराकास (बैंक), वडोदरा एवं
सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति)
बैंक ऑफ़ बड़ौदा, प्रधान कार्यालय, बड़ौदा

अनुक्रमणिका

क्र.	लेखक का नाम	संस्था का नाम	पृष्ठ सं.
कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान एवं भविष्य			
1.	सुश्री अमी कार्तिक पटेल	भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला	7
2.	श्री विवेक चंद्रकांत जटनियां	न्यू इंडिया एश्योरेंस लिमिटेड	13
3.	श्री सुमन्त कुमार	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	20
4.	श्री अजीत कुमार भारती	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	26
5.	श्री भरतकुमार दामोदर वायडा	इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड	33
6.	श्री ज्योति रंजन निधि	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	38
7.	श्री मिहिर जोषी	बैंक ऑफ इंडिया	45
8.	सुश्री सोनम पटेरिया	पंजाब नैशनल बैंक	51
9.	श्री शक्तिवीर सिंह	गेल (इंडिया) लिमिटेड	67
10.	श्री अभिषेक बारहठ	पंजाब नैशनल बैंक	74
11.	सुश्री लक्ष्मी मीना	पंजाब नैशनल बैंक	80
12.	श्री गौतम कुमार	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	85
13.	श्री प्रकाशकुमार भालाला	गेल (इंडिया) लिमिटेड	93
14.	श्री पंकज मिश्रा	गुजरात रिफाइनरी (आईओसीएल)	100
15.	श्री दिनेश अग्रवाल	सेक इसरो, अहमदाबाद	105
16.	श्री गंगाधर प्रसाद	पंजाब नैशनल बैंक	113
17.	श्री अर्पण बाजपेयी	सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया	119
18.	श्री अजीत कुमार	भारतीय स्टेट बैंक	125
19.	श्री प्रेम रामनाणी	भारतीय स्टेट बैंक	132
20.	सुश्री विधि चंद्रकांत जटनिया	केनरा बैंक	139

क्र.	लेखक का नाम	बैंक का नाम	पृष्ठ सं.
कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान एवं भविष्य			
21.	डॉ. बी. एन. शर्मा	अंतरिक्ष उपयोग केंद्र (इसरो)	146
22.	श्री तपन कीर्तिकुमार बिलखिया	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया	156
23.	श्री धीरेन्द्र मंडावत	पंजाब नैशनल बैंक	161
24.	श्रीमती वसुधा गोखले	पंजाब नैशनल बैंक	168
25.	श्री सौरभ मिश्रा	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	174
26.	श्री जयपाल सिंह	बैंक ऑफ़ बड़ौदा	181
27.	श्री बसंत कुमार	भारतीय स्टेट बैंक	186

अमी कार्तिक पटेल

पदनाम:- वरिष्ठ परियोजना सहायक
संस्था का नाम:- भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला
मोबाइल नं. :- 9979607372
ई-मेल:- amee@prl.res.in

प्रस्तावना

'पर्यावरण, सामाजिक और शासन' शब्दों को ईएसजी कहा जाता है। ईएसजी द्वारा स्थिरता को समग्र रूप से देखा जाता है, जो मानते हैं कि इसमें केवल पर्यावरणीय चिंताओं से कहीं अधिक शामिल है। ईएसजी को परिभाषित करने का आदर्श तरीका हितधारकों के लिए यह समझना है कि एक संगठन पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानदंडों से जुड़े अवसरों और जोखिमों को कैसे संभाल रहा है। हालाँकि निवेश के संबंध में 'ईएसजी' शब्द का प्रयोग अक्सर किया जाता है, निवेश समुदाय, ग्राहकों, भागीदारों और कर्मचारियों सहित अन्य पक्षों को हितधारक माना जाता है। वे सभी इस बात को लेकर अधिक उत्सुक हो रहे हैं कि कोई संगठन कितनी स्थिरता से संचालित होता है।

कॉर्पोरेट में ईएसजी का महत्त्व

ऐसे कई कारण हैं जो बताते हैं कि ईएसजी किसी व्यवसाय के लिए महत्त्वपूर्ण है। यह कंपनी के प्रदर्शन का एक महत्त्वपूर्ण कारक है और पर्यावरण, सामाजिक और शासन की सफलता का सबसे अच्छा संकेतक है।

- यह किसी व्यवसाय की प्रतिष्ठा और छवि को बढ़ा सकता है, जो नए निवेशकों को आकर्षित कर सकता है।
- नया कानून पेश करके, दुनिया भर की सरकारों के पास ट्रिपल बॉटम लाइन को प्रभावित करने की शक्ति है।
- व्यवसायों से नवाचार की आवश्यकता के कारण, यह विभिन्न प्रकार के नए विकल्प तैयार करता है।
- इससे पर्यावरण को लाभ होता है, जिससे आपके और आपकी भावी पीढ़ियों को लाभ होता है।

भारत में शीर्ष ईएसजी फंड

1. एसबीआई मैग्नम इक्विटी ईएसजी फंड – 01 जनवरी 2013 को इसकी स्थापना हुई। इस ईएसजी सेगमेंट का सबसे पुराना उपलब्ध फंड 1.29% है, इस श्रेणी के अन्य फंडों की तुलना में अधिक है। स्थापना के बाद से इस फंड ने 15.84% का वार्षिक रिटर्न दिया है।
2. आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल ईएसजी फंड- यह फंड आधिकारिक तौर पर 22 जनवरी, 2020 को लॉंच किया गया था। औसतन इसने करीब 35 फीसदी का रिटर्न दिया है। पिछली वर्ष की तुलना में इसने लगभग 60.52% का रिटर्न अर्जित किया है। एवेन्यू सुपरमार्ट्स लिमिटेड, विप्रो लिमिटेड, बजाज फाइनेंस लिमिटेड, टाटा कनसलतेनसी सर्विसेज लिमिटेड और नेस्ले लिमिटेड को उनके निवेश का अधिकांश हिस्सा प्राप्त हुआ है। इस उत्पाद के लिए व्यय अनुपात 0.48% है, जो अन्य विषयगत ईएसजी फंडों के शुल्क से कम है।
3. क्वांटम इंडिया ईएसजी इक्विटी फंड- यह एक मध्यम आकार का फंड है जिसमें प्रबंधन के तहत इसकी संपत्ति रुपए 1920 करोड़ है और इसके द्वारा लिया जाने वाला व्यय अनुपात 0.6% इस बाज़ार में अन्य ईएसजी विषयगत फंडों के बराबर है। इस बाजार में अपने प्रतिस्पर्धियों की तुलना में इस फंड का वित्तीय और तकनीकी क्षेत्रों में कम जोखिम है, यह एफएमसीजी, रसायन, स्वास्थ्य सेवा और वित्तीय सहित उद्योगों में अपना पैसा निवेश करता है। रिटर्न के संबंध में, अपनी शुरुआत के बाद से यह सालाना 42.59% का रिटर्न देने में सक्षम रहा है। इस फंड के लिए पोर्टफोलियो आवंटन 95.9% इक्विटी में, 0.02% ऋण में, और 4.08% अन्य विकल्पों में विभाजित है।

भारत में कंपनियों को ईएसजी पर ध्यान क्यों देना चाहिए?

भारत ईएसजी पर बढ़ा हुआ ध्यान देख रहा है। आईटी उद्योग समूह नैसकॉम और बोस्टन कंसल्टिंग ग्रुप की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक कंपनियों के अपने पर्यावरण, सामाजिक और शासन के लक्ष्यों और भारतीय प्रौद्योगिकी से ईएसजी सेवा कंपनियों के बढ़ते प्रयासों से राजस्व में वृद्धि होगी। इसके अलावा, कई बाहरी कारकों ने डिजिटल कंपनियों द्वारा ईएसजी पहल को अपनाने में योगदान दिया। कई बड़े बहुराष्ट्रीय निगमों को आवश्यकता है कि विक्रेता अपने व्यवसाय के लिए प्रतिस्पर्धा करने के लिए विशिष्ट ईएसजी उद्देश्यों को अपनाए। ईएसजी में निवेश संगठनों के लिए एक व्यावसायिक आवश्यकता है।

भारत में ईएसजी के संबंध में कार्यान्वयन और विनियम

भारत में ईएसजी दिशानिर्देशों का कार्यान्वयन अभी भी बहुत नया है। भले ही निवेशकों और कंपनियों ने इसकी जरूरत को स्वीकार करना शुरू कर दिया है, लेकिन कार्यान्वयन की कमी अभी भी है।

इन सबको संहिताबद्ध तरीके से तैयार करने के लिए, सामाजिक कॉर्पोरेट में 2011 में "स्वैच्छिक राष्ट्रीय दिशानिर्देश" पर कुल 9 सिद्धान्त शामिल थे। जो भारतीय कंपनियों के दीर्घकालिक सतत् मूल्य पर चर्चा करते हैं। इन दिशानिर्देशों का उपयोग करके, कंपनी कई पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिमों का अनुमान लगा सकती है जिनका उसे भविष्य में सामना करना पड़ सकता है। ऐसी जानकारी निवेशकों के साथ साझा की जाती है ताकि निवेश के फैसले ऐसे जोखिमों को ध्यान में रखकर किए जाएं और उन्हें कम करने के तरीके खोजने पर ध्यान केंद्रित करने में भी मदद मिले। दिशानिर्देश स्वैच्छिक दृष्टिकोण होने के कारण उनका पर्याप्त पालन नहीं हो पाता है।

इससे निपटने के लिए सेबी 2012 में इसमें स्वैच्छिकता को अनिवार्य आदेश में बदल दिया। इसने बाज़ार पूंजीकरण योजना के अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए शीर्ष 100 एवं अधिकतम 500 व्यवसायों को सूचीबद्ध करने की मांग की। एक अन्य दृष्टिकोण जो लागू किया गया था वह भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड अधिनियम 1992 की धारा 11(1) के तहत ग्रीन डेट सिक्योरिटीज जारी करने की आवश्यकता थी। ग्रीन डेट सिक्योरिटीज, जिन्हें आमतौर पर ग्रीन बांड के रूप में जाना जाता है। नवीकरणीय और टिकाऊ ऊर्जा, कम कार्बन परिवहन मोड, टिकाऊ भूमि उपयोग, जल और अपशिष्ट प्रबंधन, जलवायु परिवर्तन अनुकूलन, ऊर्जा दक्षता, जैव विविधता संरक्षण इत्यादि जैसे क्षेत्रों में परियोजनाएं पर्यावरण के अनुकूल वित्त पोषण के उद्देश्य से ऋण साधन हैं। इस नीति का उद्देश्य दोहरे पहलू वाला है-

- सबसे पहले, **ग्रीन बांड जारीकर्ता** के लिए यह साबित करने का एक अच्छा तरीका है कि वह पर्यावरण के प्रति जागरूक हैं, जो जारीकर्ता की प्रतिष्ठा को बेहतर बनाने में सहायता कर सकता है। यह पर्यावरण की उन्नति और व्यवहार्यता के प्रति जारीकर्ता के समर्पण को दर्शाता है।
- दूसरे, **हरित उद्यमों में निवेश** के लिए विशेष रूप से धन का एक समर्पित विश्वव्यापी पूल निर्धारित किया गया है। इस तरह की फंडिंग का प्राथमिक फोकस परियोजनाओं के पर्यावरण, सामाजिक और शासन हैं। जो घटक ईएसजी, ग्रीन बांड जारीकर्ता को इन निवेशकों तक पहुँच प्रदान करते हैं।

अंततः, सेबी ने **व्यावसायिक उत्तरदायित्व और स्थिरता रिपोर्ट** को बीआरआर में 2020 में योजना बनाई। जिसका उद्देश्य व्यवसायों को न केवल उनके वित्तीय अनुपालन, बल्कि उनके संचालन के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों के बारे में भी जानकारी प्रदान करने के लिए राजी करना है।

ऐसी नीतियों की प्रयोज्यता को स्वैच्छिक आवश्यकता से अनिवार्य में बदलना दर्शाता है कि भारत में ईएसजी की कथा को मजबूत किया जा रहा है। कंपनी की रिपोर्ट में पर्यावरण संबंधी मुद्दों पर फोकस में भी बढ़ोतरी देखी गई है। वास्तविक संख्याओं से पता चला कि 87% रिपोर्टिंग प्रावधान पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित थे, जबकि 35% सामाजिक मुद्दों से और 32% शासन संबंधी मुद्दों से संबंधित थे। व्यवसाय संचालन के साथ-साथ प्रदूषण, पानी, कचरा और अन्य महत्त्वपूर्ण संसाधनों का प्रमुख प्रबंधन विषयों में शामिल था।

चुनौतियाँ:

बढ़ती जागरूकता के बावजूद, भारत में ईएसजी अपनाने में बाधाएं हैं।
अपने लक्ष्य को विज्ञान आधारित लक्ष्य पहल से मान्य करवाया है। भारत के आकार और पारिस्थितिकी तंत्र को देखते हुए ये संख्याएँ बहुत कम हैं।

1. भारत में संगठनों के सामने सबसे पहली और मुख्य चुनौती **ईएसजी द्वारा प्रदान किए जाने वाले लाभों के बारे में समझ की कमी** है। छोटे और मध्यम आकार के व्यवसायों के मामले में यह और भी अधिक प्रासंगिक है। अधिकांश लोग ईएसजी प्रथाओं को एक अवसर के बजाय एक लागत के रूप में देखते हैं, जिसका अर्थ है कि डिफ़ॉल्ट कदम ईएसजी केंद्रित निवेशों को पीछे छोड़ना है।
2. दूसरा, ईएसजी की व्यापकता और दायरे को देखते हुए, इसमें कई **हितधारकों** का सहयोग शामिल है, जिनमें से कुछ के पास संगठन की स्थिरता यात्रा में उनकी भूमिका के बारे में बहुत **सीमित समझ और स्पष्टता** है।
3. तीसरा, **डेटा की अनुपलब्धता और संबंधित गुणवत्ता संबंधी मुद्दे** किसी संगठन की रणनीति के भीतर ईएसजी को एकीकृत करने में बाधा बने हुए हैं।
4. चौथा, परिचालन परिप्रेक्ष्य से स्थिरता की सीमा के भीतर काम करने में **सक्षम कुशल ईएसजी पेशेवरों की अनुपस्थिति** है। यह रूपरेखाओं और विनियमों द्वारा और अधिक जटिल है, जो ऐसी गति से विकसित हो रहे हैं जो पहले कभी अनुभव नहीं किया गया था।

ईएसजी को मुख्यधारा में लाने के तरीके:-

ईएसजी के लाभों के संबंध में प्रबंधन की सोच में बदलाव जोर पकड़ रहा है। ईएसजी को कॉर्पोरेट निर्णयों में एकीकृत करने के कई तरीके हैं जो सतत् विकास की ओर ले जाते हैं:

- सबसे महत्त्वपूर्ण है **बोर्ड स्तर पर स्पष्ट जवाबदेही और निरीक्षण।**
- प्रबंधन स्तर पर, **वरिष्ठ अधिकारियों को जिम्मेदारी** लेनी चाहिए।
- संगठनों को महत्त्वकांक्षी ईएसजी लक्ष्यों को अपने व्यवसाय के लिए सार्थक बनाने और इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए **कार्यान्वयन रोडमैप** तैयार करने की आवश्यकता है।
- आपूर्ति श्रृंखला किसी भी व्यवसाय की सफलता के लिए एक महत्त्वपूर्ण घटक है। यह आवश्यक है कि संगठन उत्सर्जन हॉट स्पॉट की पहचान करें और आपूर्ति

श्रृंखला के भीतर जोखिमों का विशेष रूप से जलवायु जोखिम के नजरिए से समाधान करें।

- कम से कम वार्षिक आधार पर **सुनिश्चित डेटा की रिपोर्ट करना** और संचार करना भी अनिवार्य है। इससे निवेशकों और हितधारकों का विश्वास बढ़ेगा।

निष्कर्ष:-

ईएसजी के नेतृत्व वाले निवेश को मुख्यधारा में लाने से राष्ट्रीय स्तर पर भी कई लाभ हो सकते हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार 2030 तक 50 मिलियन से अधिक नौकरियाँ पैदा होने की उम्मीद है।

जबकि ईएसजी को अपनाना एक सक्रिय चुनौती है, नियामक स्थिरता पर अनिवार्य नियामक ढांचे के माध्यम से कॉरपोरेट्स के बीच ईएसजी निवेश को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। नीति निर्माताओं को उत्पादों की हरित लेबलिंग को प्रोत्साहित करके, भूरे या भूरे उत्पादों पर कर लगाकर और हरित उत्पादों को प्रोत्साहन देकर एक स्थायी उत्पाद बाजार के निर्माण को बढ़ावा देना चाहिए।

ईएसजी निवेश और ईएसजी रिपोर्टिंग पर बढ़ते लक्ष्य के साथ, जो व्यवसाय ईएसजी जोखिमों को नजरअंदाज करते हैं, वे प्रतिष्ठित नुकसान, राजस्व में कमी, आपूर्ति श्रृंखला से संबंधित मुद्दों और हितधारक विश्वास में कमी के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं।

*****

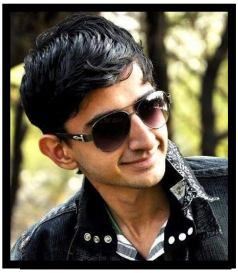

विवेक चंद्रकांत जटनिया

पदनाम:- सहायक
संस्था का नाम:- न्यू इंडिया एस्योरंस लिमिटेड
मोबाइल नं. :- 7990429539
ई-मेल:- vivek.jataniya@newindia.co.in

"प्रयास करें कि जब आप आए थे उसकी तुलना में
पृथ्वी को एक बेहतर स्थान के रूप में छोड़ कर जाएं।"

- सिडनी शेल्डन

पिछली कुछ वक्त में पर्यावरण को लेकर जागृतता बढ़ रही है। मजेदार बात यह है कि केवल आम आदमी ही जागृत नहीं हुआ है, साथ ही कॉर्पोरेट जगत भी जागृत हो गया है और उन्होंने भी पर्यावरण को ध्यान में रखती हुए कार्य करना प्रारम्भ कर दिया है।

ईएसजी क्या है :

ईएसजी पर्यावरण, सामाजिक और शासन को दर्शाता है। इन्हें ईएसजी फ्रेमवर्क में स्तंभ कहा जाता है और 3 मुख्य विषय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें कंपनियों को रिपोर्ट करना होता है। ईएसजी का मुख्य लक्ष्य कंपनी की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में निहित सभी गैर-वित्तीय जोखिमों और अवसरों को पकड़ना है।

पर्यावरण स्तम्भ के अंतर्गत क्या आता है?

पर्यावरण स्तंभ के अंतर्गत कंपनी को उत्सर्जन जैसे कि ग्रीनहाऊस गैसों और वायु, जल और भूमि प्रदूषण उत्सर्जन जैसे उत्सर्जनों के बारे में ध्यान रखना होता है। साथ ही कैसे कंपनी यह सुनिश्चित करती है कि उनके उत्पाद में अधिकतम सामाग्री समाप्त ना होकर अर्थव्यवस्था में वापस चक्रित की जाती है। अगर आसान शब्दों में कहूँ तो कंपनी को पुनःनवीनीकरण सामाग्री का उपयोग ज़्यादा से ज़्यादा करना है। किसी भी कंपनी के लिए यह स्तंभ सबसे जटिल स्तंभ है।

सामाजिक स्तंभ के अंतर्गत क्या आता है?

सामाजिक स्तंभ के तहत कंपनियों को अपने कर्मचारी के प्रबंधन से लेकर विकास

और श्रम प्रथाओं को रिपोर्ट करना होता है। वे अपने उत्पाद की गुणवत्ता के साथ ही सुरक्षा के संबंध में देनदारियों पर रिपोर्ट करते हैं। कोई भी कंपनी समाज के वंचित समूह तक अपनी सेवाओं और उत्पादों को कैसे पहुंचाती हैं यह भी इस स्तंभ में शामिल है। है।

शासन स्तंभ के अंतर्गत क्या आता है?

इस स्तंभ के अंतर्गत कंपनी द्वारा अधिकारियों को कैसे मुआवजा दिया जाता है, उनके मुआवज़े के साथ कैसे संरेखित किया जाता है, साथ ही शेयरधारकों के अधिकार और कंपनी का स्थिरता प्रदर्शन इस स्तंभ के अंतर्गत आता है। इसमें कॉर्पोरेट व्यवहार के मामले जैसे कि प्रतिस्पर्धा-विरोधी प्रथाएं और भ्रष्टाचार भी शामिल किए गए हैं।

भारत में ईएसजी की आवश्यकता :

"अगर हमें पर्यावरण में थोड़ा सा भी सुधार लाना है तो
केवल एक ही तरीका है इसमें सबको शामिल करना"

-रिचर्ड रोजर्स

हमारे भारत देश में कोई ए समस्या नहीं है, बल्कि असमानता, गरीबी, बेरोजगारी, जातिगत भेदभाव, मानवाधिकारों का उल्लंघन जैसी बहुत सारी समस्याएं मौजूद हैं। भारत देश का कानूनी वातावण अत्यंत जटिल है। ऐसे में कंपनी के लिए इन सारी समस्याओं को भी ध्यान में रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

"संरक्षण इंसानों और पृथ्वी के बीच एक समंजस्य की स्थिति है।"

- एल्डो लियोपोल्ड

निवेश करने में बदलाव:

आज तक लोग केवल वित्तीय जोखिम को ध्यान में रखकर ही निवेश करते थे लेकिन अब ईएसजी के आ जाने से निवेश करने के पहलुओं में भी बदलाव आना शुरू हो चुका है। अब वो दिन दूर नहीं जब हमारे भारत देश में भी निवेश करने से पहले लोग पर्यावरण को भी ध्यान में लेने लगेंगे। अब कोई भी व्यक्ति उन कंपनियों में भी निवेश कर सकता है जो पर्यावरण, समाज और गवर्नेंस से जुड़े सभी मानकों को पूरा करती हो और पर्यावरण को महफ़ूज़ बनाने में हर कोई अपनी भूमिका निभा सकता है। आने वाला वक्त ईएसजी की वजह से ही पर्यावरण के लिए बहुत बेहतर वक्त होगा।

"मैं टैक्स का विरोधी हूँ, लेकिन मैं कार्बन टैक्स का समर्थन करता हूँ।"

- इलोन मस्क

असल में ईएसजी फंड किसी भी कंपनी के नॉन-फाइनेंशियल पहलुओं को देखते हैं, जैसे कि कंपनी की वजह से पर्यावरण पर बुरा असर तो नहीं पड़ रहा है, समाज और अपने शेयरहोल्डर्स के साथ कंपनी के कैसे संबंध हैं और कंपनी सी.एस.आर. यानि की अपनी कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व को अच्छे से निभा रही है या नहीं ऐसे कई पहलुओं पर ध्यान दिया जाएगा।

सीएसआर और ईएसजी में बहुत बड़ा अंतर :

भारत में लागू सीएसआर यानि की कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व में सभी कंपनियों को तीन वर्ष में अपने मुनाफे के 2% राशि का प्रयोग सीएसआर में दी गई किसी भी गतिविधि में खर्च करना अनिवार्य है। सीएसआर नीति ही ये नियम लागू करती है कि हर एक कंपनी समाज के कल्याण में योगदान देती हो और इसके लिए कम से कम मुनाफे की 2% राशि का इस्तेमाल करने के लिए हर एक निगम अनिवार्य रूप से बढ़ी है। सीएसआर आदेश को कंपनी नियम 2013 के तहत 2014 में संशोधन करके कानून के रूप में लाया गया था।

ईएसजी लक्ष्य क्या है?

एक कंपनी के संचालन के लिए मानकों का सेट जैसे कि बेहतर शासन, नैतिक प्रथाओं, पर्यावरण के अनुकूल उपाय और सामाजिक ज़िम्मेदारी कंपनियों को अनुसरण करने के लिए मजबूर करता है।

पर्यावरण मानदंड :

यह मापदंड इस बात पर विचार करते हैं कि एक कंपनी पर्यावरण या प्रकृति के प्रबंधक के रूप में किस तरह से प्रदर्शन करती है।

"अफसोस की बात है, जंगल की तुलना में
रेगिस्तान बनाना कहीं आसान होता है।"

-जेम्स लवलॉक

सामाजिक मानदंड :

सामाजिक मानदंड इस बात की जांच करने हेतु होते हैं कि कोई भी कंपनी किस तरह से अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों के साथ संबंध और वे समुदाय जहां यह

मापदंड संचालित होते हैं उन सभी को कैसे प्रबंधित करता है। कहा जाता है कि -

"सूरज की तपिश से बच नहीं पाओगे, यदि पर्यावरण को नुकसान पहुंचाओगे।"

शासन :

शासन एक कंपनी द्वारा नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, आंतरिक नियंत्रण, लेखा परीक्षा और शेयरधारक अधिकारों से संबंधित है।

गैर- वित्तीय कारक :

यह मापदंड गैर-वित्तीय कारकों पर केन्द्रित है जो कि एक रूप में निवेश निर्णयों का मार्गदर्शन करने के लिए मीट्रिक प्रणाली है जिसमें वित्तीय रिटर्न में वृद्धि होना ही निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं होता है।

ईएसजी कॉर्पोरेट और उनके हितधारकों के लिए मूल्य कैसे बनाता है?

राजस्व में वृद्धि :

ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखित कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने में मदद करता है। साथ ही ये अपनी नीली महासागर रणनीति के हिस्से के रूप में विकास के लिए नए रास्ते प्रदान करते हैं जिससे कंपनी के राजस्व में वृद्धि में मदद मिलती है।

दीर्घकालिक स्थिरता :

ईएसजी फ्रेमवर्क का पालन कंपनियों को अधिक स्थायी निवेश के अवसरों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह लंबे समय में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ तो पैदा करता ही है साथ ही कंपनी को दीर्घकालीन स्थिरता में अग्रेषित कर देता है।

"हमें पानी की कीमत तब तक नहीं समझ आ सकती जब तक कुआं सूख नहीं जाता।"

- थॉमस फुलर

लागत/ जोखिम को कम करना :

ईएसजी मानदंडों जैसे शेयरधारकों की शिकायत का निवारण, मानव अधिकार और कंपनियों की लिंग विविधता परिणामस्वरूप कम दंड और प्रवर्तन कार्रवाई होती है।

ईएसजी अनुपालन संबंधी भारत देश में चुनौतियाँ :

जानकारी का अभाव :

भारत देश में ईएसजी के प्रति सीमित जागरूकता होने की वजह से अनुपालन नें दिक्कत होना स्वाभाविक है। जहां विश्व के काई देश 2016 से लेकर 2019 के दौरान ही ईएसजी को लागू भी कर चुके हैं वहाँ 2023 में भी ईएसजी के बारे में सीमित जानकारी है।

डेटा की कमी :

भारत देश में कंपनियों के लिए सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा बहुत कम है, इसलिए ईएसजी के अनुरूप आकड़ों का आकलन करना निवेशकों के लिए अत्यंत मुश्किल हो जाता है।

संस्कृति और सांस्कृतिक कारण :

भारत विभिन्न भाषाओं और अलग अलग संस्कृति से जुड़ा हुआ देश है। भारत देश की एक खूबी है कि हमारा देश अनेकता में एकता का देश है। लेकिन परेशानी यही है कि हमारी सभी पारंपरिक व्यवस्थाएं ईएसजी सिद्धांतों से मेल नहीं खा रही हैं। सभी कंपनी को भारत में ही काम करके भारत देश के ही लोगों के बीच में रहना है, ऐसे में परंपराओं के विपरीत जा कर काम करना कंपनी के लिए कठिन हो सकता है।

निवेशों की कमी :

भारत देश बाकी देशों से बहुत ही अलग है। यहाँ पर निवेशकों के लिए निवेश करने हेतु ईएसजी के साथ मेल खाते हों ऐसे निवेश बहुत ही कम होंगे, जो कि ईएसजी केन्द्रित निवेशों में बढ़ोत्तरी में अभी बहुत वक्त लग सकता है और साथ ही पूरे देश में इससे जुड़ी जानकारी का होना भी उतना ही विचारणीय मुद्दा है।

नियामक वातावरण की कमजोरी :

"भविष्य या तो हरा होगा या तो होगा ही नहीं"

- बॉब ब्राउन

ईएसजी अनुपालनों को सुनिश्चित करने के लिए हमारे भारत देश का नियामक वातावरण अभी उतना विकसित नहीं हुआ है। इससे कॉर्पोरेट दुनिया में भूचाल की संभावनाएं बढ़ जाती हैं और कॉर्पोरेट पारदर्शिता कम हो जाए तो उसे स्वीकार भी देश को करना ही पड़ेगा।

ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करवाने के लिए की गई पहल :

कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय एम. सी. ए. द्वारा सभी कंपनियों के लिए व्यापार की **सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक जिम्मेदारियों (NVGs)** पर 2011 में ही राष्ट्रीय तौर पर दिशा-निर्देश जारी किए गए थे। यही दिशा-निर्देश ईएसजी हेतु नींव के पत्थर साबित हुए हैं। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड **(SEBI)** द्वारा 2012 से ही **व्यावसायिक उत्तरदायित्व रिपोर्ट (BRR)** की स्थापना कर दी गई है। वर्ष 2015 में भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड **(SEBI)** द्वारा शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं को अपनी वार्षिक संस्थाओं को अपनी वार्षिक रिपोर्ट के हिस्से के रूप में बी.आर.आर. फाइल करने को आवश्यक बनाया।

"बेंचमार्किंग ईएसजी एंड सीएसआर" नामक पुस्तक जिसका संपादन डॉ. गरिमा दधीच और डॉ. रविराज अत्रे द्वारा किया गया है, यह पुस्तक कंपनियों द्वारा उनके ईएसजी और सीएसआर कार्यक्रमों के तहत सतत् विकास परियोजनाओं पर चिन्हित कार्यों पर केस स्टडी का संकलन है।

मानकीकृत ईएसजी पैरामीटर :

वही मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण ईएसजी पैरामीटर हितधारकों को प्रदान करते हुए एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेंगे। वित्तीय और गैर-वित्तीय जानकारी दोनों और स्थिरता के मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता की मांग के उद्देश्य के अनुरूप, संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाओं के बारे में संक्षिप्त संचार समय के साथ मूल्य पैदा करेगा।

सरकार द्वारा श्रेष्ठ कदम ईएसजी की ओर :

केंद्रीय कॉर्पोरेट मामलों के राज्यमंत्री श्री राव इंद्रजीत सिंह ने कहा है कि सरकार 'न्यूनतम सरकार और अधिकतम शासन', जनता के भरोसे और व्यापार करने में आसानी के सुदृढ़ीकरण पर ज़ोर देगी। सरकार ने 25000 से अधिक अनुपालन और लगभग 1500 केंद्रीय क़ानूनों को निरस्त कर दिया है। कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय के सचिव श्री राजेश वर्मा ने कहा कि कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय ने कंपनी अधिनियम के तहत कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) जनादेश और व्यवसाय की सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक जिम्मेदारियों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशा-निर्देशों को शुरू करके उल्लेखनीय योगदान दिया है। मंत्रालय ने उत्तरदायी व्यापार आचरण

पर राष्ट्रीय दिशा-निर्देशों (एनजीआरबीसी) का एक अद्यतन संस्करण भी शुरू किया है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने बाजार पूंजीकरण द्वारा शीर्ष 1000 सूचीबद्ध कंपनियों पर व्यावसायिक उत्तरदायित्व और स्थिरता रिपोर्टिंग (बीआरएसआर) अनिवार्य कर दी है। सरकार द्वारा भी किए जाने वाले इतने बेहतर प्रयासों की वजह से ही उदाहरण के लिए, टाटा कनसलतेनसी सर्विसेज़ ने अपने पूर्ण जीएचजी उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा करते हुए 2030 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जक कंपनी बनने का लक्ष्य घोषित किया है।

"पृथ्वी हमारे साथ नहीं बल्कि हम पृथ्वी के हैं "

-चीफ सियेटेल

ईएसजी : भारत के लिए चुनौती से भरी आगे की राह:

भारत देश में ईएसजी को ज्यादा प्रोत्साहन की आवश्यकता है । यह प्रोत्साहन तभी संभव हो सकता है जब निवेशकों, नियमकों और व्यवसायों द्वारा स्थायी निवेश हेतु ईएसजी के महत्त्व को समझा जाए । ईएसजी प्रदर्शन का सही ढंग से मूल्यांकन करना भी उतना ही ज़रूरी हो जाता है । ईएसजी की मजबूत रिपोर्टिंग को सख्ती से लागू करना भारत में सुगम होगा।

ईएसजी विश्व परिदृश्य :

यूरोप इस वक्त ईएसजी चार्ज का नेतृत्व कर रहा है । अधिक यूरोपीय निवेशकों का कहना है कि ईएसजी उनके निवेश दृष्टिकोण (31% बनाम 18% उत्तरी अमेरिका, 22% एशिया-प्रशांत) के लिए केंद्रीय स्थान पर है । यूरोप ईएसजी उपयोगकर्ताओं के उच्चतम प्रतिशत का भी दावा करता है (93% बनाम 79% उत्तरी अमेरिका, 88% एशिया) यह अधिक परिपक्व यूरोपीय ईएसजी बाज़ार को और नियामक के ढांचे को दर्शाता है ।

॥ एक कदम ईएसजी द्वारा पर्यावरण की ओर ॥

जय हिन्द
जय भारत

*****

सुमन्त कुमार

पदनाम:- लिपिक (एसडबल्यूओ-बी)
संस्था का नाम:- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
मोबाइल नं. :- 9722800315
ई-मेल:- sumant31281@gmail.com

ईएसजी का मतलब एनवायरनमेंट, सोशल और गवर्नेंस अर्थात् पर्यावरण, सामाजिक और शासन से है। यह शब्द सबसे पहले 'हू केयर्स विन्स' रिपोर्ट के अनुसार 2004 में प्रकाशित किया गया था। बाद में अक्टूबर 2005 में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में फ्रेश फील्ड रिपोर्ट में प्रस्तुत किया गया था तब से लेकर यह शब्द आज भी विशेष चर्चा का विषय बना हुआ है। क्या ईएसजी से वित्तीय एवं निवेश क्षेत्र में फायदा होगा या इससे एक बहुत बड़े जोखिम को उठाने की संभावनाएं हैं, यह एक ज्वलंत मुद्दा बना हुआ है। कई बड़े कॉर्पोरेट घराने या उद्योगपति ईएसजी को बिल्कुल सकारात्मक मानते हैं और उनका मानना है कि अगर ईएसजी को पूर्णरुपेण अनुपालन किया जाए तो वर्तमान में कॉरपोरेट जगत में बहुत बड़ी क्रांति आ सकती है। अभी हाल में डिलाइट्स इनसाइट्स अध्ययन से यह पता चला है कि ईएसजी संपत्ति 2014 और 2018 के बीच 16 प्रतिशत प्रतिवर्ष की दर से बढ़ी है और अभी यह कुल बाजार संपत्ति का 25 प्रतिशत है इसके पूर्वानुमान कर्ताओं का मानना है कि यह गति आने वाले वर्षों में भी जारी रहेगी और 50 प्रतिशत बाजार हिस्सेदारी का लक्ष्य जरूर बनेगा।

जैसा कि हम जानते हैं ईएसजी का मतलब पर्यावरण सामाजिक और शासन से है। ईएसजी एक संगठन के रूप में कहा जा सकता है जो कि पर्यावरण समाज और शासन निकायों पर नकारात्मक प्रभाव को सीमित करने या संकुचित कर सकारात्मक प्रभाव को बढ़ाने के लिए एक अभियान है। ईएसजी का मुख्य लक्ष्य पर्यावरण संतुलित करना अर्थात् वर्तमान में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन एक महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय मुद्दा बना हुआ है। इस ग्रीन हाउस गैस को कैसे कम किया जाए। स्वस्थ ऊर्जा अर्थात् टिकाऊ ऊर्जा में कैसे निवेश किया जाए। कार्यस्थल में विविधता बढ़ रही है इसे किस तरह से असहजता बढ़ने के साथ उसे सामान्य अवस्था में बनाए रखा जा सके और पारदर्शी वित्तीय व्यवस्था को कैसे सुचारू रूप से समृद्ध किया जा सके।

ईएसजी कंपनियों और देशों की स्थिति का आकलन करने के लिए पर्यावरण समाजिक और शासन कारणों का उपयोग करता है। इन तीनों कारकों को मूर्त रूप से देखा जा सकता है। जिसमें जलवायु परिवर्तन मानवाधिकार और कानून का पालन किया जाता है।

ईएसजी केवल एक देश में सीमित ना होकर अंतरराष्ट्रीय प्रभाव का कारक है। ईएसजी कानून लागू होने के बाद विश्वस्तरीय सामाजिक समस्याएं जैसे कि गरीबी, बीमारियां, शिक्षा, महिला उत्पीड़न, बालश्रम आदि सामाजिक समस्याएं तथा पर्यावरणीय समस्याओं में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन, पहाड़ों की कटाई, वनों की कटाई, नदियों का दूषित होना, कार्बन उत्सर्जन जिसके कारण ग्रीन हाउस प्रभाव हो रहा है। पर्यावरणीय प्रदूषण के कारण जैव विविधता अनुवांशिक भेदभाव बहुत ज्यादा बढ़ रहा है। इसके साथ साथ अगर इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देखें तो इसमें बहुत सारे लक्ष्य शामिल किए जाते हैं। अभी 2030 तक इसी के अंदर 17 लक्ष्यों को कार्यान्वयन करने की दिशा में पहल किया गया है जैसे मुख्य लक्ष्य गरीबी को प्रत्येक देश में समाप्त करना है, भूख बेरोजगारी कम करना, खाद्य सुरक्षा को बेहतर बनाना और टिकाऊ एवं संरक्षित कृषि करना, लोगों को स्वस्थ जीवन शैली सुनिश्चित करना, सभी उम्र के लोगों के लिए कल्याणकारी योजनाएं बनाना, समावेशी और समान गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करना, सभी के लिए जीवन भर सीखने के लिए अवसर देना, लैंगिक असमानता को दूर करना, लड़कियों महिलाओं को सशक्त करना, सस्ती ऊर्जा का संचार होना, निरंतर समावेशी सतत आर्थिक विकास, लचीले बुनियादी ढांचे का निर्माण, समावेशी और टिकाऊ उद्योगी करण को बढ़ावा देना और देश के भीतर असमानता को दूर करना, शहर और मानव बस्तियों को समावेशित सुरक्षित लचीला और टिकाऊ बनाना, उत्पादक पैटर्न सुनिश्चित करना, जलवायु परिवर्तन और उसके प्रभाव से निपटने के लिए तत्काल कार्रवाई करना, स्थलीय पारिस्थितिकी प्रणालियों की रक्षा ,जंगल सुरक्षा करना, शांतिपूर्ण और समावेशी समाज को बढ़ावा देना, वैश्विक साझेदारी को निभाना आदि शामिल हैं।

पहले पर्यावरण, सामाजिक और शासन को गैर वित्तीय तत्व माना जाता था। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन तीनों को मिलाने से वित्तीय तत्व बहुत ही मजबूत हो जाता है। इस के प्रबंधन से वित्तीय रणनीति में बहुत सहूलियत लागू होती है। उदाहरणार्थ कोविड-19 के प्रभाव के बाद पर्यावरण अनुकूल, समाजिक अनुकूल और नैतिक व्यवहार हर एक देश में हर एक सरकार के लिए एक मुख्य पहल बन गया था।

ईएसजी एक ऐसी निवेश पद्धति है जिसमें शेयर धारक और संस्थागत निवेशक कंपनी में निवेश के समय निर्णय लेते हैं यह निवेश टिकाऊ होगा कि नहीं अर्थात् टिकाऊ निवेश और वित्तीय कारकों पर विचार करते हुए सामाजिक और नैतिक मूल्यों और पर्यावरण अनुकूल स्थिरता को दर्शाते हैं। 2021 में यूरोपीय संघ और अमेरिका जैसे प्रमुख देशों ईएसजी को एक मानक के रूप में स्वीकार किया जाने लगा था। ईएसजी में निवेश एक सशक्त निवेश माना जा सकता है और इसका एक दीर्घकालिक रिटर्न मिलने की संभावना बढ़ जाती है । इससे कॉर्पोरेट व्यवहार या समाज पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है। जैसा कि हम पूर्व में बता चुके हैं ईएसजी का प्रारूप 2005 से शुरू हुआ और यह संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरणीय कार्यक्रम से शुरू होकर यह लगभग विश्व के कई देशों में धीरे-धीरे अपने पैर पसार चुका है। उदाहरण स्वरूप स्वीडन, जर्मनी, कनाडा, बेल्जियम, फ्रांस, नीदरलैंड आदि कई देशों ने अपने यहां के कुछ नियमों में ईएसजी सूचना के प्रति प्रकटीकरण दायित्वों की शुरुआत की है। न्यूयॉर्क स्टॉक एक्सचेंज ईएसजी पर जोर दे रहा है और उनका मानना है कि इस पद्धति को अगर लागू किया जाए तो एक सुनिश्चित और संपूर्ण समावेशी रिटर्न मिल सकता है।

जैसा कि हम जानते हैं वित्तीय क्षेत्र के मूल्यांकन के लिए कई पद्धतियाँ लागू हैं, जैसे कि सिबिल क्रेडिट रिपोर्ट, क्रिल्लिक, स्पेशल बेंच मार्क जैसे बेसेल आदि निवेशकों को पहचानने के लिए एक विधा है। इसमें निवेशक का सिद्धान्त उसकी नीति का ढांचा एवं उसकी नैतिकता के बारे में वित्तीय संबंधी पता लगाया जाता है अर्थात् एक सिबिल रिपोर्ट से किसी के उसके वित्तीय लेनदेन या उसके वित्तीय फ्रॉड अर्थात् घोटाला वित्तीय जोखिम करने वाला व्यक्ति या फ़र्म के बारे में पता लगाया जा सकता है। उसके सारे कार्यकलापों पर नजर रखी जा सकती है। उसके समानांतर कई विधाएं हैं । लेकिन इन सबके बीच सबसे महत्त्वपूर्ण यह होता है कि निवेशक अपना भौतिक जोखिम और विकास के अवसर की पहचान कैसे करें। उनका निवेश टिकाऊ और दूरगामी कैसे हो यह सबसे बड़ा एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। इसके लिए ईएसजी निवेश एक नए सूत्र के रूप में उभर रहा है। ईएसजी मैट्रिक्स आम तौर पर अनिवार्य वित्तीय रिपोर्टिंग का हिस्सा नहीं है। लेकिन कंपनियां फिर भी अपनी वार्षिक रिपोर्ट में ईएसजी का खुलासा तेजी से कर रही हैं । स्थिरता लेखा मानक बोर्ड एसबी ग्लोबल रिर्पोटिंग इनीशिएटिव और जलवायु वित्तीय संबंधी प्रकृति करण टास्क फोर्स जैसे संस्थान इन कारकों को शामिल करने की सुविधा के लिए मानक बनाने और भौतिकता को परिभाषित करने के लिए काम कर रहे हैं ।

जलवायु परिवर्तन आज एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। एक अजीब सा प्रश्न उठता है कि निवेशकों के लिए जलवायु परिवर्तन से क्या प्रभाव पड़ेगा। क्या निवेशक को इससे आर्थिक प्रभाव में ध्यान देने की जरूरत है? लेकिन जलवायु परिवर्तन अर्थात् पर्यावरणीय प्रभाव निवेश के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण होता है। जैसा कि हम जानते हैं किसी भी निवेश के लिए पर्यावरण अनुकूलता का होना बहुत जरूरी है। यदि निवेशक वहां पर पर्यावरणीय अनुकूलता के अनुसार निवेश नहीं करते हैं उनको भारी जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है। दूसरा पर्यावरणीय अनुकूलता को बनाए रखने के लिए एक शक्त नीति का भी होना अनिवार्य है। पर्यावरण पर ज्यादा विपरीत प्रभाव न पड़े, वहां पर निवेश करने के बाद यदि कोई विपरीत प्रभाव पड़ता है तो उसके लिए भी एक नीति होनी चाहिए जिससे भविष्य के लिए कोई खतरा न हो। आज कार्बन उत्सर्जन अर्थात् ग्रीन हाउस इफेक्ट बहुत ही ज्वलंत मुद्दा है। कल कारखानों से निकलने वाले कार्बन उत्सर्जन के एक महत्त्वपूर्ण कारक हैं। जो कि ओज़ोन परत में छेद करने के लिए सबसे ज़िम्मेदार तत्व के रूप में शामिल हैं। इसके अलावा पर्यावरण में वायु के साथ-साथ जल प्रदूषण, मृदा प्रदूषण एक महत्त्वपूर्ण मुद्दा है। विश्व स्तरीय औद्योगिक परिवहन की बात करें तो विश्व स्तरीय आवागमन में माल ढुलाई के लिए सबसे सटीक साधन जलीय जहाज हैं। जल मार्ग से ही वैश्विक व्यापार सुचारू रूप से चल रहा है। मृदा वायुमंडलीय प्रदूषण केवल मानव या कल कारखानों के कचरों से ही नहीं होता है उसके लिए अन्य कारक भी प्रभावित कर रहे हैं। जैसे- जैसे प्रकृतिक संसाधनों का दोहन जरूरत से ज्यादा होने लगा है, जगह-जगह पहाड़ों की कटाई हो रही है जो कि जैव विविधता के सापेक्ष विपरीत परिस्थिति पैदा करने के महत्त्वपूर्ण कारक हो रहे हैं। वनों की कटाई उतनी ही तेजी से हो रही है, नदी का खनन बालू निकालने के लिए हो रहा है। भू खनन प्राकृतिक संसाधन जैसे खनिज तत्व को निकालने के लिए भूगर्भ का दोहन यह एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में उभर रहा है। इन सब को ध्यान में रखने के लिए ईएसजी निवेश एक महत्त्वपूर्ण कारक बन सकता है।

पर्यावरण के साथ-साथ आज पूरे विश्व में समाजिक अनुकूलता की स्थिति अच्छी नहीं है। सामाजिक असमानता अधिकांश देशों में चरम सीमा पर है। रंगभेद नीति के लिए आए दिन समाजिक कुरीतियां देखने को मिलती हैं। अशिक्षा ,लिंग असमानता, खाद्य सुरक्षा, बेरोजगारी, जनसंख्या नियंत्रण आदि महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दे हैं जो केवल एक देश का नहीं अपितु पूरे विश्व का एक मुद्दा है। प्रत्यक्ष रूप से यह सारे मुद्दे निवेश से

कोई संबंधित नहीं है लेकिन अगर गहराई से सोचा जाए तो सारे मुद्दे निवेश के लिए एक महत्त्वपूर्ण अनुकूलन या कारक माने जा सकते हैं।

निवेश में शासन या गवर्नमेंट का एक महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। गवर्नमेंट या शासन से ही नीति अपनाए और बनाए जाते हैं। शासन कैसा है, वह कैसी नीति निर्धारित करती है, इस बात का उस क्षेत्र या उस देश या उस संस्था के ऊपर बहुत मत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। अच्छे शासन के बिना कई नीति निर्धारण सुचारू रूप से नहीं हो पाते हैं। शासन एक ऐसी प्रक्रिया होती है जिसके कारण सामाजिक एवं वित्तीय अनुकूलता सुनिश्चित किया जाता है। शासन के द्वारा ही पर्यावरणीय असमानता को भी अनुकूल या प्रतिकूल बनाने की दिशा में कार्य किया जाता है । अगर सुचारु रूप से नीति निर्धारण न किया जाए तो कोई भी संस्था सुचारू रूप से नहीं चल सकती है। संस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए एक अच्छी नीति निर्धारण का होना जरूरी है। और एक अच्छा नीति निर्धारण के लिए एक अच्छा शासन का होना जरूरी है। इसके लिए दूसरे शब्दों में हमें कह सकते हैं कि गवर्नमेंट या शासन नीति निर्धारण का अनुकूलन के साथ पालन करना ही है।

भारत में पहला ई एस जी फंड एसबीआई मैगनम इक्विटि ईएसजी फंड के रूप में शुरू हो चुका है तथा आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड, एक्सिस म्यूचुअल फंड ईएस जी में निवेश कर चुके हैं।

2018 में भारतीय रिज़र्व बैंक ईएसजी डिसक्लोज़र पर एक रिपोर्ट प्रकाशित किया था। निफ्टी भी 100 अंक का ईएसजी निवेश जारी कर चुका है। बिना विनाश के कैसे विकास हो इसके लिए ईएसजी एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है। जिसमें यह कंपनियों के लिए सुनिश्चित किया गया है कि वह अपने पिछले वर्ष के शुभ लाभ का दो प्रतिशत हिस्सा इसमें खर्च जरूर करें।

अभी ईएसजी पूर्णरूपेण लागू नहीं है। लेकिन इसके वर्तमान स्वरूप जिस तरह से उभर कर आए हैं यह भविष्य के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण रूप में समाहित हो सकता है। कोई भी वित्तीय संस्था अपना निवेश कहां करती है ईएसजी के माध्यम से ही उसका निर्धारण किया जा सकता है। उस संस्था का सामाजिक प्रभाव कैसा है अर्थात् उसका संस्था में कार्य करने वाले लोगों के प्रति व्यवहार कैसा है, उसका नीति निर्धारण कैसा

है, वह पर्यावरणीय सुधार के लिए क्या कर सकता है, यह एक बहुत बड़ा महत्त्वपूर्ण मुद्दा है और आगे आने वाले समय में एक बहुत बड़ा पैमाना लेकर बहुत बड़ा मापक होकर उभरेगा जो कि निवेशकों के लिए एक नया महत्त्वपूर्ण बिंदु लेकर आएगा। यह केवल आर्थिक रूप से देश को ही नहीं बल्कि सामाजिक एवं पर्यावरणीय अनुकूलता को भी बढ़ावा देता है । कॉरपोरेट, कृषि, शासन से ही उस देश की अर्थव्यवस्था निर्धारित होती है। उस देश की अर्थव्यवस्था के कारण ही उस देश का विकास होता है और उस विकास के फलस्वरूप ही उस देश की संपत्ति निर्धारित होती है । कहने का तात्पर्य यह है कि जिस देश का आर्थिक विकास तेजी से उभरता है वहां पर पर्यावरणीय, सामाजिक और वित्तीय देखभाल तो होती ही रहती है । इसलिए पूरे क्षेत्र में ईएसजी अपनाना एक बहुत ही सटीक एवं सुगम प्रक्रिया हो सकती है, अगर इसे सही दिशा में लागू किया जाए तो यह बहुत बड़ी वैश्विक समस्या से निजात दिलाने एवं सही दिशानिर्देश देने में स्तम्भ साबित हो सकता है।

जय हिन्द

साभार : विभिन्न पत्र पत्रिकाएँ एवं आलेख

*****

अजीत कुमार भारती

पदनाम:- विशेष सहायक
संस्था का नाम:- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
मोबाइल नं. :- 9016496846/ 7226913980
ई-मेल:- bharatiajeet@yahoo.com

कॉर्पोरेट क्षेत्र –इस क्षेत्र में उपक्रम, निगम और संयुक्त स्टॉक कंपनिया जो सरकार के विधायन, प्रशासनिक विनियमों अथवा पंजीकरणों के कारण अपने खामियों से स्वतंत्र हैं, सम्मिलित हैं। 'कॉर्पोरेट' व्यापार से जुडा हुआ शब्द है जिसका उपयोग कंपनी और संगठनों में किया जाता है। अर्थव्यवस्था के विकास में कॉर्पोरेट क्षेत्र ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, अर्थव्यवस्था को संभालने वाले होते हैं कॉर्पोरेट क्षेत्र, नौकरी व्यापार और सरकार को चलाते हैं। कॉर्पोरेट कंपनियों में सदैव ही बड़ी संख्या में शेयर धारकों की सहभागिता रहती है। कॉर्पोरेट क्षेत्र मुख्यतः लाभ कमाने के लिए व्यापार में हैं। इसके निवेश संबंधी निर्णय लाभ से प्रेरित होते हैं और इस प्रकार वह अपने संसाधनों को भावी लाभ की प्रत्याशा के अनुरूप ही उपयोग करता है। परिणाम स्वरुप कॉर्पोरेट सेक्टर का सामाजिक विकास की प्रक्रिया की ओर न्यूनतम रुझान होता है।

सामाजिक दायित्व की संकल्पना हमारे देश में नयी नहीं है, यह हमारे देश में सदियों से चली आ रही एक स्वस्थ परंपरा है। मानव सभ्यता में सामजिक व्यवस्था के उभरने के साथ ही सामजिक दायित्वबोध भी जन्म ले चूका था। हम सब जानते हैं कि किसी भी कार्य के साथ यदि पुण्य और धर्म जोड़ दिया जाय तो मनुष्यों को उस कार्य में निष्ठा और आस्था बढ़ जाती है। समय के साथ इस सामजिक दायित्वबोध का स्वरुप भी बदला सेठ साहुकारो और जमींदारो के स्थान पर आधुनिक काल में व्यावसायिक प्रतिष्ठान तथा कंपनिया भी इस ओर पहल करके अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह स्वेच्छापूर्वक करने लगी है। सीएसआर और ईएसजी इन्हीं पर आधारित है। सीएसआर और ईएसजी में निम्नलिखित अंतर है–

सीएसआर कॉर्पोरेट स्वयं सेवा और कार्बन पदचिन्ह को कम करने और दान के साथ जुड़ने पर केंद्रित है जबकि ईएसजी स्थिरता का अधिक मात्रात्मक माप प्रदान करता है।

ईएसजी पर्यावरण, सामजिक और शासन कारकों पर विचार करता है, व्यवसाय के मूल्यांकन में सुधार करता है। सीएसआर दूसरों को व्यवसाय के मूल्यों और लक्ष्यों के बारे में सूचित करने में मदद करता है। ई एसजी को शामिल करना, ऑडिट करना और मापने योग्य लक्ष्य निर्धारित करना।

ईएसजी क्या है?

पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य कंपनी के संचालन के लिए मानकों का एक समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वो का पालन करने के लिए विवश करते हैं।

पर्यावरण, सामाजिक और शासन कंपनी के कार्बन पदचिन्ह और स्थिरता के प्रति प्रतिबद्धता से लेकर कार्यस्थल संस्कृति और विविधता के प्रति प्रतिबद्धता और कॉर्पोरेट जोखिमों और प्रथाओं के संबंध में इसके समग्र लोकाचार तक की गतिविधियों के लिए रणनीतिक ढांचा हैं।

यह एक संगठनात्मक निर्माण है जो तेजी से महत्त्वपूर्ण हो गया है, खासकर सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेशकों के लिए जो उच्च ईएसजी रेटिंग या स्कोर वाली कंपनियों में निवेश करना चाहते हैं।

ईएसजी के तीन स्तम्भ हैं-

पर्यावरणीय प्रतिबद्धता-इसमें स्थिरता के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता और पर्यावरण पर इसके प्रभाव से जुड़ी हर चीज शामिल है जिसमें इसके कार्बन उत्सर्जन और पदचिन्ह, उर्जा उपयोग, अपशिष्ट और पर्यावरणीय जिम्मेदारी शामिल है। पर्यावरण मानदंड इस बात पर निर्भर करता है कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है।

सामाजिक प्रतिबद्धता– इसमें कंपनी के आंतरिक कार्यस्थल संस्कृति, कर्मचारी संतुष्टि, प्रतिधारण, विविधता, कार्यस्थल की स्थिति और कर्मचारी स्वास्थ्य और सुरक्षा शामिल है। खुश और स्वस्थ कर्मचारियों वाली कंपनिया बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उन्हें मजबूत निवेश के रूप में देखा जाता है। सामाजिक मानदंड यह परिक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहां वह चलित होती हैं) के साथ अपने संबंधो का प्रबंधन कैसे करती हैं।

कॉर्पोरेट प्रशासन – शासन के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता में अनुपालन, आंतरिक कॉर्पोरेट संस्कृति, वेतन अनुपात, कंपनी लोकाचार और नेतृत्व में पारदर्शिता और जवाबदेही शामिल है। निवेशक उन कंपनियो में रूचि रखते हैं जो बदलते कानूनों और विनियमों के साथ तालमेल बिठा सकती हैं और जो कार्यस्थल में समानता के प्रति प्रतिबद्ध होता है।

भारत में ईएसजी की आवश्यकता

भारत वायु, जल प्रदूषण, वनों की कटाई एवं जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ ही गरीबी असमानता, भेदभाव तथा मानवाधिकारों का उल्लंघन जैसी सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है, साथ ही इन मुद्दों का समाधान करने तथा सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने हेतु समर्पित कंपनियों में निवेश के महत्त्व पर जोर देता है।

भारत में एक जटिल विनियामक और विधिक वातावारण है तथा भारत में काम करने वाली कंपनियों को भ्रष्टाचार विनियामक अनुपालन एव कॉर्पोरेट प्रशासन से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इन जोखिमों को कम करने तथा मजबूत प्रशासन वाली कंपनियों को मान्यता देना।

ईएसजी का महत्त्व

ईएसजी व्यवसाय की नैतिकता को बाहरी दुनिया में उजागर करने में मदद करता है। जो कंपनिया संकेत देती हैं कि वे कार्रवाई योग्य ईएसजी मानदंडो का उपयोग कर रही हैं, वे दर्शाती हैं कि उनके पास दीर्घकालिक दृष्टिकोण है और निवेशकों के लिए व्यवहार्य अवसर है। ईएसजी कार्यक्रम अपशिष्ट को कम करके और बेहतर प्रतिभा को आकर्षित करने में मदद करके लागत बचत भी करते हैं। ईएसजी विशिष्ट वस्तुओं पर विचार करता है जिसमे कार्बन उत्सर्जन, वनों की कटाई, अपशिष्ट प्रबंधन और पानी का उपयोग, विविधता और समावेशन, निष्पक्ष श्रम प्रथाएं, कार्यकारी वेतन, आंतरिक भ्रष्टाचार और पैरवी शामिल हैं। ईएसजी सीएसआर पर एक उन्नति है क्योंकि यह अधिक मापने योग्य है। ईएसजी मैट्रिक्स प्रदान करता है जो निवेशकों और व्यापक बाज़ार में विश्वास पैदा करता है।

ईएसजी कार्पोरेट और हितधारकों के लिए मूल्य सृजन कैसे करता है:

- राजस्व में वृद्धि – ईएसजी सिद्धांतों के संरेखण से कंपनियो को मौजूदा बाजारों का

विस्तार करने और उनकी ब्लू ओशन रणनिति (Blue Ocean Strategy} के एक अंग के रूप में विकास के लिए एक अवसर प्रदान करने में मदद करता है।

- सार्वजनिक छवि में सुधार-ईएसजी से अनुपालनकर्ता कंपनियो को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुंच प्राप्त होती है।
- यह धन जुटाने के लिए महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशो में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियो को आरक्षित क्षेत्रो में नये परियोजनाए शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।
- दीर्घकालिक संवहनीयता- ईएसजी ढांचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक सतत निवेश अवसरों के तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ सृजित करता है।
- अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियां ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकेंगी।
- कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि कंपनी परितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक उद्देश्य संचालित जीवन (Purpose Driven Life) सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टा प्रदान कर सकें।
- लागत जोखिम में कमी – शेयर धारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों के लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडो की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एव प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

भारत में ईएसजी का वर्तमान

- **सीमित जागरूकता** – भारत में कई कंपनियों को ईएसजी कारकों के महत्त्व के बारे में पूरी तरह से जानकारी नहीं है या उनके पास अपने व्यवसाय प्रथाओं में ईएसजी के विचारों को एकीकृत करने हेतु संसाधन नहीं है |
- **अपर्याप्त डेटा**– भारत में कंपनियों लिए ईएसजी कारकों पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा सीमित हो सकता है, जिससे निवेशकों हेतु ईएसजी प्रदर्शन का मूल्यांकन करना और निर्णय लेना मुश्किल हो जाता है।
- **कमजोर विनियामक वातावारण**– कंपनियों द्वारा ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए भारत का विनियामक वातावारण पूरी तरह से विकसित या लागू नहीं हो सका है। इससे कॉर्पोरेट प्रथाओं में जबाबदेही तथा पारदर्शिता की कमी है।

- **सांस्कृतिक कारक** – भारत में विविध सांस्कृतिक परिदृश्य हैं और कुछ पारंपरिक व्यवसाय प्रथाएं ईएसजी सिद्धांतो के अनुरूप नहीं हो सकती हैं| ईएसजी नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए कंपनियों को इन सांस्कृतिक कारकों को नेविगेट करने की आवशयकता हो सकती है।
- **सीमित ईएसजी** –निवेश विकल्प –निवेशकों के पास सीमित निवेश विकल्प हो सकते हैं, जिससे निवेश निर्णय में ईएसजी विचारों को पूरी तरह से एकीकृत करना मुश्किल हो जाता है।

निवेशकों और कंपनियों की भूमिका

निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिए बल्कि सतत विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए।

कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक को निरर्थक बना सकते है , क्योकि क़ानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते है और इस प्रकार निवेशको के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

ईएसजी का भविष्य

नीति निर्माताओं की भूमिका–नीति निर्माताओं को धीरे–धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढना चाहिए जहा लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध और गैर– सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे में लाया जाए।

ईएसजी निवेश की बढती मांग का अर्थ है कि प्रयाप्त प्रकटीकरण की बढती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरण, सामजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल किया जा सके।

- **मानवीकृत ईएसजी मानदंड** –ईएसजी मानदंडो पर मात्रात्मक और मानवीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएं प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन प्रदर्शन और संभावनाएं समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी।

भारत में ईएसजी की स्थिति

ईएसजी पर कानून की जरुरत- जैसे-जैसे ग्लोबल वार्मिंग को 1.5 डिग्री सेल्सियस तक सीमित करने की आशा तेजी से कम हो रही है, कंपनियों को जलवायु परिवर्तन के नकारात्मक प्रभावों को रोकने के लिए अपनी व्यावसायिक प्रक्रियाओं को पुनर्गठित करने की सख्त जरुरत है।

ईएसजी व्यवसायों के लिए मूल्य बनाता है क्योंकि उपभोक्ता अपने कार्बन पदचिन्ह और व्यावसायिक प्रदर्शन पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में अधिक जागरूक हो जाते हैं।

ईएसजी पर ध्यान केंद्रित करने से संगठन को तेजी से पूंजी के नए पूल तक पहुंचने, उपभोक्ताओं के बीच एक मजबूत प्रतिष्ठा बनाने और एक स्थायी विकास पथ सुनिश्चित करने में मदद मिलती है –नीति निर्माताओं और उपभोताओ से लेकर निवेशकों तक ईसीजी सभी के लिए महत्त्व रखता है।

भारतीय कंपनी अधिनियम में इसे शामिल किए जाए क्योंकि यह पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिमों को कम करने के लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष:

- ईएसजी निवेश को स्थायी निवेश या सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाना। एक ऐसा पारिस्थितिक तंत्र जहाँ सभी नीतियां मुख्य रूप से एक व्यवसाय के संचालन के एक स्थायी और सामाजिक रूप से जिम्मेदार तरीके से संचालित होती हैं।
- यह परिवर्तन करना किसी व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं हो सकती, यह सभी हितधारकों के लिए बेहतर कल के लिए सहयोगी होना है।

- इसके लिए निवेश को केंद्र में रखने की जरुरत है और वे जिन व्यावसायिक कार्यक्रमों में पैसा लगाते हैं, उनके द्वारा स्थायी कल्याणकारी नीतियों को अपनाने का समर्थन करना चाहिए।
- सुरक्षा उपायों और समान अवसर को मजबूत करने के साथ–साथ मानव पूंजी निर्माण और कौशल पर ध्यान केंद्रित करना, ईएसजी के लापता 'एस' को संबोधित करने के कई तरीकों में से एक है ,जो पर्यावरण और शासन संबंधी चिंताओं पर छाया हुआ है।
- निवेश के लिए स्टॉक का चयन करते समय ईएसजी निधि उन कंपनियों को शार्टलिस्ट करना जो पर्यावरण, सामाजिक जिम्मेदारी और कॉर्पोरेट प्रशासन पर उच्च स्कोर करते हैं और फिर वित्तीय कारकों पर ध्यान देते हैं।
- यह योजना पर्यावरण अनुकूल प्रथाओं, नैतिक व्यावसायिक प्रथाओं और कर्मचारी अनुकूल रिकार्ड वाली कंपनियों पर केंद्रित है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपने अवसरों को अधिकतम करने की इच्छा रखने वाली कंपनियों को इन नई ईएसजी आवश्यकताओं को अपनाने एवं तदनुसार अपने संगठनों को समायोजित करने की आवश्यकता है।
- यूरोपिय प्रतिभूति और बाज़ार प्राधिकरण द्वारा प्रकाशित एक अध्ययन में यह भी पाया गया है कि ईएसजी आम तौर पर रिटर्न में सुधार करता है समय के साथ ग्राहक लागत में कटौती करता है।
- ईमानदारी हमारी संस्कृति और हमारे व्यापार करने के तरीके दोनों का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है और हमेशा से रही है। ये नीतियां शेयरधारकों के सर्वोत्तम हितों और कानून की आवश्यकताओं के अनुरूप कंपनी के उचित संचालन के लिए एक रुपरेखा प्रदान करती है।

स्त्रोत:

- हिन्दू एडिटोरियल बिजनेस लाइन
- टाइम्स ऑफ़ इंडिया
- इकोनॉमिक्स टाइम्स

*****

भरतकुमार दामोदर वायडा

पदनाम:- कार्यालय अधीक्षक
संस्था का नाम:- इंडियन ऑइल कॉर्पोरेशन लि.
मोबाइल नं. :- 9428725406
ई-मेल:- bharatkumardamodar@indianoil.in

"**स**मय के साथ तेजी से बदलती दुनिया में दीर्घकालिक मूल्य बनाने और बनाए रखने के लिए और इससे जुड़े जोखिमों और अवसरों में बदलने के लिए, समृद्ध होने के लिए, प्रत्येक कंपनी को न केवल वित्तीय प्रदर्शन करना होगा, बल्कि यह भी दिखाना होगा कि यह कैसे सकारात्मक प्रभाव डालता है। ईएसजी, आज, कंपनियों को 'सकारात्मक' बनाने में मदद करता है। व्यवसायों के लिए रिपोर्ट के लिए वैश्विक स्तरीय नियमों में वृद्धि और राजस्व वृद्धि में वृद्धि के पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) प्रदर्शन एक महत्त्वपूर्ण निर्धारण बना है। 30% से अधिक कंपनियां पहले से ही अपने आपूर्तिकर्ता और विक्रेता मूल्यांकन और चयन प्रक्रियाओं में ईएसजी नियंत्रण शामिल कर रही हैं।

ईएसजी: लक्ष्य कंपनी के संचालन के लिए मानकों का एक समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक प्रथाओं, पर्यावरण के अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्त्व का पालन करने के लिए मजबूर करता है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में कंपनी के विज़न का उद्देश्य अपने ग्राहकों को समाधान प्रदान करने में अपनी गतिविधियों को कुशल, सुरक्षित और नैतिक तरीके से संचालित करना है, जो पर्यावरण पर प्रभाव को अनुकूलित करता है और समुदाय के जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाता है, जबकि व्यापार और राष्ट्र के सतत विकास को सुनिश्चित करता है।

जिसमें मूल्य सृजन के लिए हितधारकों की आकांक्षाओं को पूरा करना और समाज के साथ विकास करना

- संसाधनों का अनुकूलन करना और व्यावसायिक निर्णयों में पर्यावरणीय और सामाजिक विचारों को शामिल करके पर्यावरणीय प्रभावों को कम करना
- कमाई करना हितधारकों की सद्भावना और एक जिम्मेदार कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में प्रतिष्ठा बनाएं रखना

- नैतिकता और पारदर्शिता के साथ व्यापार करना और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं का पालन करना
- स्थिरता और सतत विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए तकनीकी एवं सामाजिक नवाचारों को अपनाकर उनका उपयोग करना... का समावेश होता है।

ईएसजी प्रबंधन और निरीक्षण: ईएसजी के लिए उन कार्यों और मैट्रिक्स पर ध्यान केंद्रित करना शामिल है जो भौतिक रूप से हमारी मौलिक व्यावसायिक रणनीतियों से जुड़ते हैं। कर्मचारियों और समुदायों के स्वास्थ्य और सुरक्षा की रक्षा करना, नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करना, सेवा की विश्वसनीयता और लचीलापन सुनिश्चित करने के लिए बुनियादी ढांचे में निवेश करना और नैतिकता और सुशासन के लिए एक ठोस संरचना के माध्यम से जवाबदेही को बढ़ावा देना शामिल है। निम्नलिखित कार्य कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं और सतत विकास लक्ष्यों का समर्थन करके, सभी व्यवसाय और व्यक्ति सभी के लिए अधिक स्थायी भविष्य बनाने के लिए कार्रवाई की तरफदारी करता है।

पर्यावरणीय प्रभाव: उचित संचालन का अर्थ है बुनियादी ढांचे में विवेकपूर्ण और समय पर निवेश करना और हमारे व्यवसाय की स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए पर्यावरणीय जोखिमों को कम करने के लिए काम करना। पानी और अपशिष्ट जल सेवाओं के वितरण में उत्कृष्टता के उच्च मानकों के लिए प्रतिबद्ध हैं, जलवायु लचीलापन सुनिश्चित करने के उपाय करने के लिए, ग्राहकों और स्थानीय सरकारों के लिए एक विश्वसनीय संसाधन के रूप में सेवा करने के लिए, मजबूत समुदायों का निर्माण करने के लिए और एक ठोस ढांचा प्रदान करने के लिए जो आर्थिक स्थिरता, समृद्धि और जीवन की गुणवत्ता को चलाता है।

पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि एक कंपनी प्रकृति के प्रबंधक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है। सामाजिक मानदंड जांच करते हैं कि यह कर्मचारियों, आपूर्तिकर्त्ताओं, ग्राहकों और उन समुदायों के साथ संबंधों का प्रबंधन कैसे करता है जहां ये क्रियान्वित हैं। शासन एक कंपनी के नेतृत्त्व, कार्यकारी वेतन, लेखापरीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबंधित है। यह गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है, जो निवेश निर्णयों के मार्गदर्शन के लिए एक पैमाने के रूप में है, जिसमें वित्तीय प्रतिलाभ में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं है।

वर्ष 2006 में **"यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिसपोनसीबल इनवेस्टमेंट (UNPRI)"** की शुरुआत के बाद से ESG ढाँचे को आधुनिक व्यवसायों की एक अटूट कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है।

CSR से अलग: भारत में एक मज़बूत कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (CSR) नीति है जो यह अनिवार्य करती है कि निगम समाज के कल्याण में योगदान देने वाली पहलों में शामिल हों। संशोधनों में कंपनियों को किसी भी वित्तीय वर्ष में CSR गतिविधियों पर पिछले तीन वर्षों में अपने शुद्ध लाभ का कम-से-कम 2% खर्च करने की आवश्यकता है।

अपनी ईएसजी पॉलिसी में संचालन और प्रक्रियाओं में दक्षता रखते हुए कार्यस्थलों में और उसके आस-पास सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण बनाके बुनियादी आजीविका आवश्यकताएं और सामाजिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देने हेतु सुरक्षित पेयजल और जल संसाधनों की सुरक्षा/ स्वास्थ्य देखभाल, पोषण और स्वच्छता/ शिक्षा एवं कौशल विकास/ महिलाओं और सामाजिक/ आर्थिक रूप से वंचित समूहों का सशक्तिकरण, आदि को शामिल किया जाना चाहिए।
ESG नियम प्रक्रिया और प्रभाव में भिन्न हैं।

ESG की आवश्यकता: भारत वायु और जल प्रदूषण, वनों की कटाई एवं जलवायु परिवर्तन जैसी गंभीर पर्यावरणीय चुनौतियों के साथ ही गरीबी, असमानता, भेदभाव तथा मानवाधिकारों के उल्लंघन जैसी सामाजिक चुनौतियों का सामना कर रहा है। साथ ही इन मुद्दों का समाधान करने तथा सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने हेतु समर्पित कंपनियों में निवेश के महत्त्व पर ज़ोर देता है।

भारत में एक जटिल विनियामक और कानूनी वातावरण है तथा भारत में काम करने वाली कंपनियों को भ्रष्टाचार, विनियामक अनुपालन एवं कॉर्पोरेट प्रशासन से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए इन जोखिमों को कम करने हेतु मज़बूत प्रशासन प्रथाओं वाली कंपनियों को मान्यता देने की आवश्यकता है।

भारत में ESG अनुपालन से संबंधित चुनौतियाँ:
सीमित जागरूकता: भारत में कई कंपनियों को ESG कारकों के महत्त्व के बारे में पूरी तरह से जानकारी नहीं है या उनके पास अपने व्यवसाय प्रथाओं में ESG के विचारों को एकीकृत करने हेतु संसाधन नहीं हैं।

अपर्याप्त डेटा: भारत में कंपनियों के लिए ESG कारकों पर सार्वजनिक रूप से उपलब्ध डेटा सीमित हो सकता है, जिससे निवेशकों हेतु ESG प्रदर्शन का मूल्यांकन करना और निवेश निर्णय लेना मुश्किल हो जाता है।

कमज़ोर विनियामक वातावरण: कंपनियों द्वारा ESG अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए भारत का विनियामक वातावरण पूरी तरह से विकसित या लागू नहीं हो सका है। इससे कॉर्पोरेट प्रथाओं में जवाबदेही तथा पारदर्शिता की कमी हो सकती है।

सांस्कृतिक कारक: भारत में विविध सांस्कृतिक परिदृश्य हैं और कुछ पारंपरिक व्यावसायिक प्रथाएं ESG सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हो सकती हैं। ESG नीतियों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिये कंपनियों को इन सांस्कृतिक कारकों को नेविगेट करने की आवश्यकता हो सकती है।

सीमित ESG-केंद्रित निवेश विकल्प: निवेशकों के पास सीमित निवेश विकल्प हो सकते हैं जो विशेष रूप से भारत में ESG कारकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे निवेश निर्णय लेने में ESG विचारों को पूरी तरह से एकीकृत करना मुश्किल हो जाता है।

ESG अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु की गई पहल: कंपनियों के लिए ESG प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक मील के पत्थर में से एक **कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय (MCA)** द्वारा वर्ष 2011 में व्यापार की सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक ज़िम्मेदारियों (NVGs) पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशा-निर्देश जारी करना था। सेबी ने 2022 से लागू व्यावसायिक उत्तरदायित्त्व रिपोर्ट (BRR) की स्थापना की। BRSR, सूचीबद्ध कंपनियों से ESG प्रकटीकरण पर यह मांग करता है कि "उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश" (NGBRCs) के नौ सिद्धांतों की तुलना में उन्होंने कैसा प्रदर्शन किया।

आगे की राह: भारत में ESG को प्रोत्साहित करने के लिए व्यवसायों, निवेशकों और विनियामकों द्वारा स्थायी निवेश हेतु ESG कारकों के महत्त्व को बेहतर ढंग से समझने की आवश्यकता है।

भारत में कंपनियों को ESG कारकों को अधिक व्यापक और सुसंगत तरीके से प्रकट करना चाहिए, ताकि निवेशक अपने ESG प्रदर्शन का अधिक प्रभावी ढंग से मूल्यांकन कर सकें।

व्यवसायों द्वारा बढ़े हुए ESG अनुपालन को प्रोत्साहित करने के लिए भारत के विनियामक ढाँचे को मज़बूत करने की आवश्यकता है। इसके लिए उचित ESG मानकों को स्थापित करना, अधिक मज़बूत रिपोर्टिंग की आवश्यकता और विनियमों को अधिक सख्ती से लागू करना आवश्यक हो सकता है।

निष्कर्ष: जैसा कि हम अपनी ईएसजी नीतियों का विस्तार और उन्नयन करते हैं, हम अपनी शासन प्रक्रियाओं को और अधिक अनुकूलित करने के तरीकों की तलाश करेंगे। इसका उद्देश्य अपने ईएसजी ढांचे का पालन करके अपनी कॉर्पोरेट प्रतिष्ठा, समावेशी संस्कृति और अवसर और जोखिम प्रबंधन को बनाए रखना है, इस प्रकार इसकी दीर्घकालिक सफलता सुनिश्चित करना है।

आइए, हम भारत के लोक सेवक की हैसियत से अपने कार्यकलापों के प्रत्येक क्षेत्र में ईमानदारी और पारदर्शिता पूर्ण आचरण करके कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी के महत्त्व का दायित्व निभाने में अपना अधिक से अधिक योगदान दें।

अंत में,

विकास के इस दौड़ते युग में, हम चरित्र निर्माण न भूलें,
स्वार्थ-साधना ये आंधी में ईसीजी प्रबंधन ना भूलें।
माना, आगम-अथाग सिंधु है, संघर्षो का पार नहीं,
किन्तु, डूबना मझधारों में, हम साहस को स्वीकार नहीं ॥

*****

ज्योति रंजन निधि

पदनाम:- सहायक प्रबंधक
संस्था का नाम:- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
मोबाइल नं. :- 8347770004
ई-मेल:- jrnidhi@live.in

ईसजी क्या है

ईएसजी का मतलब पर्यावरण, सामाजिक और शासन है। इस ढांचे का मुख्य ध्यान यह सुनिश्चित करने पर है कि स्थिरता केवल पर्यावरणीय मुद्दों तक ही सीमित न रहे बल्कि मानव अस्तित्व के प्रत्येक पहलू का हिस्सा बने।

ईसजी एक ऐसा ढांचा है जो निवेशकों और हितधारकों को किसी संगठन के सभी अवसरों के प्रबंधन के तरीके के साथ-साथ पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानदंडों से जुड़े जोखिमों के बारे में सहायता प्रदान करता है। ईएसजी शब्द का प्रयोग सबसे पहले 2004 में "हू केयर्स विन्स" नामक रिपोर्ट में किया गया था, जो संयुक्त राष्ट्र के निमंत्रण पर वित्तीय संस्थानों की एक संयुक्त पहल थी। हालाँकि यह शब्द आमतौर पर निवेश के संदर्भ में उपयोग किया जाता है, इसमें निवेश समुदाय से संबंधित लोगों के अलावा अन्य लोगों के हित भी शामिल होते हैं, जैसे ग्राहक, कर्मचारी, आपूर्तिकर्ता इत्यादि। किसी संगठन के लिए काम करने वाला या किसी संगठन पर खर्च करने वाला प्रत्येक व्यक्ति किसी संगठन के स्थायी कामकाज में अत्यधिक रुचि रखता है।

बीते कुछ दिनों में, या यूँ कहे कुछ दशकों में व्यापार जगत भी बहुत से घटनाक्रम से हो कर गुजरा है। आर्थिक मंदी व कोरोना इनमें से सबसे अच्छे उदाहरण हैं। कोई भी व्यापार, व्यवसाय अंततः इसी पर्यावरण, प्रकृति, पारिस्थिकी तंत्र का हिस्सा हैं। अतः ये इनसे प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूप से प्रभावित होती ही हैं। ऐसे में व्यवसाय व व्यापार जगत जिसमे कॉर्पोरेट जगत काम करता है, पर्यावरण, सामाजिक व शासकीय ढांचे की ओर सबका ध्यान स्वतः आकृष्ट होता है।

ईसजी के कारक

पर्यावरण

ईएसजी का यह कारक हमारे आसपास की प्रकृति के संरक्षण और कल्याण को संदर्भित करता है। कोई भी व्यापार, व्यवसाय खास तौर पर उत्पादन क्षेत्र, औद्योगिक क्षेत्र, पर्यटन व सेवा क्षेत्र जलवायु, पर्यावरण पर सीधा प्रभाव डालती हैं और इन पर भी पर्यावरण का सीधा प्रभाव पड़ता है। खास तौर पर परंपरागत ईंधन की बेतहाशा खपत और इनसे होने वाली जलवायु प्रदूषण। बीते कुछ दशकों में सबका ध्यान अचानक से इस बात पर गया कि परंपरागत ऊर्जा के संसाधन अब बहुत कम समय के लिए ही बचे हैं और औद्योगिकीकरण का एक सीधा दुष्प्रभाव जलवायु प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग है। कारखानों, विद्युत परियोजनाओं, यातायात के साधनों, ग्रीन हाउस प्रभाव इत्यादि कई कारकों के द्वारा उत्सर्जित कार्बन वायुमंडल के तापमान को लगातार बढ़ा रहे हैं। इस कारण से हो रही असामयिक अपदाएं इन संसाधनों को और अधिक तीव्र गति से क्षय किये चले जा रहे हैं। इस कारण ईंधन, ऊर्जा की कीमत और लागत, दोनों में बेतहाशा वृद्धि होती चली जा रही है जो व्यापार जगत में मुनाफ़े के दर को लगातार कम करता चला जा रहा है। ऐसे में सबको ये समझ में आ रहा है कि वित्तीय गतिविधियों का दुष्प्रभाव यदि जलवायु पर पर्यावरण न पड़े अथवा कम से कम पड़े, इनका बोझ प्रकृति को न झेलना पड़े तो इसके कारण आएदिन होने वाली आपदाओं के नुकसान से बच के लाभ के अंश को बढ़ाया जा सकता है। साथ ही ये व्यापार के वहनीयता, टिकाऊपन को भी सुनिश्चित करेगा।

इस कारक में वे सभी पर्यावरणीय समस्याएँ शामिल हैं जो संगठनों द्वारा प्रकृति के अत्यधिक दोहन के कारण होती हैं, जैसे वनों की कटाई, पानी की कमी, अपशिष्ट निपटान आदि। इसमें एक संगठन द्वारा प्राकृतिक संसाधनों की निगरानी के साथ-साथ भीषण जलवायु परिवर्तन या बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदा से शीघ्रता से उबरने की क्षमता भी शामिल है।

सामाजिक

सामाजिक स्तंभ किसी संगठन के अपने निवेशकों और हितधारकों के साथ संबंधों के बारे में बात करता है। किसी फर्म का मूल्यांकन कई कारकों के आधार पर किया जा सकता है, जैसे कि मानव पूंजी प्रबंधन मेट्रिक्स, जो उस फर्म में काम पर रखे गए और

लगे हुए कर्मचारियों की संख्या का डेटा है और श्रमिकों को प्रदान किया जाने वाला उचित वेतन भी है। यह किसी संगठन के उस समुदाय पर प्रभाव पर भी ध्यान केंद्रित करता है जिसके आसपास इसे संचालित किया जा रहा है और आपूर्ति श्रृंखला के भागीदारों पर, विशेष रूप से उन पर जो विकासशील अर्थव्यवस्थाओं का हिस्सा हैं जहां पर्यावरण और श्रम की स्थिति उतनी मजबूत नहीं है।

यह भाग किसी संगठन से संबंधित लोगों के विचार और इन लोगों के साथ प्रबंधित संबंधों के बारे में बात करता है। यह कुछ चीज़ों का ध्यान रखता है, जैसे ग्राहकों की संतुष्टि, यह सुनिश्चित करना कि किसी व्यक्ति की गोपनीयता एन्क्रिप्टेड है, और लिंग और विविधता पर विचार किया जाता है। मानवाधिकार और श्रम के मानक जैसे मुद्दे भी इस स्तंभ का हिस्सा हैं। इस बाबत कॉम्पनियों को इस बात का ध्यान रखा जाना है कि कोई व्यवसाय या संयंत्र आसपास की आबादी के लिए नुकसानदेह तो नहीं है। उनके कर्मचारियों मे कौशल विकास गई गति कैसी है, इत्यादि।

शासकीय

ईएसजी का यह कारक किसी कंपनी को अच्छे तरीके से चलाने के लिए अनिवार्य मानकों पर प्रमुख रूप से केंद्रित है। कुछ ऐसे उपाय हैं जिन पर विचार किया जाना चाहिए जब प्रबंधन पर चर्चा की जा रही हो, जैसे निदेशक मंडल, लेखा परीक्षा समिति आदि जैसी समितियों की संरचना। किसी कंपनी को अच्छे तरीके से संचालित करने के लिए रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार जैसे मुद्दों का प्रबंधन किया जाता है। गवर्नेंस उन तरीकों के बारे में बात करता है जिनसे किसी कंपनी को शासित या प्रबंधित किया जा रहा है। ईएसजी विश्लेषक यह समझने पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि हितधारकों की अपेक्षाओं का ख्याल कैसे रखा जाता है, उनके अधिकारों पर कैसे विचार किया जाता है, और जवाबदेही और पारदर्शिता को बढ़ावा देने के लिए फर्म में किस प्रकार का नियंत्रण मौजूद है। कंपनी व्याप्त नियमों का अनुपालन करते हुए प्रसाशन व सरकार को कैसे सहयोग प्रदान करती है।

ईसजी मानदंड निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिये एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ वित्तीय रिटर्न में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं रह गया है।

वर्ष 2006 में '**यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट**' के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य

कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईसजी का महत्त्व

ईसजी मानदंड के अस्तित्व व परिचालन में आने से कॉर्पोरेट व व्यवसाय जगत को बहुत फायदा हो रहा है और इस संदर्भ में नित नए विचार और पहल निकल कर सामने आने लगे हैं। इसके कुछ फायदे इस तरह से हैं:-

- **राजस्व में वृद्धि:** ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखण से कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशन रणनीति' के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है।
- **सार्वजनिक छवि में सुधार:** ईएसजी-अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्राप्त होती है।
- धन जुटाने के लिये ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएँ शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।
- **दीर्घकालिक संवहनीयता:** ईएसजी ढाँचे के अनुपालंकर्ता कंपनियों को अधिक सतत् निवेश अवसरों की तलाश करने के लिये प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है।
- निम्न कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट में कमी, इष्टतम जल-उपयोग, उच्च रोज़गार सृजन और अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियाँ ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकती हैं।
- **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि:** कंपनी पारितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।
- **लागत/जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

ईसजी ढांचे को अधिक प्रभावी व कारगर बनाने की दिशा में ईसजी फंड भी बनाया गया है जो कि एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है। इसका निवेश सतत् निवेश या

सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश के समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है। ईएसजी फंड पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी-अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

इस फंड को **भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड** (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये कई पहल किये जा रहे हैं

कंपनियों के लिये ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई।

वर्ष 2012 में सेबी ने **'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट'** तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं (जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया) के लिये उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में बीआरआर फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया।

वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' से प्रतिस्थापित कर दिया।

यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू होगा।

व्यावसायिक जिम्मेदारी व स्थिरता रिपोर्ट 'उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश' के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है।

भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों और निवेश उत्पादों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही हैं।

उदाहरण के लिये, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन'

प्राप्त करने के लिये अपने पूर्ण ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया है।

गाजियाबाद नगर निगम भारत का पहला नगर निकाय बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिये पर्यावरणीय रूप से संवहनीय एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है।

भविष्य

नीति-निर्माताओं की भूमिका: नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिये जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए।

ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके।

मानकीकृत ईएसजी मानदंड: ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएँ समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी।

निवेशकों और कंपनियों की भूमिका: निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिये, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये।

कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

चुनौतियाँ

सीमा-पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी ईएसजी सिद्धांतों, ढाँचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं।

ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं।

हालाँकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और/या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिये सीमित किया जा सकता है।

भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिये इन चिंताओं को दूर किया जाना चाहिये।

*****

मिहिर जोषी

पदनाम:- अधिकारी
संस्था का नाम:- बैंक ऑफ़ इंडिया
मोबाइल नं. :- 9998217480
ई-मेल:- mihir.joshi17@gmail.com

ईएसजी क्या है?

संक्षिप्त नाम ईएसजी का अर्थ है **पर्यावरण, सामाजिक और शासन**।
((ESG : Environment, Social, Governance)

ईएसजी उन कारकों को संदर्भित करता है जो किसी कंपनी को वित्तीय पहलुओं की उपेक्षा किए बिना, उसकी सामाजिक, पर्यावरणीय और सुशासन प्रतिबद्धताओं के माध्यम से टिकाऊ बनाते हैं। ईएसजी मानदंड कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के संदर्भ में किसी कंपनी के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये विवश करते हैं। । इन मानदंडों का उपयोग निवेशकों, विश्लेषकों और अन्य इच्छुक पार्टियों द्वारा पर्यावरण, समाज और इसकी शासन संरचना पर कंपनी के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है।

ईएसजी मानदंड :

पहला मानदंड, **पर्यावरण**, यह मूल्यांकन करने पर केंद्रित है कि कोई कंपनी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान और प्रबंधन कैसे करती है। इसमें शामिल हैं **ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट प्रबंधन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग** जो कंपनियां जिम्मेदार पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाती हैं, उन्हें इस मानदंड में बेहतर महत्त्व दिया जाता है।

दूसरा मानदंड, **सामाजिक**, यह दर्शाता है कि कोई कंपनी कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं, और स्थानीय समुदायों के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है। इसमें **निष्पक्ष श्रम प्रथाएं, विविधता और समावेशन, व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा, सामुदायिक संबंध और सकारात्मक सामाजिक प्रभाव** जैसे पहलू शामिल हैं। **समानता, विविधता और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने वाली कंपनियों को अक्सर इस दृष्टिकोण से अधिक अनुकूल माना जाता है।**

तीसरा मानदंड, **शासन का**, किसी कंपनी की संरचना और शासन तंत्र का मूल्यांकन करता है। इसमें **सूचना के प्रकटीकरण में पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण तंत्र** जैसे पहलू शामिल हैं। मजबूत प्रशासन वाली कंपनियां, जहां जवाबदेही को प्रोत्साहित किया जाता है और हितों के टकराव से बचा जाता है, अक्सर अधिक भरोसेमंद और स्थिर मानी जाती हैं।

वर्ष 2006 में '**यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट**' के आरंभ के साथ **ईसीजी ढाँचे को "आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी"** के रूप में मान्यता दी गई है। परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर 'पर्यावरण, सामाजिक और शासन निवेश की मांग ने उल्लेखनीय आकर्षण प्राप्त किया है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी (ESG) का महत्त्व :

Environmental Empathy: कोई कंपनी जब किसी चीज को बनाती है तो पर्यावरण को कुछ न कुछ नुकसान जरूर होता है। जैसे अगर कोई कंपनी कार बनाती है तो इससे वातावरण में कार्बन, विषैला पानी और तमाम तरह के केमिकल घुलते हैं, फैक्ट्रियों और प्लांट की वजह से ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा भी रहता है। आजकल ग्लोबल वॉर्मिंग को लेकर चर्चा भी जोरों पर है, कहीं नदियां सूख रही हैं और दूषित हो रही हैं, तो कहीं ग्लेशियर पिघल रहे हैं। धरती का तापमान भी हर साल बढ़ रहा है, जंगल खत्म हो रहे हैं, ऐसे में कंपनियों की ये जिम्मेदारी होती है कि वो ऐसे कदम उठाएं जिससे पर्यावरण को होने वाला नुकसान कम किया जा सके। जैसे कंपनियां रीन्यूएबल एनर्जी की तरफ रुख करें, वेस्ट मैनेजमेंट को बेहतर कर सकें और ग्रीन कवर को ज्यादा से ज्यादा बढ़ाएं।

Social Responsibility: जब समाज से आप बहुत कुछ हासिल करते हैं तो आपकी जिम्मेदारी बनती है कि आप समाज को उसका कुछ हिस्सा लौटाएं। अगर

आपको समाज धन, संपत्ति और सफलता देता है तो आप समाज के प्रति कितने जिम्मेदार हैं, ये इससे पता चलता है कि आपने समाज के लिए क्या किया। अजीम प्रेमजी या वॉरेन बफे और बिल गेट्स जैसे दुनिया के बड़े बड़े बिजनेसमैन करोड़ों रुपये समाज की भलाई के लिए दान में देते हैं, क्योंकि वो इस बात को मानते हैं कि समाज को वापस लौटाना उनकी नैतिक जिम्मेदारी है। वैसे भी कंपनीज एक्ट 2013 के मुताबिक कंपनियों को अपने कुल मुनाफे का 2 परसेंट हिस्सा सामाजिक कामों पर खर्च करना जरूरी है।

Governance: कोई कंपनी अच्छी है या बुरी, काम करने लायक है या नहीं, ये इससे पता चलता है कि उस कंपनी का कॉर्पोरेट गवर्नेंस कैसा है। कोई भी कंपनी या संस्था उसके कर्मचारियों, स्टाफ, सप्लायर्स, ग्राहकों से बनती होती है। उस कंपनी का मैनेजमेंट अपने स्टाफ, ग्राहकों के साथ कैसा बर्ताव करता है, उनके हितों को सुरक्षित रखने के लिए क्या कदम उठाता है, ये कॉर्पोरेट गवर्नेंस कहलाता है। किसी कंपनी का मैनेजमेंट सही से काम कर रहा है या नहीं, यानी किसी कंपनी का कॉर्पोरेट गवर्नेंस ठीक है या नहीं इसके लिए सेबी के सख्त नियम भी हैं।

मूल्य सृजनमें ईएसजी का महत्त्व :

- **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि:** कंपनी पारितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' (Purpose-Driven-Life) सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।
- **दीर्घकालिक संवहनीयता:** निम्न कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट में कमी, इष्टतम जल -उपयोग, उच्च रोज़गार सृजन और अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियाँ ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकेंगी।
- **सार्वजनिक छवि में सुधार:** ईएसजी-अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्राप्त होती है।
- **लागत/जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।
- **राजस्व में वृद्धि:** ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखण से कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी '**ब्लू ओशियन रणनीति**' (Blue Ocean Strategy) के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है।

भारत में ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिये की गई पहलें :

- कंपनियों के लिए ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष **2011** में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई।
- वर्ष **2012** में सेबी ने '**बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट**' (**BRR**) तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं के लिये उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में **BRR** फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया।
- वर्ष **2021** में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र '**बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट**' (**BRSR**) से प्रतिस्थापित कर दिया। यह वित्त वर्ष **2022-23** से शीर्ष **1,000** सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू होगा।
- **BRSR** '**उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश**' (**NGBRCs**) के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है।

ईएसजी का वर्तमान एवं भविष्य :

हाल के वर्षों में दुनिया भर में ईएसजी निवेश का एक महत्त्वपूर्ण विस्तार देखा गया है क्योंकि संगठन और व्यक्ति तेजी से सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक मुद्दों के बीच अंतरनिर्भरता को पहचान रहे हैं। कोविड-19 महामारी के कारण बाजार में व्यवधान और अनिश्चितता के कारण कई निवेशकों ने लचीलापन बढ़ाने के लिए ईएसजी की ओर रुख किया। पिछले कुछ वर्षों में दुनिया भर के अग्रणी संगठनों द्वारा उठाए जा रहे ईएसजी एजेंडे में तेजी देखी गई है। जैसे की...

व्यवसाय संचालन में ईएसजी को शामिल करना

वैश्विक महामारी सहित दुनिया भर में व्यवधानों के बावजूद, जिसके कारण बड़े आर्थिक और सामाजिक झटके लगे, ईएसजी फंड में निवेश बड़े पैमाने पर बढ़ रहा है और आने वाले दशक में और अधिक बढ़ने की भविष्यवाणी की गई है।

ईएसजी डेटा और रेटिंग:

ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग के साथ, विश्वसनीय और मानकीकृत ईएसजी डेटा

और रेटिंग पर जोर बढ़ रहा है। भारतीय कंपनियां अपने ईएसजी प्रकटीकरण में सुधार कर रही हैं, और रेटिंग एजेंसियां उनके ईएसजी प्रदर्शन के आधार पर कंपनियों का मूल्यांकन और रैंक करने के लिए व्यापक रूपरेखा विकसित कर रही हैं।

जलवायु परिवर्तन पर प्रतिक्रिया

COP26 ने नीति निर्माताओं और व्यवसायों को जलवायु परिवर्तन के मुद्दों को प्राथमिकता के आधार पर संबोधित करने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया है।

उदाहरण के लिए, **टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज** ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन' प्राप्त करने के लिए अपने पूर्ण GHG उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया है।

बढ़े हुए नियम

दुनिया भर के कई न्यायक्षेत्रों में कॉरपोरेट्स को अधिक जवाबदेह बनाने के लिए ईएसजी रिपोर्टिंग और प्रकटीकरण नियमों के आने से इसका महत्त्व और बढ़ गया है।

ग्रीन बांड और स्थिरता:

भारत में ग्रीन बांड जारी करने में वृद्धि देखी गई है, जिसका उपयोग पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए किया जाता है। इसके अतिरिक्त, स्थिरता से जुड़े उपकरण, जहां ब्याज दरें जारीकर्ता के ईएसजी प्रदर्शन से जुड़ी होती हैं, लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं, जिससे कंपनियों को अपनी स्थिरता प्रथाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है।

उदाहरण के लिये **गाजियाबाद नगर निगम** भारत का पहला नगर निकाय बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिये पर्यावरणीय रूप से संवहनीय एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है।

उपभोक्ता की प्राथमिकताएँ बदलना

सहस्राब्दी आबादी समाज में मौजूद पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों के बारे में तेजी से जागरूक हो रही है। यह आश्चर्य की बात नहीं होगी यदि अगली पीढ़ी उन उत्पादों और कंपनियों का बहिष्कार करने तक पहुंच जाए जो ईएसजी सिद्धांतों पर आधारित नहीं हैं।

अतः दूरगामी सोच वाले उद्यमों ने पहले ही अपने संचालन में जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं को एकीकृत करने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। जबकि कुछ उद्यमों ने मानसिक

स्वास्थ्य के मुद्दों को अधिक महत्त्व दिया है, कुछ अन्य को जलवायु-अनुकूल पहलों पर ध्यान केंद्रित करते देखा गया है। हालाँकि विभिन्न संगठनों द्वारा अपनाए गए रास्ते अलग-अलग हो सकते हैं, अंतिम लक्ष्य एक ही है - टिकाऊ और लचीला बनना।

ईएसजी की राह में चुनौतियाँ :

- **जागरूकता और शिक्षा:** ईएसजी के लाभों और सर्वोत्तम प्रथाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाने और आतिथ्य हितधारकों को शिक्षित करने की आवश्यकता है। इसमें कर्मचारियों को प्रशिक्षण देना, प्रबंधकों के बीच जागरूकता बढ़ाना और टिकाऊ पहल की सफलता की कहानियां साझा करना शामिल है।
- **बुनियादी ढांचा और संसाधन:** ईएसजी प्रथाओं को अपनाने के लिए अक्सर प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचे और प्रशिक्षण में निवेश की आवश्यकता होती है।
- **सहयोग और उद्योग मानक:** ईएसजी प्रथाओं के लिए उद्योग-व्यापी मानकों और दिशानिर्देशों की स्थापना के पालन के लिए एक सामान्य रूपरेखा और बेंचमार्क प्रदान कर सकती है।
- **अन्य चुनौतियाँ**: ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं।

आगे की राह :

ईएसजी की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके। इसके लिए....

वर्तमान स्थिति का मूल्यांकन : ईएसजीका मूल्यांकन वैश्विक बेंचमार्किंग एवं सर्वोत्तम प्रथाओं के जरिए होना चाहिए।

ठोस रणनीति : ईएसजी यात्रा शुरू करने से पहले एक ठोस रणनीति की आवश्यकता होगी।

भविष्य के लिए एक रोडमैप : 'एक आकार सभी के लिए उपयुक्त' दृष्टिकोण काम नहीं करेगा और इसका उलटा असर भी हो सकता है। इसलिए एक सफल ईएसजी

रणनीति कंपनी के संदर्भ में प्रासंगिक भी होनी चाहिए और उसके लिए एक रोडमैप की आवश्यकता रहेगी।

अतः पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी पहलुओं पर विचार करके, ईएसजी मानदंड एक अधिक संपूर्ण तस्वीर प्रदान करती है। इसके अलावा, ईएसजी मानदंड संकट की स्थितियों को रोकने और जोखिमों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। दूसरी ओर, ईएसजी मानदंड कंपनियों के भीतर नवाचार और दक्षता को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। टिकाऊ प्रथाओं को अपनाकर, कंपनियां लागत कम करने, ऊर्जा दक्षता में सुधार करने, संसाधनों के उपयोग को अनुकूलित करने और बाजार में अपनी प्रतिस्पर्धी स्थिति को मजबूत करने के नए तरीके खोज सकती हैं। इसलिए निवेशक उन कंपनियों में निवेश करने में रुचि लेंगे जो सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हैं, क्योंकि इससे न केवल नियामक जुर्माना या कानूनी दावों जैसे संभावित नकारात्मक प्रभावों से जुड़े जोखिम कम हो सकते हैं, बल्कि व्यावसायिक अवसर भी पैदा हो सकते हैं और कंपनी की प्रतिष्ठा में सुधार हो सकता है।

*****

सोनम पटेरिया

पदनाम:- वरिष्ठ प्रबंधक

संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक

मोबाइल नं. :- 7290005141

ई-मेल:- sonam.pateriya@pnb.co.in

परंपरागत रूप से, निवेश निर्णय वित्तीय मापदंडों द्वारा संचालित होते रहे हैं। लेकिन अब, लोग जलवायु परिवर्तन और यह दुनिया को कैसे प्रभावित करता है, इसके बारे में अधिक चिंता करने लगे हैं। वे ऐसा निवेश करना चाहते हैं जो पर्यावरण और समाज के लिए अच्छा हो। इसे स्थायी निवेश कहा जाता है। इसका मतलब यह है कि जब लोग यह तय करते हैं कि कहां निवेश करना है तो वे सिर्फ पैसे से ज्यादा कुछ और देखना भी नहीं चाहते हैं। निवेशक चाहता है कि कंपनियां सिर्फ पैसा कमाने से ज्यादा कुछ और सोचें? वे चाहते हैं कि कंपनियां यह भी सोचें कि वे दुनिया और इसमें रहने वाले लोगों को कैसे प्रभावित करती हैं। लोग इस विचार के बारे में लंबे समय से बात कर रहे हैं, लेकिन अब कंपनियां ही ऐसा करना शुरू कर रही हैं।

"यदि आप इसे मापते नहीं हैं, तो आप इसे प्रबंधित नहीं कर सकते।"

परिणामस्वरूप,**पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी)** निवेश की मांग ने विश्व स्तर पर महत्त्वपूर्ण गति पकड़ ली है, जो निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिए एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिसमें वित्तीय रिटर्न बढ़ाना अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं है। इसका मतलब है कि निवेशक न केवल अधिक पैसा कमाने पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, बल्कि सकारात्मक प्रभाव डालने पर भी ध्यान केंद्रित कर रहे हैं।

हमें यह समझने की आवश्यकता है कि ईएसजीका क्या अर्थ है? **"ईएसजी- पर्यावरण, सामाजिक और शासन का संक्षिप्त रूप है"**

ईएसजी एक शब्द है जिसकी शुरुआत **2004** में **"हू केयर्स विन्स"** नामक रिपोर्ट में हुई थी। इसे संयुक्त राष्ट्र की मदद से बैंकों और अन्य धन संगठनों द्वारा बनाया गया था। **20** वर्षों से भी कम समय में, ईएसजी दुनिया भर में वास्तव में महत्त्वपूर्ण हो गया है। यह इस बारे में है कि कंपनियां पर्यावरण और समाज का ख्याल कैसे रखती हैं।

वर्ष 2019 में, मॉर्निंग स्टार नामक कंपनी ने बहुत सारा पैसा, लगभग 17.67 बिलियन डॉलर, ऐसे उत्पादों में खर्च किया जो पर्यावरण की मदद करते हैं, समाज को बेहतर बनाते हैं और अच्छी व्यावसायिक प्रथाएं रखते हैं। यह वर्ष 2015 की तुलना में बहुत बड़ी वृद्धि थी, जब इस प्रकार के उत्पादों में केवल थोड़ा सा पैसा खर्च होता था।

ईएसजी यह सोचने का एक तरीका है कि कंपनियों और संगठनों को पर्यावरण की देखभाल कैसे करनी चाहिए, लोगों के साथ निष्पक्ष व्यवहार करना चाहिए, अच्छे निर्णय लेने चाहिए। यह तय करने का एक तरीका यह है कि पर्यावरण, लोगों और उन्हें कैसे चलाया जाता है, इसकी परवाह करने वाली कंपनियों में अपना पैसा कहां लगाया जाए।

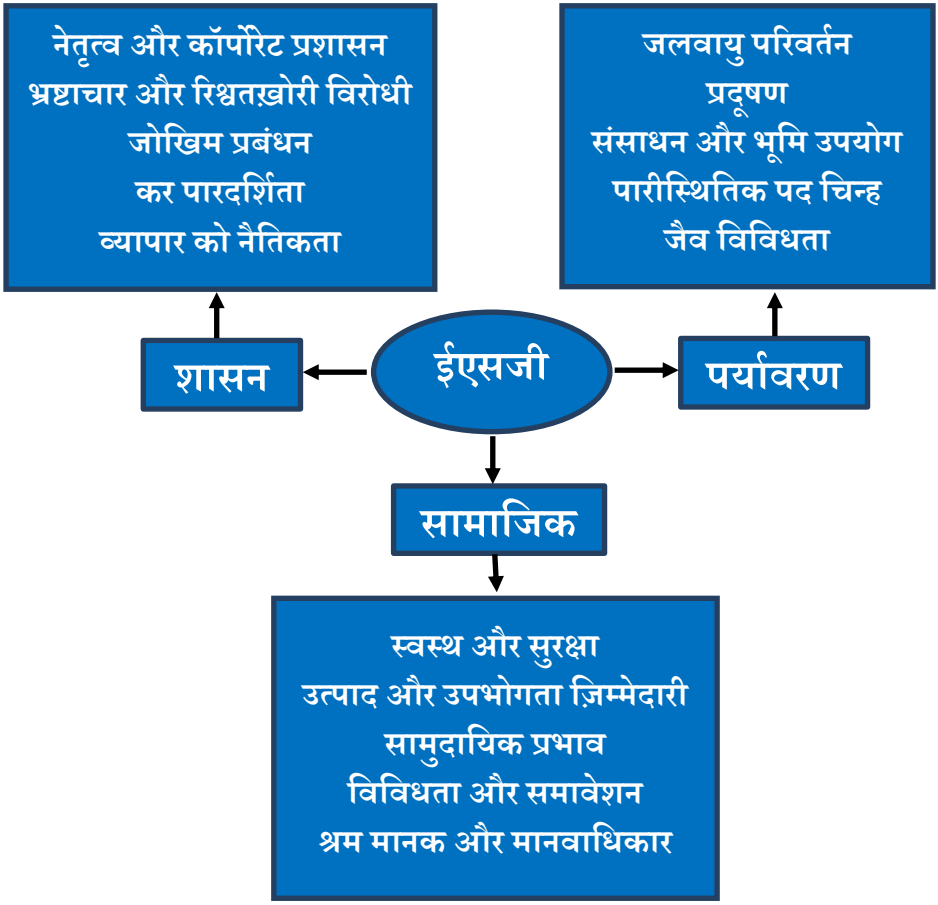

एक प्रभावी ईएसजी कार्यक्रम के चार तत्व (स्रोत: गार्टनर)

- ईएसजी के शुरुआती दिनों का पता वर्ष 1960 और वर्ष 1970 के दशक में लगाया जा सकता है, जब सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश (एसआरआई) ने लोकप्रियता हासिल करना शुरू किया था।
- वर्ष 1980 के दशक में, लोगों ने 'कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व' या संक्षेप में सीएसआर नामक चीज़ के बारे में बात करना शुरू कर दिया। इसका मतलब यह है कि कंपनियों को एहसास हुआ कि इस बारे में जिम्मेदार और पारदर्शी होने के महत्त्व को पहचानना शुरू कर दिया।
- वर्ष 2000 के दशक तक ऐसा नहीं था कि लोगों ने निवेश के बारे में बात करते समय ईएसजी शब्द का बहुत अधिक उपयोग करना शुरू कर दिया था।
- वर्ष 2011 में विभाग कार्य एम. पी द्वारा जारी की गया 'व्यवसाय के सामाजिक,पर्यावरण और आर्थिक देनदारियाँ पर राष्ट्रीय आख़िर विवरण' (व्यवसाय की सामाजिक, पर्यावरणीय और आर्थिक जिम्मेदारियों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश) के रूप में जाहिर हुई।
- वर्ष 2012 से 'बिज़नेस उत्तर दायित्व रिपोर्ट' (बीआरआर) नाम से एक रिपोर्ट बना रही है। शीर्ष 100 कंपनियों और बाद में शीर्ष 500 कंपनियों को अपनी वार्षिक रिपोर्ट में शामिल करने के लिए बीआरआर आवश्यक है।
- लेकिन अब, वर्ष 2021 से शुरू होकर, 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' (बीआरएसआर) नामक एक नई रिपोर्ट आई है। यह नई रिपोर्ट अधिक विस्तृत और व्यवस्थित है।
- 2022-23 से शुरू होकर, शीर्ष 1,000 कंपनियों के लिए अपनी रिपोर्ट में बीआरएसआर को शामिल करना आवश्यक होगा।
- बीआरएसआर इस बारे में है कि ये कंपनियां व्यवसाय संचालन के नौ महत्त्वपूर्ण सिद्धांतों के संदर्भ में कैसा प्रदर्शन कर रही हैं।
- **अब, वर्ष 2023 मे ईएसजी सिद्धांतों का उपयोग करके 30 ट्रिलियन डॉलर से अधिक का प्रबंधन किया जा रहा है।**
- आजकल, पैसा कहां निवेश करना है यह तय करते समय ईएसजी को वास्तव में महत्त्वपूर्ण माना जाता है। जब लोगों ने पहली बार यह देखना शुरू किया कि कंपनियां पर्यावरण जैसी चीजों के साथ कैसा काम कर रही हैं और वे अपने कर्मचारियों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं।

ईएसजी के शुरुआती दिनों में ईएसजी कारकों को मापने और मूल्यांकन करने के तरीके में मानकीकरण और स्थिरता की कमी थी। हालाँकि, हाल के वर्षों में, ईएसजी रिपोर्टिंग में अधिक मानकीकरण और पारदर्शिता की ओर जोर दिया गया है, क्योंकि निवेशक और हितधारक कंपनियों के ईएसजी प्रदर्शन के बारे में अधिक जानकारी की मांग करते हैं। ईएसजी मानक ऐसे नियम हैं जो दुनिया भर के विभिन्न समूहों, जैसे यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट और सस्टेनेबिलिटी अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स बोर्ड द्वारा बनाए जाते हैं। ये नियम हमें यह जानने में मदद करते हैं कि क्या कोई कंपनी या संगठन पर्यावरण के प्रति अच्छा व्यवहार कर रहा है, लोगों के साथ निष्पक्ष व्यवहार कर रहा है और उनके पैसे के प्रति जिम्मेदार है। ईएसजी मानक विभिन्न वैश्विक संगठनों और पहलों द्वारा निर्धारित किए जाते हैं, जैसे कि यूएन ग्लोबल कॉम्पैक्ट और सस्टेनेबिलिटी अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स बोर्ड।

ई एस जी के विभिन्न पहलू
ईएसजी के सामाजिक पहलू
व्यावसायिक पहलू
पर्यावरणीय पहलू
कॉर्पोरेट प्रशासन पहलू
उपभोक्ताओं की दृष्टि से
औद्योगिक पहलू
अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

♦ ईएसजी के सामाजिक पहलू

किसी कंपनी के सामाजिक प्रभाव दूरगामी और व्यापक हो सकते हैं। उनमें कुछ सरल बातें शामिल हो सकती हैं जैसे कि उनके कर्मचारियों की विविधता या वे अपने ग्राहकों के साथ कैसा व्यवहार करते हैं। इसमें यह शामिल हो सकता है कि क्या वे अपने उत्पादों में पशु उत्पादों का उपयोग करते हैं या नहीं, क्या वे शाकाहारी विकल्प प्रदान करते हैं, आदि। हालांकि पहली बार में ऐसा लग सकता है कि यह व्यवसाय से संबंधित नहीं है।

ये सभी चीजें कंपनी की सार्वजनिक छवि को प्रभावित करती हैं। यह महत्त्वपूर्ण है क्योंकि अगर कंपनियों की प्रतिष्ठा अच्छी है तो उनके सफल होने की अधिक संभावना

है और हर कोई कुछ दुकानों पर खरीदारी करने में सहज या सुरक्षित महसूस नहीं करेगा।

हालाँकि सामाजिक प्रभावों में केवल बाहरी दुनिया ही शामिल नहीं है। इसमें यह भी शामिल है कि कंपनी के कर्मचारियों के साथ कैसा व्यवहार किया जाता है और उनकी कितनी अच्छी देखभाल की जाती है। इसमें मातृत्व अवकाश, बीमारी की छुट्टी, छुट्टी का समय, वेतन समानता इत्यादि जैसी चीज़ें शामिल हैं। ये सभी चीजें कर्मचारियों और उनके परिवारों दोनों को प्रभावित करती हैं और साथ ही वे समाज के साथ कैसे बातचीत करते हैं।

♦ व्यावसायिक पहलू

फाइनेंशियल टाइम्स ने एक बार लिखा था कि "ईएसजी कंपनी के प्रदर्शन में एक महत्त्वपूर्ण कारक है और पर्यावरण, सामाजिक और शासन की सफलता का सबसे अच्छा संकेतक है।" साथ ही, यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण है क्योंकि...

* यह कंपनी की छवि और प्रतिष्ठा में सुधार कर सकता है, जो अधिक निवेशकों को आकर्षित करेगा
* इसमें दुनिया भर की सरकारों के नए नियमों के माध्यम से ट्रिपल बॉटम लाइन को प्रभावित करने की क्षमता है
* यह कंपनियों को नवप्रवर्तन के लिए बाध्य करता है, जिससे सभी प्रकार के नए अवसर सामने आते हैं|
* यह पर्यावरण के लिए अच्छा है और इसलिए आपके बच्चों और आपके पोते-पोतियों के लिए अच्छा है

♦ पर्यावरण की दृष्टि से

कंपनियों के लिए पर्यावरण को ध्यान में रखना एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण चीज़ है। वे अपनी प्रक्रियाओं और आसपास के वातावरण पर इन प्रक्रियाओं के प्रभाव के प्रति सचेत रहकर इसे शुरू कर सकते हैं। इसका मतलब है पुनर्चक्रण, पर्यावरण-अनुकूल सामग्रियों का उपयोग करना, पानी की बर्बादी को कम करना और बहुत कुछ। ये सभी चीज़ें हर किसी के लिए एक स्वस्थ दुनिया में योगदान करती हैं।

♦ कॉर्पोरेट प्रशासन पहलू

शासन नेतृत्व के बारे में है। ईएसजी के शासन पहलुओं से तात्पर्य है कि किसी कंपनी

को अपने कार्यों के लिए कितनी अच्छी तरह जवाबदेह ठहराया जाता है। इसमें शामिल है कि वे जनता के साथ कितने पारदर्शी हैं, वे अपने कर्मचारियों, हितधारकों, ग्राहकों और जिन समुदायों की वे सेवा करते हैं उनके साथ कितना अच्छा व्यवहार करते हैं। इसका मतलब यह है कि कंपनियां अपने कार्बन पदचिह्न, वेतन समानता और बहुत कुछ जैसी जानकारी का खुलासा करेंगी। इसका मतलब यह सुनिश्चित करना भी है कि कंपनी के भीतर कोई भ्रष्टाचार नहीं है और हर कोई काम उचित और नैतिक रूप से कर रहा है (भ्रष्टाचार धारणा सूचकांक)।

ईएसजी प्रथाओं में परिपक्व कंपनियां वाणिज्यिक अवसर, संगठनात्मक क्षमता और हितधारक भावना के अलावा, दीर्घकालिक व्यावसायिक आवश्यकताओं और पर्यावरणीय बाधाओं को देखते हुए एक मजबूत प्रक्रिया के माध्यम से प्राथमिकताएं निर्धारित करती हैं।

♦ उपभोक्ताओं की दृष्टि से

उपभोक्ता ईएसजी की आधारशिला हैं। ईएसजी उपभोक्ताओं के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें विश्वास दिलाता है कि जिस कंपनी के साथ वे अपना पैसा खर्च कर रहे हैं वह सामाजिक रूप से जिम्मेदार है। यदि प्रत्येक व्यवसाय पारदर्शी है, तो आप ठीक-ठीक जानते हैं कि आपका पैसा कहाँ जा रहा है और इसका उपयोग कैसे किया जा रहा है। यदि कोई कंपनी अस्पष्ट चीजें कर रही है, तो उपभोक्ता अपने बटुए से वोट कर सकते हैं। इसे देशों पर भी लागू किया जा सकता है.

♦ औद्योगिक पहलू

उद्योग को यह समझने की जरूरत है कि ईएसजी स्थायी व्यावसायिक प्रथाओं के साथ -साथ सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन बनाने के लिए एक उपयोगी उपकरण हो सकता है।

कई कंपनियों ने पाया है कि ईएसजी को अपनी दैनिक गतिविधियों में शामिल करने से वास्तव में उन्हें लागत और जोखिम कम करने में मदद मिल सकती है, साथ ही नए राजस्व स्रोत भी उत्पन्न हो सकते हैं।

ईएसजी उद्योग के लिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह जलवायु परिवर्तन, संसाधन की कमी और सामाजिक असमानता जैसे मुद्दों को संबोधित करने में मदद करता है जो प्रभावी ढंग से कार्य करने की क्षमता को प्रभावित कर रहे हैं।

व्यापक ईएसजी रणनीति होने से कंपनियां निवेशकों और उपभोक्ताओं के लिए अधिक आकर्षक हो जाती हैं, और इसलिए उनके मुनाफे पर असर पड़ता है।

♦ अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

ईएसजी के परिणामस्वरूप अधिक टिकाऊ समाज और बेहतर वातावरण बन रहा है। यह प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में कार्बन उत्सर्जन को कम करने, बेहतर सिंचाई प्रथाओं के माध्यम से वनों की कटाई और पानी की बर्बादी को कम करने, कंपनियों के भीतर ऊर्जा दक्षता में सुधार करने और एक चक्रीय अर्थव्यवस्था बनाने में मदद कर रहा है।

कंपनियों पर अपने प्रभाव के माध्यम से, ईएसजी कॉर्पोरेट पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ा रहा है। यह उपभोक्ताओं को उनके द्वारा खरीदे जाने वाले उत्पादों और जिन कंपनियों का वे समर्थन करते हैं, उनके बारे में अधिक टिकाऊ निर्णय लेने के लिए सशक्त बना रहा है।

बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में ईएसजी का महत्त्व

वित्तीय संस्थानों के पास ग्रह और इसे घर कहने वाले लोगों के लिए सकारात्मक परिवर्तनों को प्रभावित करने के लिए अपने प्रभाव और संसाधनों का उपयोग करने का एक अनूठा अवसर है। अपने निवेश, बैंकिंग, बीमा और अन्य वित्तीय उत्पादों में ईएसजी के विचारों को एकीकृत करके, कंपनियां अपने ग्राहकों पर अच्छा बनाते हुए लाभप्रदता बनाए रख सकती हैं ' और निवेशक ' स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने की इच्छा रखते हैं, सामाजिक कारणों का समर्थन करें, और जिम्मेदार शासन को बढ़ावा दें। यहां बैंकिंग और वित्तीय सेवाओं में ईएसजी को एकीकृत करने के पांच प्रमुख लाभ हैं।

बेहतर ब्रांड प्रतिष्ठा

ईएसजी कारकों को प्राथमिकता देने वाली कंपनियों को ग्राहकों द्वारा अधिक जिम्मेदार और नैतिक माना जाता है। जैसे-जैसे पर्यावरण और सामाजिक सरोकार अधिक प्रमुख होते जाते हैं, ऐसे संगठन जो इन कारकों का सम्मान करने की प्रतिज्ञा करते हैं, उनकी ब्रांड प्रतिष्ठा में सुधार करते हैं।

पूंजी तक पहुंच

तेजी से, व्यक्तिगत और संस्थागत निवेशक सक्रिय रूप से उन कंपनियों की खोज करते हैं जो ईएसजी कारकों का पालन करते हैं और उन लोगों से बचते हैं जो नहीं करते हैं।

नतीजतन, वित्तीय फर्म जो अपने संचालन में ईएसजी विचारों को शामिल करते हैं, उनकी पूंजी तक अधिक पहुंच होती है.

ग्राहक निष्ठा में वृद्धि

सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी को महत्त्व देने वाले ग्राहक अपने मूल्यों का समर्थन करने वाली कंपनियों के साथ व्यापार करना पसंद करते हैं। ईएसजी विचारों को संचालन में शामिल करना इन ग्राहकों को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए एक महत्त्वपूर्ण विक्रय बिंदु है।

कम जोखिम प्रोफ़ाइल

ईएसजी कारकों की अनदेखी निवेशकों और बीमाकर्ताओं के लिए महत्त्वपूर्ण वित्तीय जोखिम पैदा कर सकती है। ईएसजी कारकों पर जोर देने वाले बैंक पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों से जुड़े जोखिमों के प्रबंधन के लिए बेहतर स्थिति में हो सकते हैं।

प्रतिस्पर्धात्मक लाभ

वित्त उद्योग एक प्रतिस्पर्धी है। ईएसजी कारकों के साथ परिचालन संरेखण एक प्रमुख विभेदक है, जिससे वित्तीय संस्थानों और वित्तीय सेवा कंपनियों को खुद को प्रतियोगियों से अलग करने और स्थायी वित्त के बढ़ते क्षेत्र में अग्रणी बनने की अनुमति मिलती है।

2020 में दुनिया भर में सैकड़ों प्राकृतिक आपदा की घटनाएं हुईं। ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका, रोमानिया, पुर्तगाल, स्पेन और इटली में रिकॉर्ड आकार की जंगल की आग, चीन, भारत और पाकिस्तान में भीषण बाढ़, ब्रिटेन में आंधी और तूफान, जर्मनी में भूस्खलन, फिलीपींस में ज्वालामुखी विस्फोट, पूरे एशिया में गंभीर मौसम की घटनाएं हुईं और एक रिकॉर्ड-तोड़ तूफान का मौसम जिसने अटलांटिक पर रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित किया। पश्चिमी कनाडा में गर्मी का प्रकोप था और कम से कम 23 देशों में 50C (122F) या उससे ऊपर का उच्च तापमान दर्ज किया गया। अंटार्कटिक में भी रिकॉर्ड उच्च तापमान दर्ज किया गया। हैती एक उष्णकटिबंधीय तूफान, एक भूकंप और एक राजनीतिक संकट से नष्ट हो गया था, जो दिखाता है कि हम वास्तव में एक से अधिक संकटों के लिए कितने तैयार नहीं हैं।

इन मौसमी घटनाओं में से शीर्ष दस की लागत $140 बिलियन से अधिक होने का अनुमान है। अन्य मौसम संबंधी घटनाओं की अनुमानित लागत $2Tr से अधिक है। इसमें तूफानों में खोई गई अनुमानित 8,200 जिंदगियां शामिल नहीं हैं।

शोधकर्ताओं ने ग्रह पर मीथेन के स्तर में सबसे बड़ी वार्षिक वृद्धि की पुष्टि की है, जो 25% ग्लोबल वार्मिंग से जुड़ी है। समुद्र का स्तर भी अब तक के अपने उच्चतम बिंदु तक बढ़ गया है। इससे केवल यह साबित हुआ है कि हम उन अपरिहार्य परिवर्तनों के लिए कितने खराब तरीके से तैयार हैं जो हमारी अस्थिर आदतों के कारण हमारे ग्रह को प्रभावित करेंगे। और यहीं पर ईएसजी मदद कर सकता है, क्योंकि ईएसजी ही है जो हमें हमारे जीवन की हर गतिविधि से जोड़ता है। यदि आप दुनिया को टिकाऊ बनाना चाहते हैं, तो अब सही समय है अपनी रणनीति बदलने का। जैसे कि भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालन वाली कंपनियों और निवेश उत्पादों में बढ़ती रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में सक्रिय रूप से कदम उठा रही हैं।

उदाहरण के लिए,

- टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने 2030 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन हासिल करने के लिए अपने पूर्ण ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया।
- हिंदुस्तान यूनिलीवर ने व्यक्तिगत स्वच्छता की कमी, स्वच्छ पेयजल की अनुपलब्धता और मलिन बस्तियों में खराब स्वच्छता के मुद्दों को पूरा करने के लिए मुंबई में एक केंद्र स्थापित किया।
- गाजियाबाद नगर निगम अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिए पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ परियोजना के लिए बीएसई पर सूचीबद्ध ग्रीन बांड जारी करने वाला भारत का पहला नागरिक निकाय बन गया, जिसने ₹150 करोड़ जुटाए, जिसकी आय का उपयोग किया जाएगा। गाजियाबाद में उद्योगों को लाभ पहुंचाने के लिए एक तृतीयक जल उपचार संयंत्र।
- ईएसजी ने पिछले 40 वर्षों में 25 ओईसीडी देशों में प्रति यूनिट सकल घरेलू उत्पाद में 90% से अधिक कम कार्बन उत्सर्जन पैदा करके आर्थिक विकास को गति दी है, उन देशों की तुलना में जहां ईएसजी प्रथाओं का कोई या सीमित कार्यान्वयन नहीं था।
- प्रबंधन के तहत लगभग $8 ट्रिलियन अमरीकी डालर के साथ हजारों एसआरआई म्यूचुअल फंड हैं, और पेंशन फंड, सॉवरेन वेल्थ फंड, फाउंडेशन और बंदोबस्ती द्वारा जिम्मेदार निवेश को गंभीरता से लिया जा रहा है।

ईएसजी का भविष्य

- ईएसजी सभी देशों को समान रूप से प्रभावित नहीं करता है क्योंकि प्रत्येक देश में अलग-अलग नियम हैं जो यह निर्धारित करते हैं कि ईएसजी मुद्दों पर कंपनियों के प्रदर्शन के बारे में जानकारी तक किसकी पहुंच है। इसके अलावा, आप भौगोलिक रूप से कहां स्थित हैं, इसके आधार पर, निवेश करने के लिए अलग-अलग कंपनियां हैं। उदाहरण के लिए, संयुक्त राज्य अमेरिका में सामाजिक रूप से जिम्मेदार निवेश का अलग-अलग नियमों और निवेश विकल्पों के कारण दूसरे देश में समान प्रभाव नहीं हो सकता है।
- ईएसजी से कंपनियों को अधिक टिकाऊ होने और विफल होने की संभावना कम होने में मदद मिलती है। आप ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि इससे यह सुनिश्चित करने में मदद मिलती है कि कंपनियां अपना पैसा सही चीज़ों में लगा रही हैं। आप ऐसा इसलिए कह सकते हैं क्योंकि केवल उसी में निवेश करना जो आप दुनिया में और अधिक देखना चाहते हैं, हम सभी के लिए अच्छा है। हालाँकि यह सच है, यह उससे कहीं अधिक गहराई तक जाता है और इस बात के मर्म को छूता है कि हम कैसे जीते हैं और कैसे जीना चाहते हैं। मैं आपके लिए ईएसजी को सरल शब्दों में तोड़ने जा रहा हूं, ताकि आप वास्तव में देख सकें कि यह क्या है।
- लेकिन यह नियामक अनुपालन से बहुत अधिक है। यह हितधारकों बनाम सिर्फ शेयरधारकों के व्यापक दृष्टिकोण के बारे में है, जिसमें शामिल है कि कर्मचारी और ग्राहक ईएसजी के प्रमुख घटकों के बारे में कैसा महसूस करते हैं। उन ताकतों को मिला, मुझे लगता है, सार्थक बदलाव लाने के लिए बैंकों को अपनी व्यावसायिक रणनीतियों को समायोजित करने के लिए जल्दी से आगे बढ़ना होगा।

ईएसजी को कंपनी संस्कृति का हिस्सा बनाना। ईएसजी मुद्दों पर कर्मचारियों को प्रशिक्षित करने से लेकर प्रदर्शन मूल्यांकन और मुआवजा पैकेज में ईएसजी विचारों को शामिल करने तक, ईएसजी को आपके संगठन की संस्कृति में शामिल करना महत्त्वपूर्ण है। कार्यकारी प्रायोजन के दृष्टिकोण से - जैसा कि सभी परियोजनाओं के साथ होता है - यह जरूरी है कि कंपनी संस्कृति का यह पहलू ऊपर से आए। ईएसजी पहलों की निगरानी के लिए समितियों या कार्यबलों की स्थापना करना स्थायी व्यावसायिक सिद्धांतों को बनाए रखने के साथ-साथ वरिष्ठ नेतृत्व को पूरे व्यवसाय में जांच करने में मदद करने का एक अत्यधिक प्रभावी तरीका है।

अच्छा करना अच्छा व्यवसाय है, और ईएसजी प्रतिभा प्रतिधारण से लेकर बाजार में धारणा तक, चरम मामलों में, संचालित करने के लिए व्यवसाय के लाइसेंस तक सब कुछ प्रभावित करता है. 99% अमेरिकियों को पर्यावरण या सामाजिक मुद्दों का समर्थन करने वाली कंपनियों पर भरोसा करने की अधिक संभावना है, और 86% कर्मचारी उन कंपनियों के लिए समर्थन या काम करना पसंद करते हैं जो उन्हीं मुद्दों की परवाह करते हैं जो वे करते हैं. यह सोच रहा है कि आप कैसे काम कर रहे हैं और आप अपनी ऊर्जा कहाँ डाल रहे हैं. उस सोच को व्यवसाय के यांत्रिकी के लिए सभी तरह से जाने की आवश्यकता है: आप जो कुछ भी सोर्सिंग, निर्माण और उत्पादन कर रहे हैं, उसका एक पदचिह्न है.

"ईएसजी की दुनिया में हर चुनौती कठिन और जटिल है"

- प्रतिनिधित्व जैसी चुनौतियां
- एक समावेशी कर्मचारी अनुभव बनाना
- हमारे जलवायु मुद्दों से निपटना

अधिकांश कंपनियां भौतिकता मूल्यांकन पूरा करके अपनी ईएसजी यात्रा शुरू करती हैं, जो उन्हें यह आकलन करने में मदद करती है कि किन मुद्दों का उनके हितधारकों और दुनिया पर सबसे अधिक प्रभाव पड़ता है.

भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिए इन चिंताओं का समाधान किया जाना चाहिए।ईएसजी का भविष्य विकसित होता रहेगा, क्योंकि कंपनियां, निवेशक और नियामक स्थिरता और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं के महत्त्व को तेजी से पहचान रहे हैं।यहां कुछ संभावित रुझान और विकास हैं जो ईएसजी के भविष्य को आकार दे सकते हैं:सामाजिक कारकों पर बढ़ता जोर,जबकि पर्यावरण और शासन कारकों पर पारंपरिक रूप से ईएसजी में सबसे अधिक ध्यान दिया गया हैविविधता, समानता और समावेशन जैसे सामाजिक कारकों पर जोर बढ़ने की संभावना है।

सफलता की स्थिति के लिए, उन सामाजिक कारकों को प्राथमिकता दें जो कर्मचारियों को आकर्षित करते हैं और बनाए रखते हैं, ग्राहक वफादारी बनाते हैं और समग्र रूप से

प्रतिष्ठा में सुधार करते हैं।बेहतर मानकीकरण और पारदर्शिता:

ईएसजी रिपोर्टिंग में मानकीकरण और पारदर्शिता में वृद्धि होगी, क्योंकि निवेशक और अन्य हितधारक यह सुनिश्चित करना चाहते हैं कि ईएसजी डेटा तुलनीय, विश्वसनीय और सटीक है। इसमें सामान्य ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे का विकास, या नियामक निकायों द्वारा ईएसजी रिपोर्टिंग मानकों की स्थापना शामिल होने की संभावना है। विनियमन से आगे निकलने से लंबे समय में लाभ मिलेगा।

जलवायु परिवर्तन फोकस का एक प्रमुख क्षेत्र बना रहेगा, क्योंकि वैश्विक समुदाय जलवायु आपातकाल के बढ़ते खतरे को संबोधित करना चाहता है।

पेंशन फंड और बंदोबस्ती जैसे संस्थागत निवेशक भी ईएसजी निवेश के लिए अपना आबंटन बढ़ा रहे हैं, जिससे ईएसजी निवेश को मुख्यधारा में लाने में मदद मिल रही है। ईएसजी डेटा और अनुसंधान की बढ़ती उपलब्धता ने भी मुख्यधारा को अपनाने में मदद की है। इससे ईएसजी मेट्रिक्स को मानकीकृत करने और निवेशकों के लिए कंपनियों का मूल्यांकन करना आसान बनाने में मदद मिली है।

जैसे-जैसे ईएसजी व्यावसायिक रणनीति में अधिक एकीकृत होता जा रहा है, निस्संदेह, इसका व्यावसायिक प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ रहा है। ईएसजी को प्राथमिकता देने वाली कंपनियां अधिक लचीली होती हैं, उनका जोखिम प्रोफाइल कम होता है और वे ग्राहकों, निवेशकों और प्रतिभाओं को आकर्षित करने और बनाए रखने में बेहतर सक्षम होती हैं। इससे यह मान्यता बढ़ी है कि ईएसजी न केवल एक नैतिक अनिवार्यता है, बल्कि यह अच्छी व्यावसायिक समझ भी रखता है।

कंपनियों के पास किसी प्रकार की ईएसजी नीति होना अच्छी बात है। हालाँकि यह याद रखना महत्त्वपूर्ण है कि, हालाँकि ये चीज़ें सही रास्ते पर हैं, फिर भी वे सही नहीं हैं और ऐसे युवा आंदोलन से पूरी तरह से उम्मीद नहीं की जानी चाहिए। ये चीजें सही दिशा में उठाए गए कदमों का प्रतिनिधित्व करती हैं और जबकि हमें उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए, हमें उनसे चमत्कार की उम्मीद नहीं करनी चाहिए, बल्कि चमत्कार की शुरुआत होनी चाहिए।

यह भी ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण है कि ईएसजी केवल बड़ी कंपनियों के लिए नहीं है, क्योंकि जब जलवायु की बात आती है, तो कोई ग्रह बी नहीं है। सब कुछ मायने रखता है!

सीमाओं के पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी से ईएसजी सिद्धांतों, रूपरेखाओं और विचारों के बीच सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाइयां पैदा हो सकती हैं।इसके अलावा, ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, स्थिरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित चुनौतियां ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएं पैदा कर सकती हैं।

दुनिया भर की सरकारें और नियामक निकाय स्थिरता और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं के महत्त्व को पहचान रहे हैं, और कंपनियों को अधिक जिम्मेदारी से कार्य करने और संचालित करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठा रहे हैं।

कुछ देशों में, ईएसजी रिपोर्टिंग को अनिवार्य करना शुरू कर दिया है, जो कंपनियों को ईएसजी मुद्दों को गंभीरता से लेने के लिए मजबूर कर रहा है। उदाहरण के लिए, यूरोपीय संघ के सतत वित्त प्रकटीकरण विनियमन के लिए कंपनियों को अपनी रिपोर्टिंग में ईएसजी डेटा का खुलासा करने की आवश्यकता होती है। हाल के वर्षों में, व्यवसायों पर ईएसजी कारकों को प्राथमिकता देने का नियामक दबाव बढ़ रहा है। अनिवार्य रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के साथ-साथ, कुछ सरकारें कंपनियों को ईएसजी मानकों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन की पेशकश कर रही हैं, जैसे कि नवीकरणीय ऊर्जा या अन्य पर्यावरण-अनुकूल पहलों में निवेश करने वाली कंपनियों के लिए कर छूट या सब्सिडी।नियामक उन कंपनियों को दंडित करने के लिए भी कदम उठा रहे हैं जो ईएसजी मानकों को पूरा करने में विफल रहती हैं, साथ ही पर्यावरण नियमों का उल्लंघन करने वाली या अनैतिक व्यावसायिक प्रथाओं में संलग्न कंपनियों पर जुर्माना या अन्य दंड लगाया जा रहा है।एक मजबूत नींव के लिए, रणनीतिक योजना और कार्यान्वयन पर विचार करना चाहिए:

जब ब्रांड प्रतिष्ठा की बात आती है, तो सामाजिक और पर्यावरण के प्रति जागरूक कंपनियों को ग्राहकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों द्वारा अधिक सकारात्मक रूप से देखा जाता है, जिसके परिणामस्वरूप राजस्व, ग्राहक प्रतिधारण दर और कर्मचारी भर्ती और प्रतिधारण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

बैंक अधिक सफल होंगे यदि वे ग्राहकों के बीच सकारात्मक व्यवहार को प्रोत्साहित करने के तरीके ढूंढते हैं और उन्हें बेहतर स्थान पर लाने में मदद करते हैं. कुछ ग्राहकों के लिए, संचालन में परिणामी परिवर्तन पूर्ण उलट नहीं हो सकता है, लेकिन बैंक सभी

पक्षों से दबाव का अनुभव करेंगे ताकि कम से कम उनके वित्तपोषण निर्णयों के साथ व्यवहार को प्रभावित करने का प्रयास किया जा सके।

वित्तीय सेवा के नेता हमें बताते हैं कि वे इस क्षेत्र में जल्दी से आगे बढ़ने के लिए विनियमन की उम्मीद करते हैं, इसलिए बैंकों को अनजाने में "ग्रीनवॉशिंग से बचते हुए इसे आगे बढ़ाने की आवश्यकता है" या इसकी वास्तविकता की तुलना में स्थिरता की उपस्थिति पर अधिक ध्यान केंद्रित करना।

ईएसजी ढाँचे का संस्था अन्य को अधिक सतत निवेश अवसर की खोज करने के लिए अधिकार करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है।

- निम्न कार्बन कार्य, अन्य में कमी
- जल-उपयोग
- उच्च रोज़गार
- बेहतर प्रकटीकरण रखना वाली व्यवसाय
- ईएसजी अवलोकन में उच्च स्कोर प्राप्त कर कार्यकुशलता
- कर्मचारी पद में बढ़ोतरी
- कंपनी ईएसजी का एकीकरण कर्मचारी के बीच एक 'उद्देश्य- संचालित-जीवन' (उद्देश्य-प्रेरित-जीवन)
- अपने नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त
- सहायक।लागत/ख़तरा में कमी:
- शेयरधारक शिकायत का चोट, मांग
- लैंगिक विविधता
- अर्थ दंड एवं आख़िर कार्रवाई में कमी

स्थिरता के एकीकरण ने पिछले 40 वर्षों में 25 ओईसीडी देशों में प्रति यूनिट सकल घरेलू उत्पाद में 90% कम कार्बन उत्सर्जन पैदा किया है।अपनी हालिया रिपोर्ट, एनाटॉमी ऑफ एन इफेक्टिव ईएसजी प्रोग्राम में, गार्टनर ने भविष्यवाणी की है कि व्यापक-आधारित ईएसजी रिपोर्टिंग आवश्यकताएं 2025 तक लागू हो जाएंगी। वे कहते हैं: "संगठनों को अब अपनी ईएसजी पहल को अनुपालन-संचालित प्रयासों से लेकर रणनीतिक कार्यक्रमों तक विकसित करना चाहिए जो एकीकृत हों। रणनीतिक निर्णय लेने और परिचालन निष्पादन में संगठन की पर्यावरण, सामाजिक और शासन प्राथमिकताएँ।

यदि आप निवेश करने के लिए पर्याप्त आय वाले व्यक्ति हैं तो उन कंपनियों में निवेश करने पर विचार करें जो आपके मूल्यों के अनुकूल हों और दुनिया में सकारात्मक बदलाव लाएँ।आज लोग इस बात के प्रति अधिक जागरूक हो रहे हैं कि कैसे उनके कार्य हर किसी और उनके आस-पास की हर चीज़ को प्रभावित करते हैं। यदि हम अपने लिए, अपने बच्चों के लिए, अपने ग्रह और सभी जीवित प्राणियों के लिए एक अलग भविष्य चाहते हैं तो अब समय आ गया है कि हम मामलों को अपने हाथों में लें और वास्तव में कुछ करें!

"यदि आप इसे मापते नहीं हैं, तो आप इसे प्रबंधित नहीं कर सकते।"

Ref:

- Drishti, The Vision foundation India
- Hindu Business line editorial article dt 25.05.22
- Taking ESG reporting to next level article Dt 24.05.22 of Shylla Sawhney Gaurav Dayal
- The evolution of ESG by CXO magazine team.
- Gartner report on ESG

*****

शक्तिवीर सिंह

पदनाम:- राजभाषा अधिकारी
संस्था का नाम:- गेल (इंडिया) लिमिटेड, सूरत
मोबाइल नं. :- 9739817000
ई-मेल:- shaktivir.singh@gail.co.in

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और समाज में रहने के लिए प्रत्येक समाज की एक सामाजिक व्यवस्था होती है। सामाजिक व्यवस्था में जीवन यापन हेतु कई प्रणाली और चरण होते हैं। बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए प्रत्येक सामाजिक स्तर पर निवेश की आवश्यकता महसूस की जाती रही है। आज विश्व की कई संस्थाएं और व्यक्तिगत स्तर पर पर्यावरण संरक्षण हेतु काफी सक्रिय होने के साथ-साथ लोगों को जागरूक भी कर रही हैं। ऐसे में मानव संस्कृति के विकास एवं वर्तमान समय में तकनीकी युग के प्रतिस्पर्धात्मक दौर में पर्यावरण, सामाजिक और शासन के निवेश की मांग ने वैश्विक स्तर पर काफी ख्याति तथा मांग प्राप्त की है।

पर्यावरण, सामाजिक और शासन से संबंधित दृष्टिकोण है जिसका उपयोग कंपनियों द्वारा अपने व्यापार प्रक्रियाओं के एक भाग के रूप में अपने सभी हितधारकों (और सामान्य रूप से समाज) के साथ बातचीत करने के तरीकों को मापने के लिए किया जाता हैं। ईएसजी केवल सामाजिक रूप से जिम्मेदार व्यवसाय नहीं है बल्कि स्थायी व्यावसायिक प्रथाओं को अपनाने का एक व्यापक तरीका है। निवेशक व्यवसाय की दीर्घकालिक स्थिरता के साथ-साथ इससे जुड़े किसी भी जोखिम की पहचान करने के लिए ईएसजी विश्लेषण पर विचार कर सकते हैं।

ईएसजी को सोशली रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टिंग भी कहा जाता है। यहां निवेश पर्यावरण और व्यक्ति तथा अर्थव्यवस्था हेतु सभी के हित में सोच कर किए जाते हैं। सरल शब्दों में समझें तो मान लीजिए आप कुछ पैसा निवेश करना चाहते हैं ताकि वो निर्धारित समय में बढ़ता रहे। ऐसे में आप किसी कंपनी में निवेश करते समय सभी आर्थिक मानदंडों पर विचार करते हैं लेकिन एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप गैर आर्थिक मानदंडों पर भी विचार कर सकते हैं। जैसे कि पर्यावरण, समाज और शासन।

यही तीनों मिल कर बनाते हैं ESG यानी की पर्यावरण (ENIVERONMENT), सामाजिक (SOCIAL), शासन (GOVERNANCE)। ईएसजी इन्वेस्टिंग एक ऐसी स्ट्रेटेजी है जहां आप उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो कि दुनिया को कुछ और बेहतर बनाने की दिशा में काम करती हैं।

- **पर्यावरणीय :** कंपनी पर्यावरण पर क्या असर डालती है जैसे कि कंपनी के मैन्युफैक्चरिंग प्रोसेस में कार्बन फुटप्रिंट, टॉक्सिक केमिकल आदि का शामिल होना।
- **सामाजिक:** कंपनी अपने अन्दर और बाहर सोसाइटी दोनों ही जगह सामाजिक प्रभाव को कैसे सुधारती है. सोशल इम्पैक्ट जैसे कि रेसियल डाइवर्सिटी, जातिगत समानता, हायरिंग प्रैक्टिस आदि के लिए कंपनी के नियम. कैसे एक कंपनी सिर्फ अपने व्यवसाय क्षेत्र में सीमित न हो कर उसके बाहर भी सामाजिक मुद्दों के लिए आवाज उठाती है।
- **शासन :** कंपनी का निदेशक मण्डल और प्रबंधन सकारात्मक परिवर्तन को बढ़ावा देता है। शासन के अंतर्गत अपने आसपास की समस्याओं के एक बेहतर नेतृत्व प्रदान करना जो परिवर्तन ला सके। कई विद्वानों का मानना है कि अपने कार्मिकों, ग्राहकों और हितधारकों के साथ कैसा व्यवहार करती है वही सही अर्थों में शासन कहलाता है।

एक सशक्त ईएसजी एक संगठन/संस्था की विश्वसनीयता या प्रतिष्ठा को बनाए रखने में मदद करता है। वे कम जोखिम की संभावना रखते हैं क्योंकि वे स्थिरता को एक मुख्य मूल्य के रूप में शामिल करते हैं। यह कुछ वर्षों में व्यापार के लिए स्थिर और अधिक लंबे समय तक चलने वाला प्रदर्शन है। इसके विपरीत एक कमजोर ईएसजी वाला संगठन अस्थिरता, उच्च जोखिम और लंबी अवधि में अचानक नुकसान के लिए अधिक महत्त्वपूर्ण क्षमता के जोखिम पर चलता है। ईएसजी दुनिया भर के सभी व्यावसायिक रूप से प्रबंधित परिसंपत्तियों के एक-चौथाई भाग के लिए जिम्मेदार हैं।

ईएसजी निवेश के लिए पर्यावरण कंपनी के पर्यावरणीय डिस्क्लोशर, पर्यावरणीय प्रभाव, और प्रदूषण या कार्बन उत्सर्जन को रोकने के किसी भी प्रयास को संदर्भित करती है। सामाजिक, कार्यस्थल मानसिकता जैसे विविधता, मानवाधिकार और मैनेजमेंट को संदर्भित करती है। इसमें समुदाय के आस-पास का कोई भी संबंध जैसे परोपकार और कॉर्पोरेट नागरिकता भी शामिल हैं। दूसरी ओर शासन शेयरधारक के अधिकार, मुआवजे, तथा प्रबंधन और शेयरधारकों के अंतर-संबंधों के लिए जिम्मेदार है।

भारत में भी पिछले कई वर्षों में ईएसजी निवेश में कई गुना वृद्धि हुई है जो कि नीतिगत सुधारों और जागरूकता के लिए एक बेहतर विकल्प है।

ईएसजी निवेश का विकास

अधिकांश ईएसजी निवेशकों के लिए नैतिक विचार और मूल्यों के साथ एकत्रीकरण की भावना एक सामान्य प्रेरणा बनी रही। क्षेत्र तेजी से बढ़ रहा है और विकसित हो रहा है। परिसंपत्ति मालिकों के लिए जो जलवायु परिवर्तन के प्रति उत्तरदायी हैं बाजार में समाधान परंपरागत रूप से इसे कम करने पर केंद्रित हैं। वे हरित ऊर्जा कंपनियों के संपर्क में वृद्धि और ग्रीनहाउस गैसों के संपर्क को कम करके, एक पोर्टफोलियो पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को कम करने की कोशिश कर रहे हैं। जलवायु परिवर्तन और मानव जीवन और पृथ्वी पर इसके प्रभाव पर बढ़ती जागरूकता के साथ अब कंपनियों को निवेशकों से इस जानकारी को साझा करने की आवश्यकता होती है कि वे जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को समायोजित करने के लिए अपनी व्यावसायिक रणनीतियों को कैसे अनुकूलित कर रहे हैं।

कई निवेशक पारंपरिक वित्तीय विश्लेषण के अलावा, निवेश प्रक्रिया में ईएसजी कारकों को शामिल करना चाहते हैं। इसके एक हिस्से के रूप में निवेश फर्म कंपनियों का ईएसजी डेटा एकत्र करती हैं और इसका उपयोग उसके जो एक स्टॉक बन जाता है के मूल्यांकन और जोखिम पर निर्णय लेने के लिए करती हैं। ईएसजी को मूल्य-आधारित माप के रूप में देखने वाले निवेशकों के साथ, वे कंपनियों में ईएसजी के प्रदर्शन को उसी तरीके से मापने के लिए तैयार हैं, जैसे वे किसी भी अन्य पारंपरिक वित्तीय प्रदर्शन में करते है। यह जलवायु परिवर्तन, कार्बन तीव्रता, विवाद जोखिम, और समग्र ईएसजी प्रोफाइल जैसे कारकों की तर्ज पर गहराई से ईएसजी रिपोर्टिंग की ओर अग्रसर है।

भारत में ईएसजी

पिछले दशक में नीति सुधारों की एक विचारधारा देखी गई है जिसके कारण भारतीय संगठनों में ईएसजी का अधिक समावेश हुआ है। वर्ष 2007 में, भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने सभी अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों को एक पत्र जारी किया जिसमें उन्हें कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व, सतत् विकास और गैर-वित्तीय रिपोर्टिंग पर उनकी भूमिका की सलाह दी गई। वर्ष 2008 में, क्रिसिल, स्टैंडर्ड एंड पुअर, केएलडी रिसर्च एंड एनालिटिक्स ने एस एंड पी ईएसजी इंडिया इंडेक्स का शुभारंभ किया, जो उन कंपनियों का पहला निवेश योग्य सूचकांक है जिनकी व्यावसायिक रणनीतियाँ और प्रदर्शन ईएसजी मानकों को पूरा करने के प्रति उच्च स्तर की प्रतिबद्धता का प्रदर्शन करते है।

ईएसजी का भविष्य :

- नीति-निर्माताओं की भूमिका: नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिए जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे के दायरे में लाया जाए।
- ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके।

- **निवेशकों और कंपनियों की भूमिका:** निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिए, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिये भी तत्पर रहना चाहिए।
- कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

भारत में ईएसजी निवेश की चुनौतियां :

भारत में ईएसजी निवेश के सामने आने वाली विशिष्ट चुनौतियां हैं:

- **गुणवत्ता डेटा की कमी:** किसी कंपनी के पर्यावरण, सामाजिक या प्रशासनिक प्रदर्शन के बारे में सटीक डेटा आमतौर पर एक विश्लेषक, एक फंड मैनेजर या निवेशक से खरीदा जाता है। इस डेटा को प्राप्त करने के अन्य स्रोत भी हैं जैसे संगठन की स्थिरता रिपोर्ट और वार्षिक रिपोर्ट, मीडिया, सार्वजनिक स्रोतों के माध्यम से उपलब्ध जानकारी जैसे कि समाचार लेख । यह प्रक्रिया अक्सर थकाऊ, जटिल और गलत होती है इसलिए सटीकता, विश्वसनीयता और डेटा विश्वसनीयता जैसे मुद्दे भारत में ईएसजी निवेश के विस्तार में एक बाधा बने हुए हैं।

- **बाजार मानकों का अभाव**: जब ईएसजी निवेश की बात आती है तब बाजार के मानकीकरण की कमी होती है। इसे विभिन्न नामों- प्रभावी निवेश, सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश, स्थायी और उत्तरदायी सतत् और उत्तरदायी निवेश से बुलाया जाता है। ईएसजी डेटा संग्रह, प्रभावी मापक मानकों और रिपोर्टिंग पद्धति में मानकीकरण की कमी है। इससे निवेशकों के लिए जटिलता का एक और स्तर जुड़ जाता हैं।

- **पारंपरिक मानसिकता:** बहुत से निवेशक और परिसंपत्ति मैनेजर ईएसजी को एक अतिरिक्त खर्च मानते हैं जिसे दूर किया जा सकता है। दूरदृष्टि की यह कमी भारत में ईएसजी निवेश के विकास को रोकती है। ईएसजी फंड के ट्रैक रिकॉर्ड की कमी: पिछले 2-3 वर्षों में अधिकांशतः ईएसजी फंड हाल ही में आए हैं इसलिए भारत में ईएसजी-अलाइन्ड फंड का लंबा ट्रैक रिकॉर्ड नहीं है जो ज्यादा निवेश को आकर्षित नहीं करता है।

पर्यावरण और मानव जीवन के लिए महत्त्व

ईएसजी मानदंड का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि हम जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता और व्यावसायिक प्रथाओं में पारदर्शिता की कमी जैसी बढ़ती वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ये चुनौतियाँ **वे न केवल उस वातावरण को प्रभावित करते हैं जिसमें हम रहते हैं बल्कि कंपनियों की लाभप्रदता और प्रतिष्ठा पर भी सीधा प्रभाव डालते हैं।**

पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी पहलुओं पर विचार करके, ईएसजी मानदंड एक अधिक संपूर्ण तस्वीर प्रदान करते हैं कि एक कंपनी इन चुनौतियों का प्रबंधन कैसे कर रही है और क्या वह उनका सामना करने के लिए तैयार है। वे कंपनियाँ जो टिकाऊ नीतियों और प्रथाओं को अपनाती हैं **वे न केवल पर्यावरण के संरक्षण में योगदान दे रहे हैं**, बल्कि वे अपने शेयरधारकों और सामान्य रूप से समाज के लिए दीर्घकालिक मूल्य भी बना रहे हैं।

निवेशक उन कंपनियों में निवेश करने में रुचि ले रहे हैं जो सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हैं क्योंकि इससे न केवल नियामक जुर्माना या कानूनी दावों जैसे संभावित नकारात्मक प्रभावों से जुड़े जोखिम कम हो सकते हैं, बल्कि व्यावसायिक अवसर भी पैदा हो सकते हैं और कंपनी की प्रतिष्ठा में सुधार हो सकता है।

इसके अलावा ईएसजी मानदंड संकट की स्थितियों को रोकने और जोखिमों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए एक कंपनी जो अपने कार्बन उत्सर्जन का उचित प्रबंधन नहीं करती है, उसे भविष्य में उच्च नियामक लागत या उसके संचालन पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता है। उसी तरह से **खराब प्रशासन प्रबंधन वाली कंपनी वित्तीय घोटालों की चपेट में आ सकती है** जो इसकी छवि और निवेशकों के साथ इसके संबंधों को नुकसान पहुंचाता है।

निष्कर्ष :

वर्तमान दौर में ईएसजी सभी व्यवसायों पर लागू है और कंपनियां इसके योगदान को तेजी से महसूस कर रही हैं। अधिक से अधिक निवेशकों, शेयरधारकों, कर्मचारियों, ग्राहकों, नियामकों के साथ प्रणाली में अधिक पारदर्शिता के लिए क्लैमरिंग, ईएसजी निवेश अनिवार्य हो रहा है। विशेष रूप से नए सामान्य रूप में ईएसजी निवेश निस्संदेह एक अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और भारत दुनिया भर में व्यवसाय करने के तरीके को बदल देगा। यह अंततः व्यवसायियक समुदाय और बाकी सभी की सहायता करेगा।

संदर्भ ग्रंथ :

- विभिन्न समाचार पत्रों से
- अर्नेस्ट एंड यंग कंपनी की साइट
- एडीईसी ईएसजी सोल्युशंस
- दृष्टि आईएएस की साइट से
- एंगेल ब्रोकिंग साइट से

*****

अभिषेक बारहठ

पदनाम:- राजभाषा अधिकारी
संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक
मोबाइल नं. :- 9079217385
ई-मेल:- abhishekbarhath0507@gmail.com

आधुनिकता के आज के प्रतिस्पर्धा के युग में प्रत्येक कॉर्पोरेट संस्थान अपनी कार्यशैली में आमूलचूल परिवर्तन कर खुद को आज के परिदृश्य के अनुकूल बना रही है। आज कॉर्पोरेट संस्थानों के कार्यप्रणाली में सबसे आवश्यक रूप से संधारित करने की चर्चा होती है तो वह ईएसजी की होती है । ईएसजी का आशय संस्थान के पर्यावरणीय,सामाजिक और प्रशासनकीय प्रणाली से होता है जो की किसी भी संस्था के उत्थान और पतन का मुख्य घटक होता है।आइए सबसे पहले हम ईएसजी क्या है वो जानते है –

ESG का शॉर्ट फॉर्म है "Environmental, Social, and Governance" है। ईएसजी एक त्रिविषयी ढांचा है जिसे कंपनियों, निवेशकों और संगठनों के द्वारा उपयोग में लिया जाता है। यह तीन मुख्य क्षेत्रों के मानकों के आधार पर कंपनियों के सामरिक, पर्यावरणीय, सामाजिक और प्रशासनिक प्रदर्शन को मापता है और निर्धारित करता है। इन तीन मानकों का प्रयोग प्रशासनिक क्षेत्र में बढ़ रहा है और इसका महत्त्व वर्तमान और भविष्य में भी बढ़ने की संभावना है। ईएसजी के माध्यम से निगमों और सरकारी संस्थानों को एक नई दिशा मिलती है जिसमें सामाजिक और पर्यावरणीय मानकों का ध्यान रखना महत्त्वपूर्ण होता है। 'पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य' कॉर्पोरेट क्षेत्र के संचालन के लिए मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिए विवश करते हैं।

पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कॉर्पोरेट क्षेत्र प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है। सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कॉर्पोरेट क्षेत्र अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहाँ

वह संचालित होती है) के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है। शासन किसी कॉर्पोरेट क्षेत्र के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है।

वर्ष 2006 में 'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट' (United Nations Principles for Responsible Investment- UN-PRI) के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है। हम ईएसजी के तीनों घटकों को एक एक कर समझने का प्रयास करते है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में पर्यावरण

कॉर्पोरेट संस्थान में पर्यावरण का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है, जो वर्तमान और भविष्य के संदर्भ में एक महत्त्वपूर्ण घटक के रूप में उभरा है। आज के सामरिकता और प्रतिस्पर्धा के युग में पर्यावरण रूपी घटक कार्यस्थली की सुविधाओं, कार्यक्षमता कार्यकर्ता की उत्पादकता और कार्य संगठन की प्रभावशीलता पर सीधा प्रभाव डालता है। एक स्वस्थ और सुरक्षित कार्य माहौल, जहां कर्मचारी अच्छी तरह से काम कर सकते हैं, उन्नति कर सकते हैं और बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं, प्रतिस्पर्धा में एक वैश्विक अग्रणी भूमिका निभाता है। कॉर्पोरेट संस्थान का भौतिक आस-पास का माहौल, जिसमें कार्यालय का नक्शा, डिजाइन और बुनियादी ढांचा शामिल होता है, कर्मचारी की उत्पादकता, रचनात्मकता और सामान्य कल्याण पर प्रभाव डालता है। एक सुविधाजनक और अच्छी डिजाइन की कार्यस्थली कर्मचारी की संतुष्टि को बढ़ावा देती है और सकारात्मक कार्यालय वातावरण के लिए योगदान प्रदान करती है। एक स्वस्थ वातावरण कार्य-जीवन संतुलन न केवल कर्मचारियों के लिए बल्कि संगठन के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। समर्थक माहौल जो लचीले कार्य समय, दूरस्थ कार्य विकल्पों को प्रोत्साहित करता है और कर्मचारी कल्याण को बढ़ावा देता है, तनाव और जलन को कम करने में मदद करता है, जिससे उत्पादकता और नौकरी संतुष्टि में वृद्धि होती है तथा साथ ही कॉर्पोरेट संस्थान के भीतर के माहौल को उसकी संगठनात्मक संस्कृति द्वारा ही आकार दिया जाता है, जिसमें साझा मूल्य, विश्वास और नियम शामिल होते हैं। एक सकारात्मक और समावेशी संस्कृति सहयोग, सहकर्मीता और नवाचार को बढ़ावा देती है, जिससे कर्मचारी की भागीदारी और संगठन की आत्मरक्षा को भी बढ़ावा मिलता है। भारत की संस्कृति विविधताओं से परिपूर्ण है तथा विविधता को स्वीकार करना और समावेशी माहौल बनाना कॉर्पोरेट संस्थान की सफलता के लिए महत्त्वपूर्ण

है। विविधता वाला कर्मचारी समान्यतः अलग-अलग दृष्टिकोण, विचार और अनुभव लाता है, जो नवाचार और बेहतर निर्णय लेने के लिए मदद करता है। समावेशी माहौल यह सुनिश्चित करता है कि सभी कर्मचारियों को महत्त्व दिया जाता है, सम्मानित किया जाता है जिससे विकास और उन्नति के लिए समान अवसर मिलते हैं। अतः समग्रता से कहें तो, कॉर्पोरेट संस्थान में पर्यावरण की भूमिका कर्मचारी की धारणाओं, आचरणों और संगठन की सफलता पर गहरा प्रभाव डालती है। सकारात्मक और सहायक माहौल बनाकर कंपनियों को कर्मचारी की भागीदारी, संतुष्टि और अंततः व्यापार की वृद्धि को प्रोत्साहित करने में मदद मिलती है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में सामाजिकता

कॉर्पोरेट क्षेत्र में सामाजिकता का महत्त्व बढ़ता जा रहा है। यह एक सामाजिक और नैतिक दायित्व का प्रतीक है जिसका मतलब है कि कंपनियों को अपने सामाजिक प्रभाव को समझने और उसे सुधारने की ज़िम्मेदारी होती है। सामाजिकता के महत्त्व का कारण है कि आधुनिक समाज में लोगों की उम्मीदें और आशाएं बढ़ रही हैं। लोग अब केवल उत्पादों और सेवाओं की गुणवत्ता के साथ ही नहीं, बल्क कॉर्पोरेट क्षेत्र के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव के बारे में भी जागरूक हो रहे हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र में सामाजिकता का महत्त्व एक नई पारदिग्म में सामरिक रूप से बदल रहा है। कॉर्पोरेट क्षेत्र अब अपने कारोबारी गतिविधियों के प्रभाव को मापने के साथ-साथ समाजिक मुद्दों पर भी ध्यान देने के लिए अपने कारोबारी मॉडल को संशोधित कर रही हैं। सामाजिकता का महत्त्व बढ़ने का एक और कारण है कि सरकारें अब निगमों के सामाजिक प्रभाव को नियंत्रित करने और उन्हें ज़िम्मेदार बनाने के लिए सख्त नीतियों को लागू कर रही हैं। उदाहरण के लिए, कुछ देशों में निगमों को सामाजिक और पर्यावरणीय मानकों के पालन के लिए नियमित रूप से जांच के लिए आवश्यक रिपोर्ट प्रस्तुत करना भी प्रारम्भ कर दिया है। सामाजिकता का महत्त्व बढ़ने के साथ, कंपनियों को अपने सामाजिक प्रभाव को सुधारने के लिए कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इनमें से कुछ हैं: विभिन्न समाजिक मुद्दों की पहचानना, सामाजिक नीतियों का निर्माण और पालन करना, सामाजिक परिणामों का मूल्यांकन करना, और संबंधित स्तरों पर सहयोग और साझेदारी विकसित करना। सामाजिकता का महत्त्व व्यापारी सफलता के लिए भी बढ़ता है। एक कॉर्पोरेट क्षेत्र जो अपने सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव को संभालती है, वह अपने उत्पादों और सेवाओं के लिए अधिक ग्राहकों को आकर्षित करती है, जो उसकी व्यापारी सफलता को बढ़ाता है। साथ ही,

भागीदारों, कर्मचारियों और संबंधित पार्टियों के बीच भी एक मजबूत और विश्वसनीय ब्रांड का निर्माण करती है।

सारांश के रूप में, कॉर्पोरेट क्षेत्र में सामाजिकता का महत्त्व बढ़ रहा है क्योंकि आधुनिक समाज में लोगों की जागरूकता बढ़ रही है और वे कंपनियों से उच्चतर मानकों की मांग कर रहे हैं। कंपनियों को अपने सामाजिक प्रभाव को समझने और सुधारने के लिए अपने कारोबारी मॉडल को संशोधित कर उसे सामाजिकता के अनुरूप करने की ज़रूरत है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में गवर्नेंस

कॉर्पोरेट क्षेत्र में गवर्नेंस (शासन) का महत्त्व सबसे अधिक होता है। संस्थान का संचालन किस तरह से होता है ओर वह किस प्रकार से कार्य करती है यह पूरी तरह से उसके गवर्नेंस पर निर्भर करता है तथा इस एक घटक पर ईएसजी के बाकी दोनों घटक भी निर्भर करते है। कॉर्पोरेट क्षेत्र के बोर्ड और प्रबंधन को संचालित करने के लिए संरचित नियमों, नीतियों और प्रक्रियाओं का सुनिश्चित करना। गवर्नेंस की महत्त्वपूर्ण भूमिका है कि यह सुनिश्चित करता है कि कॉर्पोरेट क्षेत्र उच्चतम नैतिक मानकों, न्यायिक मानकों और नियमों का पालन करती हो। यह संरचनात्मक प्रक्रियाओं और नीतियों के माध्यम से कॉर्पोरेट क्षेत्र के बोर्ड और प्रबंधन को संचालित करने में मदद करता है और बोर्ड के सदस्यों के लिए जिम्मेदारियों का निर्धारण करता है। क्योंकि यह कॉर्पोरेट क्षेत्र के सभी हिस्सेदारों, स्टेकहोल्डर्स, निगमित निकायों, और सार्वजनिक के साथ न्यायपूर्ण, ईमानदार और पारदर्शी व्यवहार का पालन करने की आवश्यकता को प्रोत्साहित करता है।

यह निवेशकों को विश्वास दिलाता है कि उनके पैसे का उचित उपयोग हो रहा है और कॉर्पोरेट क्षेत्र के मार्गदर्शन में न्यायपूर्णता और निष्पक्षता है। यह कॉर्पोरेट क्षेत्र के द्वारा अच्छे नियंत्रण और प्रबंधन को सुनिश्चित करता है। यह सुनिश्चित करता है कि सभी नियम, नीतियाँ और प्रक्रियाएं समान रूप से और संवेदनशीलता के साथ लागू हों और कॉर्पोरेट क्षेत्र के सुचारू रूप से कारोबारी गतिविधियों को प्रभावी ढंग से संचालित करता है। यह कॉर्पोरेट क्षेत्र को सार्वजनिक विश्वास प्राप्त करने में मदद करता है। अच्छी गवर्नेंस और पारदर्शिता के माध्यम से, कॉर्पोरेट क्षेत्र सार्वजनिक के सामरिक दबाव के समायोजन में सफल होती है और उसकी स्थिरता और विश्वासयोग्यता को बढ़ाती है। अतः कॉर्पोरेट क्षेत्र में गवर्नेंस का महत्त्व बहुत अधिक होता है क्योंकि यह कॉर्पोरेट क्षेत्र

के नैतिक मानकों, न्यायिक मानकों और नियमों का पालन करने में मदद करता है, और सभी हिस्सेदारों, स्टेकहोल्डर्स, निगमित निकायों, और सार्वजनिक के साथ न्यायपूर्ण, ईमानदार और पारदर्शी व्यवहार का पालन करने की आवश्यकता को प्रोत्साहित करता है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का भविष्य-

ईएसजी का भविष्य कॉर्पोरेट क्षेत्र में बहुत उज्ज्वल है। विश्वासार्ह और जिम्मेदार कंपनियाँ ईएसजी के मानकों का पालन करने के लिए अधिक से अधिक प्रयास कर रही हैं। निवेशकों, ग्राहकों और सार्वजनिक द्वारा बढ़ती मांग और उच्चतम नैतिक मानकों की आवश्यकता के कारण, ईएसजी की महत्त्वपूर्णता और लोकप्रियता बढ़ रही है। इसलिए, ईएसजी के मानकों का भविष्य कॉर्पोरेट क्षेत्र में बहुत अच्छा है और यह उद्यमों को सामरिक और दुरुस्त भविष्य की दिशा में आगे बढ़ाने में मदद करेगा ।भविष्य के संदर्भ के लिए ईएसजी के बढ़ते हुवे प्रभाव के दृष्टिगत रखकर नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिए जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए ताकि उनका सही से किरयानवयन को सुनिश्चित किया जा सके। ईएसजी के आंकलन में पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके ताकि इसका लाभ वास्तविक रूप में पाहुच सके। मानकीकृत ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएँ समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी तथा साथ ही निवेशकों और कंपनियों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिए, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए। कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान

में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है। ईएसजी के सिद्धांत को अधिक बेहतर कर भविष्य में पर्यावरण मूलक एक सामाजिक समरूपता के कॉर्पोरेट क्षेत्र की स्थापना कर उसके प्रशासन को कर्मचारियों के हितों एवं लक्ष्यानुरूप कार्यप्रणाली को विकसित करने में बढ़ावा देगा। आज का युग सिद्धांतों एवं मानव अधिकारों के युग की तरफ अग्रसर हो रहा है जिसमे ईएसजी प्रणाली किसी भी कॉर्पोरेट क्षेत्र के लिए उसके विकास की आधारभूत कड़ी साबित हो रही है। ईएसजी के बढ़ते प्रभाव को सुचारु रूप से लागू करने में कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है जिसमे सीमा-पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी ईएसजी सिद्धांतों, ढाँचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं। ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं। हालाँकि मध्यम और लघु कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और/या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिए सीमित किया जा सकता है।

अतः आज के समय में कॉर्पोरेट क्षेत्र जिस तेज गति बढ़ रहा है उसमे उनके समाज के प्रति देश के प्रति और कर्मचारियों के प्रति कर्तव्यों को ईएसजी के माध्यम से संधारित की जा सकता है। ईएसजी को बढ़ावा देने से संस्थान के समाजिकता की मूल भावना भावना में भी विकास होता है। आज के समय में हमे प्रत्येक के अधिकारों को संरक्षित करने की आवश्यकता है। ईएसजी वर्तमान में बहुत से संस्थानों के कार्य संस्कृति का हिस्सा बन चुकी है तथा वर्तमान में यह कॉर्पोरेट क्षेत्र के उत्थान एवं समाज और राष्ट्र के प्रति उनके दायित्व को भी दृष्टिगत कर रही है। भविष्य में ईएसजी का रूप और व्यापक होने वाला है अतः सरकार को ईएसजी की अनिवार्यता को लागू कर इसके सुचारु कियान्वयन की ओर व्यापक रूप से कदम उठाना चाहिए ताकि ईएसजी को सभी कॉर्पोरेट क्षेत्रों के मूल भावना और कर्त्तव्यगत भावना में सम्मिलित कर अपने क्षेत्र,अपने कर्मचारी, अपने निवेशकों एकमा अपने लाभों को और अधिक संतुष्टि प्रदान कर सके।

*****

लक्ष्मी मीना

पदनाम:- प्रबंधक (राजभाषा)
संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक
मोबाइल नं. :- 9205748660
ई-मेल:- coahmraj@pnb.co.in

पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) कारकों की अवधारणा ने हाल के वर्षों में कॉर्पोरेट क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण लोकप्रियता हासिल की है। ईएसजी मानदंडों के एक समूह का प्रतिनिधित्व करता है जिसका उपयोग निवेशक, उपभोक्ता और हितधारक समाज और पर्यावरण पर कंपनी के प्रभाव का मूल्यांकन करने के लिए करते हैं। यह महज वित्तीय प्रदर्शन से आगे बढ़कर स्थायी प्रथाओं, नैतिक आचरण और जिम्मेदार शासन के प्रति कंपनी की प्रतिबद्धता पर जोर देता है। यह निबंध वर्तमान कॉर्पोरेट परिदृश्य में ईएसजी के महत्त्व की पड़ताल करता है और भविष्य के लिए इसके संभावित प्रभावों पर प्रकाश डालता है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का अर्थ:-

1.1 पर्यावरणीय कारक: जलवायु परिवर्तन के गंभीर मुद्दे ने व्यवसाय परिचालन में पर्यावरण-अनुकूल प्रथाओं को अपनाने की आवश्यकता पैदा कर दी है। कंपनियों को उनके कार्बन पदचिह्न, जल उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन और संसाधन संरक्षण के लिए तेजी से जिम्मेदार ठहराया जा रहा है। पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ प्रथाओं को अपनाने से न केवल प्रतिष्ठित जोखिम कम होते हैं बल्कि लागत-दक्षता, परिचालन लचीलापन और पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों और उपभोक्ताओं के लिए भी आकर्षण बढ़ता है।

1.2 सामाजिक कारक: समुदायों, कर्मचारियों और आपूर्ति श्रृंखला हितधारकों पर उनके सामाजिक प्रभाव के लिए निगमों की जांच बढ़ रही है। सकारात्मक कॉर्पोरेट प्रतिष्ठा को बढ़ावा देने और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त बनाए रखने के लिए निष्पक्ष श्रम प्रथाओं, कर्मचारी विविधता और समावेशन, कर्मचारी कल्याण,

मानवाधिकार और सामुदायिक जुड़ाव पर जोर देना महत्त्वपूर्ण है। हितधारकों के साथ नैतिक व्यवहार, कर्मचारी उत्पादकता, ग्राहक निष्ठा और ब्रांड मूल्य को बढ़ाता है।

1.3 शासन कारक: प्रभावी शासन यह सुनिश्चित करता है कि कंपनियों को पारदर्शी, नैतिक रूप से और सभी हितधारकों के सर्वोत्तम हित में प्रबंधित किया जाता है। शेयरधारकों और निवेशकों के बीच विश्वास कायम करने के लिए स्वतंत्र बोर्ड, उचित कार्यकारी मुआवजा और मजबूत जोखिम प्रबंधन महत्त्वपूर्ण हैं। सुदृढ़ प्रशासन प्रथाएँ न केवल कॉर्पोरेट घोटालों को रोकती हैं बल्कि दीर्घकालिक वित्तीय प्रदर्शन में भी सुधार करती हैं और जिम्मेदार निवेशकों को आकर्षित करती हैं।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का वर्तमान प्रासंगिकता/ महत्त्व:

1. बढ़ी हुई कॉर्पोरेट प्रतिष्ठा:

ईएसजी सिद्धांतों को अपनाने से कंपनियों को हितधारकों के बीच सकारात्मक प्रतिष्ठा स्थापित करने की अनुमति मिलती है। उपभोक्ता, निवेशक और कर्मचारी तेजी से उन कंपनियों से जुड़ना पसंद कर रहे हैं जो पर्यावरणीय चेतना, निष्पक्ष श्रम प्रथाओं और नैतिक शासन का प्रदर्शन करती हैं। एक अनुकूल प्रतिष्ठा ब्रांड की वफादारी और विश्वास को बढ़ाती है, जो दीर्घकालिक सफलता में योगदान करती है।

2. जोखिमों का शमन:

ईएसजी विचारों को अपनी रणनीतियों में एकीकृत करके, कंपनियां पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों से संबंधित संभावित जोखिमों की पहचान और समाधान कर सकती हैं। सक्रिय जोखिम प्रबंधन न केवल वित्तीय नुकसान से सुरक्षा प्रदान करता है बल्कि कंपनियों को ईएसजी से संबंधित विवादों के कारण होने वाली प्रतिष्ठा क्षति से भी बचाता है।

3. निवेश का आकर्षण:

संस्थागत और व्यक्तिगत निवेशक अपने निवेश निर्णयों में ईएसजी कारकों को तेजी से शामिल कर रहे हैं। मजबूत ईएसजी प्रदर्शन वाली कंपनियां अधिक टिकाऊ निवेश आकर्षित करती हैं जिससे पूंजी तक उनकी पहुंच बढ़ती है और उनके समग्र वित्तीय स्वास्थ्य में सुधार होता है।

4. कर्मचारी जुड़ाव और प्रतिधारण:

ईएसजी पहल को अपनाने से कर्मचारी संतुष्टि और प्रतिधारण दर में वृद्धि हो सकती है। कर्मचारियों के उन कंपनियों के प्रति प्रतिबद्ध रहने की अधिक संभावना है जो स्थिरता, सामाजिक कल्याण और नैतिक शासन के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करते हैं।

5. बदलते नियामक परिदृश्य का अनुकूलन:

दुनिया भर में सरकारें स्थायी प्रथाओं और जिम्मेदार कॉर्पोरेट व्यवहार पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही हैं। मजबूत ईएसजी ढांचे वाली कंपनियां बदलते नियमों को अपनाने और संभावित दंड या कानूनी चुनौतियों से बचने के लिए बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं।

वित्तीय प्रदर्शन पर ईएसजी का प्रभाव:

पहले की धारणाओं के विपरीत, ईएसजी विचारों को प्राथमिकता देने वाली कंपनियों ने प्रतिस्पर्धी वित्तीय प्रदर्शन का प्रदर्शन किया है। कई अध्ययनों से पता चला है कि मजबूत ईएसजी प्रोफाइल वाले व्यवसाय लंबे समय में अपने समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन करते हैं। निवेशक तेजी से ईएसजी कारकों को अपनी निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल कर रहे हैं, यह पहचानते हुए कि स्थिरता और लाभप्रदता साथ-साथ चल सकती है। जैसे-जैसे यह जागरूकता बढ़ती है, जो कंपनियां ईएसजी मुद्दों को संबोधित करने में विफल रहती हैं, उन्हें पूंजी तक पहुंच खोने, उच्च उधार लागत का सामना करने और प्रतिष्ठा क्षति का सामना करने का जोखिम उठाना पड़ता है।

जिम्मेदार निवेश का बढ़ता प्रभाव

जिम्मेदार निवेश का बढ़ता ज्वार कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी के महत्त्व का एक और संकेतक है। संस्थागत निवेशक, पेंशन फंड और व्यक्तिगत निवेशक तेजी से अपने निवेश विकल्पों को अपने मूल्यों के साथ जोड़ रहे हैं। वे ऐसी कंपनियों की तलाश करते हैं जो टिकाऊ प्रथाओं और जिम्मेदार व्यवहार के प्रति प्रतिबद्धता प्रदर्शित करती हों। परिणामस्वरूप, ईएसजी कारकों को प्राथमिकता देने वाले व्यवसाय पूंजी के बड़े पूल तक पहुंच प्राप्त करते हैं और निवेश आकर्षित करने में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करते हैं।

विनियामक और कानूनी परिदृश्य

दुनिया भर की सरकारें और नियामक निकाय कॉर्पोरेट प्रथाओं में ईएसजी के महत्त्व को पहचान रहे हैं। वे ऐसे कानूनों और विनियमों को पेश और लागू कर रहे हैं जो व्यवसायों

को अधिक जिम्मेदार और जवाबदेह बनने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इन विनियमों का अनुपालन करने में विफलता के कारण जुर्माना, कानूनी चुनौतियाँ और प्रतिष्ठा को नुकसान हो सकता है। ईएसजी विचारों को अपने संचालन में एकीकृत करके, कंपनियां विकसित नियामक आवश्यकताओं से आगे रह सकती हैं और स्थिरता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता प्रदर्शित कर सकती हैं।

ईएसजी और प्रतिष्ठा प्रबंधन

आज के डिजिटल युग में, कॉर्पोरेट प्रतिष्ठा नाजुक और महत्त्वपूर्ण दोनों है। पर्यावरण या सामाजिक मुद्दों के बारे में नकारात्मक प्रचार सोशल मीडिया के माध्यम से तेजी से फैल सकता है और रातों-रात किसी कंपनी के ब्रांड मूल्य पर असर डाल सकता है। ईएसजी सिद्धांतों को अपनाने और सामाजिक और पर्यावरणीय चुनौतियों को सक्रिय रूप से निस्तारित करने से व्यवसायों को सकारात्मक प्रतिष्ठा बनाने और ग्राहकों, कर्मचारियों और अन्य हितधारकों के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने की अनुमति मिलती है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी के भविष्य के निहितार्थ:

1. स्थिरता की ओर ड्राइव:

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन, संसाधनों की कमी और सामाजिक असमानता जैसी वैश्विक चुनौतियाँ अधिक गंभीर होती जा रही हैं, ईएसजी स्थायी प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। कंपनियां तेजी से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाएंगी, कार्बन फुटप्रिंट कम करेंगी और सर्कुलर इकोनॉमी मॉडल लागू करेंगी।

2. सामाजिक प्रभाव और समावेशिता:

ईएसजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में सामाजिक जिम्मेदारी और समावेशिता को बढ़ावा देना जारी रखेगा। कंपनियां विविधता और समानता को प्राथमिकता देंगी, कर्मचारियों और हितधारकों के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करेंगी और सामुदायिक विकास में सक्रिय रूप से शामिल होंगी।

3. हितधारक-केंद्रित दृष्टिकोण:

ईएसजी का भविष्य हितधारक-केंद्रित दृष्टिकोण पर जोर देगा। कंपनियां रणनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में उनके दृष्टिकोण और जरूरतों को शामिल करते हुए निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और समुदायों के साथ जुड़ेंगी।

4. तकनीकी प्रगति:

तकनीकी नवाचार ईएसजी प्रथाओं को बढ़ाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), इंटरनेट ऑफ थिंग्स (आईओटी), और बिग डेटा एनालिटिक्स कंपनियों को उनके पर्यावरणीय प्रभाव, आपूर्ति श्रृंखला और शासन संरचनाओं की निगरानी और अनुकूलन करने में मदद करेंगे।

5. रिपोर्टिंग और पारदर्शिता:

जैसे-जैसे ईएसजी कॉर्पोरेट प्रदर्शन मूल्यांकन का एक अधिक अभिन्न अंग बन जाता है, मानकीकृत रिपोर्टिंग प्रणालियां सामने आएंगी। कंपनियों से अपेक्षा की जाएगी कि वे अपने ईएसजी मेट्रिक्स का खुलासा करें, जिससे निवेशकों और हितधारकों को सूचित निर्णय लेने में मदद मिलेगी।

निष्कर्ष:

ईएसजी वर्तमान युग में कॉर्पोरेट सफलता के एक महत्त्वपूर्ण निर्धारक के रूप में एक विशिष्ट अवधारणा से विकसित हुआ है। स्थायी प्रथाओं को अपनाना, सामाजिक मुद्दों को संबोधित करना और नैतिक शासन को बढ़ावा देना अब व्यवसायों के फलने-फूलने के लिए वैकल्पिक नहीं बल्कि आवश्यक है। ईएसजी को कॉर्पोरेट प्रथाओं में एकीकृत करने से न केवल वित्तीय प्रदर्शन बढ़ता है बल्कि निवेशकों, ग्राहकों और समुदायों के साथ मजबूत संबंधों को भी बढ़ावा मिलता है। जैसे-जैसे नैतिक और टिकाऊ प्रथाओं की मांग बढ़ती जा रही है, ईएसजी आने वाले वर्षों में जिम्मेदार और सफल व्यवसायों के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रेरक शक्ति बनी रहेगी।

भविष्य में, ईएसजी कॉर्पोरेट क्षेत्र के भविष्य को आकार देना जारी रखेगा, कंपनियों को टिकाऊ, जिम्मेदार और हितधारक-केंद्रित प्रथाओं की ओर ले जाएगा। ईएसजी को अपनाना न केवल एक जिम्मेदार कार्य है, बल्कि व्यवसायों और समग्र रूप से समाज के लिए एक समृद्ध और टिकाऊ भविष्य सुरक्षित करने की कुंजी भी है।

*****

गौतम कुमार

पदनाम:- मुख्य प्रबंधक एवं संकाय
संस्था का नाम:- बैंक ऑफ़ बड़ौदा
मोबाइल नं. :- 7574820085
ई-मेल:- ba.baroda@bankofbaroda.co.in

भूमिका

अठारहवीं-उन्नीसवीं सदी में विश्व ने औद्योगिक क्रांति ने अंधाधुध विकास की राह पकड़ी। स्टीम इंजन से लेकर विभिन्न वाहनों एवं कारखानों ने हरी भरी दुनिया को एक वृहद वृहद उत्पादन स्थल (मैनुफेक्चुरिंग प्लांट) में परिवर्तित कर दिया।

कोयला, तेल, और प्राकृतिक गैस, ऊर्जा के प्रमुख साधन बन गए। इन जीवाश्म ईंधनों में कार्बन मुख्य तत्व है और जब बिजली या ऊर्जा उत्पादन, ऊर्जी प्रेषण, व गर्मी उत्पन्न करने के लिए इनमें से किसी भी तरह के जीवाश्म ईंधन को जलाया जाता है, तो उनसे कार्बन डाइ ऑक्साइड उत्पन्न होती है। साथ ही विश्व की जनसंख्या भी बेतहाशा रूप से बढ़ने लगी। ओज़ोन परत का क्षरण, धरती के तापमान में वृद्धि आदि इसके दुष्प्रभाव देखने को मिले।

जलवायु परिवर्तन को लेकर बढ़ती चिंताओं के साथ, विकास के सतत् मॉडल (और इसलिए, निवेश) की ओर आगे बढ़ने के माध्यम से इसके प्रति अनुकूलित होना और इसके परिणामों का शमन करना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख चिंताओं के रूप में उभरा है।

परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर **'पर्यावरण, सामाजिक और शासन** की मांग ने उल्लेखनीय स्थान प्राप्त किया है।

ईएसजी की परिभाषा

ईएसजी ये तीन शब्दों को मिलाकर बनाया गया है. ई यानी एनवायरमेंट या कहें पर्यावरण, एस यानी सोशल या कहें सामाजिक और जी यानी गवर्नेंस यानी शासन।

ईएसजी का विचार अब निवेश के लिए भी रखा जाता है. निवेश करते समय कई लोग ईएसजी पर ध्यान देते हैं और अब कंपनियों पर यह आदेश सेबी द्वारा लागू है कि वे इस बारे में सटीक जानकारी उपलब्ध कराएं। एक बात और ईएसजी इन्वेस्टिंग इंडिपेंडेंट रेटिंग्स पर निर्भर करती है. इन रेटिंग्स से यह जानकारी मिलती है कि किसी कंपनी का व्यवहार पर्यावरण, समाज और शासन के लिए कितना अनुकूल है।

ईएसजी का महत्त्व

पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व (Environmental Responsibility):

- **हर उत्पादन में** पर्यावरण को अल्पाधिक हानि अवश्य पहुँचती है। बड़े-बड़े कारखानों में प्रयुक्त होने वाला अधिकतर संसाधन प्रकृति से ही आता है चाहे वह पानी हो या कच्चा माल।
- उत्पादन की प्रक्रिया में वातावरण में कार्बन, विषैला पानी और तमाम तरह के केमिकल घुलते हैं, फैक्ट्रियों और प्लांट की वजह से ग्लोबल वॉर्मिंग का खतरा भी रहता है।
- धरती का तापमान भी हर साल बढ़ रहा है। वन-प्रदेश सिकुड़ रहे हैं। ऐसे में कंपनियों की ये जिम्मेदारी होती है कि वो ऐसे कदम उठाएं जिससे पर्यावरण को होने वाला नुकसान कम किया जा सके।
- **पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व के लिए सरकार भी काफी सचेत है। साथ ही सेबी ने भी इस दिशा में वित्तीय घोषणाओं के साथ इसे भी महत्त्व देने को कहा है।**

सामाजिक उत्तरदायित्व (Social Responsibility):

- *साइं इतना दीजिये जामे कुटुम समाय .... मैं भी ना भूखा न रहूँ साधू न भूखा जाए*
- अजीम प्रेमजी या वॉरेन बफे और बिल गेट्स विश्व के अग्रणी बिजनेस नेतृत्वकर्ता तो रहे ही हैं। साथ ही, वे एक और ख़ास गुण के लिए विश्व के तमाम कोर्पोरटेस के लिए उदाहरण है और वह है...समाज के प्रति अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास एवं उसका निर्वहन।
- जब बिजनेस कॉर्पोरेट संस्थाएं समाज से बहुत कुछ हासिल करती हैं तो उनकी जिम्मेदारी बनती है कि समाज को उसका कुछ अंश लौटाएं।
- यह एक तरह का परोपकार या दान से अधिक नैतिक ज़िम्मेदारी भी है।

- वैसे भी कंपनीज एक्ट 2013 के मुताबिक कंपनियों को अपने कुल मुनाफे का 2 प्रतिशत अंश सामाजिक गतिविधियों पर व्यय करना जरूरी है.

शासन (governance):

एकहि साधे सब सधे , सब साधे सब जाए / रहिमन मूलहि सींचबोय फूलहि फल अघाए –रहीम

- कॉर्पोरेट गवर्नेंस यह सुनिश्चित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि व्यवसाय नैतिक रूप से तथा उनके हितधारकों के सर्वोत्तम हित में चलाए जा रहे हैं या नहीं।
- वर्तमान समय में कॉर्पोरेट जगत में गवर्नेंस एक प्रमुख चर्चा का विषय बनकर उभरा है। बाज़ार या हितधारक किसी कंपनी के बारे में कोई राय बनाते हुए उसके कॉर्पोरेट गवर्नेंस को सबसे ऊपर रखते है।
- यह बुनियादी तत्व है जो कंपनी की दिशा और दशा दोनों ही तय करते हैं।

सरल शब्दों में कॉर्पोरेट गवर्नेंस को निम्नलिखित रूप से समझ सकते हैं-

कोई कंपनी अच्छी है या बुरी, काम करने लायक है या नहीं, ये इससे पता चलता है कि उस कंपनी का कॉर्पोरेट गवर्नेंस कैसा है. कोई भी कंपनी या संस्था उसके कर्मचारियों, सप्लायर्स, ग्राहकों से बनती है। उस कंपनी का मैनेजमेंट अपने स्टाफ, ग्राहकों के साथ कैसा बर्ताव करता है, उनके हितों को सुरक्षित रखने के लिए क्या कदम उठाता है, ये कॉर्पोरेट गवर्नेंस कहलाता है। किसी कंपनी का मैनेजमेंट सही से काम कर रहा है या नहीं, यानी किसी कंपनी का कॉर्पोरेट गवर्नेंस ठीक है या नहीं इसके लिए सेबी के सख्त नियम भी है।

ईएसजी का वर्तमान एवं प्रमुख पहलें

- वर्ष 2006 में 'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है।
- कंपनियों के लिए ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई।

- वर्ष 2012 में सेबी ने **'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट'** तैयार की जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं (जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया) के लिए उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में BRR फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया।
- वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' (BRSR) से प्रतिस्थापित कर दिया।
- यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू किया गया है।
- BRSR 'उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश' (NGBRCs) के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है।

ईएसजी का भविष्य

तरुवर फल नहीं खात है , सरवर पियहि न पान/कहि रहीम पर काज हित संपत्ति संचहि सुजान

मनुष्य का लक्ष्य केवल मुनाफा नहीं होना चाहिए। उसे मुनाफे के साथ समाज , पर्यावरण आदि के बारे में भी सोचना चाहिए। भविष्य में ग्राहक जैसे-जैसे जागरूक होंगे, वे वैसे ही उत्पाद का इस्तेमाल करना पसंद करेंगे जो ईएसजी के मानकों पर खरे उतरते हों।

भविष्य में वित्तीय एवं बैंकिंग सेवाओं पर भी ये खूब असर डालेगी।

हम जानते हैं कि निवेश संबंधी निर्णय वित्तीय मानकों द्वारा संचालित होते हैं। किन्तु अब निवेशकों का ध्यान वित्त-केंद्रित निवेश मॉडल से अधिक सामाजिक एवं पर्यावरणीय रूप से उत्तरदायी दीर्घकालिक निवेश प्रवृत्तियों की ओर आगे बढ़ रहा है, जो एक शुभ संकेत है। पिछले कुछ वर्षों में 'ईएसजी फंड' की आस्ति का आकार लगभग पाँच गुना बढ़कर 12,300 करोड़ रुपए का हो गया है।

'पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य' कंपनी के परिचालन के लिए मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल

उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिए बाध्य करते हैं।

- पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है।
- सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहाँ वह संचालित होती है) के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है।
- शासन किसी कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है।
- यह निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिए एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जहाँ वित्तीय रिटर्न में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं रह गया है।

ईएसजी फंड एवं भविष्य की रक्षा

- ईएसजी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है। इसका निवेश सतत् निवेश या सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश के समानार्थी रूप से उपयोग किया जाता है।
- इस प्रकार, ईएसजी फंड और अन्य फंडों के बीच प्रमुख अंतर 'विवेक' का है। ईएसजी फंड पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी-अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- इस फंड को **भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड** (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

ईएसजी द्वारा भविष्य में मूल्य सृजन

- **आय में वृद्धि:** कंपनियों को अपने कार्य प्रणाली को ईएसजी सिद्धांतों के साथ जोड़ने से कंपनियों को अंतराष्ट्रीय बाज़ार में भी पैठ बनाने में सहायता मिलेगी साथ ही, आय के नए रास्ते भी खुलेंगे, क्योंकि निर्यात आदि में भी ईएसजी एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने जा रहा है।
- **ब्रांडिंग एवं छवि सुधार :** ईएसजी-अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्राप्त होती है।

- धन जुटाने के लिए ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएँ शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।
- **दीर्घकालिक संवहनीयता:** ईएसजी ढाँचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक सतत् निवेश अवसरों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है।निम्न कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट में कमी, इष्टतम जल-उपयोग, उच्च रोज़गार सृजन और अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियाँ ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकेंगी।
- **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि:** कंपनी परिचालन के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।
- **लागत/जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

चुनौतियां

- सीमा-पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी, ईएसजी सिद्धांतों, ढाँचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं।
- ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं।
- हालाँकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और/या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिए सीमित किया जा सकता है।
- भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिए इन चिंताओं को दूर किया जाना चाहिए।

आगे की राह (निष्कर्ष)

भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों और निवेश उत्पादों में अधिक

रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही हैं।

उदाहरण के लिए, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन' प्राप्त करने के लिए अपने पूर्ण GHG उत्सर्जन को कम करने की योजना का खुलासा किया है।

गाजियाबाद नगर निगम भारत का पहला नगर निकाय बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिए पर्यावरणीय रूप से संवहनीय एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है।

- **नीति-निर्माताओं की भूमिका:** नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिए जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए।
  - ◊ ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके।
- **मानकीकृत ईएसजी मानदंड:** ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएँ समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी।
- **निवेशकों और कंपनियों की भूमिका:** निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिए, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को सरेखित करने के लिए भी तत्पर रहना चाहिए।

कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

*****

प्रकाश कुमार भालाला

पदनाम:- सीनियर फोरमैन
संस्था का नाम:- गेल (इंडिया) लिमिटेड, वड़ोदरा
मोबाइल नं. :- 8866312177
ई-मेल:- Bhalala.babubhai@gail.co.in

हमारे यहाँ एक कहावत बहुत प्रचलित है कि **"अच्छी नीतियाँ अच्छे व्यापार के नीचे छिपी होती हैं।" - पर्यावरण, सामाजिक और शासनिक अच्छी नीतियाँ, व्यापार की सफलता का एक महत्त्वपूर्ण अंश हैं।** किसी व्यवसाय की सफलता न केवल उसकी नवीन पेशकशों पर निर्भर करती है, बल्कि उसके संचालन के तौर-तरीके पर भी निर्भर करती है। चाहे आपका स्टार्टअप हो या फलता-फूलता व्यवसाय, यदि आप सफलता सुनिश्चित करने के लिए अपने वित्तीय पोर्टफोलियो में विविधता लाने के इच्छुक हैं, तो आपको निश्चित रूप से ई.एस.जी नामक ट्रेंडिंग, टिकाऊ निवेश रणनीति को अपनाना चाहिए। एक अध्ययन के अनुसार, उपभोक्ता उन कंपनियों की ओर आकर्षित होते हैं जो पर्यावरण, कर्मचारियों या समुदाय के साथ अच्छा व्यवहार करती हैं, जिसके साथ वे जुड़ना चाहतें हैं।

1. ई.एस.जी. क्या है ?

हमारे शास्त्रों मे कहा गया है कि **"संतुलित पर्यावरण, सशक्त समाज, और न्यायपूर्ण शासन - सततता की पथशाला।"** अर्थात पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ई.एस.जी.), किसी निवेश या व्यवसाय की स्थिरता और नैतिक प्रभाव का आकलन करने के लिए, उपयोग किए जाने वाले मानदंडों के एक सेट को संदर्भित करता है जो सकारात्मक परिवर्तन लाने और जोखिमों को कम करने की क्षमता के कारण हाल के वर्षों में ई.एस.जी. बहुत ही लाभदायक है।

ई.एस.जी. एक व्यापक व्यावसायिक स्थिरता प्रयासों में भी योगदान देता है जिसका उद्देश्य जिम्मेदार कॉर्पोरेट प्रबंधन और व्यावसायिक रणनीतियों के आधार पर कंपनियों को दीर्घकालिक सफलता स्थापित करना है।

2. ई.एस.जी. की नीतियां :

ई.एस.जी. की नीतियों का मतलब होता है - पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी अच्छी प्रथाओं को अपनाना और इन विभागों में सुधार करना। कुछ महत्त्वपूर्ण ई.एस.जी. नीतियां निम्नलिखित हैं :

पर्यावरणीय नीतियां :

- कार्बन आधारित उत्पादन की कमी में नियंत्रण।
- ऊर्जा की उपयोगिता को कम करना।
- स्थानीय पारितंत्रिकता और प्रकृति संरक्षण को बढ़ावा देना।
- पानी के संग्रह, उपयोग और उत्पादन की प्रबंधन में सुधार।

सामाजिक नीतियां :

- कर्मचारियों के लिए सुरक्षित और उत्कृष्ट कार्यस्थल सुनिश्चित करना।
- समावेशीकरण और विविधता को बढ़ावा देना।
- समुदायों के साथ साझेदारी तथा सहयोग करना।
- उच्च गुणवत्ता वाले उत्पादों और सेवाओं कि उपलब्धता।

शासनिक नीतियां:

- स्वतंत्र निदेशक मण्डल की स्थापना करना।
- पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करना।
- भ्रष्टाचार के खिलाफ नीतियाँ बनाना और उनका अनुपालन करना।

3. वर्तमान में ई.एस.जी. का महत्त्व :

"स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए, व्यापार को गहरे लक्ष्यों से ऊपर होना चाहिए।" - ई.एस.जी. के माध्यम से व्यापार, समृद्धि और सामाजिक उपयोग के साथ, शासनिक मानदंडों और नैतिकता का पालन, व्यापारिक संगठन की सफलता और दृढ़ता वर्तमान में महत्त्वपूर्ण तत्व बन गया है। वर्तमान में, कई कंपनियों ने पर्यावरणीय प्रभाव, सामाजिक जिम्मेदारियों और सुशासन प्रथाओं को संबोधित करने के महत्त्व को पहचाना है जिससे कंपनियों का संचालन मजबूत बना है, कार्बन उत्सर्जन कम हुआ है, सामाजिक समानता को बढ़ावा मिला है और पारदर्शिता एवं जवाबदेही बढ़ाने के कारण ई.एस.जी. रणनीतियां, प्रभावशाली साबित हुई हैं।

वर्तमान में, ई.एस.जी. का महत्त्व कई कारकों से बढ़ रहा है।

- पहला कारक है कि निवेशक ई.एस.जी. - केंद्रित हो रहे हैं। निवेशक अब उन कंपनियों में निवेश करना चाहते हैं जो ई.एस.जी. पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। इस वजह से, ई.एस.जी. - केंद्रित कंपनियों को निवेशकों से अधिक समर्थन मिल रहा है। उदाहरण के लिए, जो कंपनियां पर्यावरण नियमों की उपेक्षा करती हैं, उन्हें कानूनी और प्रतिष्ठित जोखिमों का सामना करना पड़ सकता है, जबकि खराब श्रम प्रथाओं वाली कंपनियों को परिचालन संबंधी व्यवधान और उनके ब्रांड को नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। ई.एस.जी. कारकों पर विचार करने से इन जोखिमों का अनुमान लगाने और उन्हें कम करने में मदद मिलती है जिससे दीर्घकालिक वित्तीय प्रदर्शन में वृद्धि होती है।
- दूसरा कारक यह है कि ग्राहक ई.एस.जी. - केंद्रित हो रहे हैं। ग्राहक अब उन कंपनियों के साथ व्यवसाय करना चाहते हैं जो ई.एस.जी. पहलुओं को ध्यान में रखते हैं। इस वजह से, ई.एस.जी. - केंद्रित कंपनियों को ग्राहकों से अधिक समर्थन मिल रहा है।
- तीसरा कारक यह है कि सरकारें ई.एस.जी. को बढ़ावा दे रही हैं क्योंकि वे मानते हैं कि ई.एस.जी. एक महत्त्वपूर्ण कारक है, जो एक कंपनी के दीर्घकालिक मूल्य कोनिर्धारित करता है। इस वजह से, ई.एस.जी. - केंद्रित कंपनियों को सरकारों से अधिक समर्थन मिल रहा है।

4. भविष्य में ई.एस.जी. का महत्त्व :

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ई.एस.जी. का भविष्य आशाजनक दिख रहा है। कई रुझानों और विकासों से संकेत मिलता है कि ई.एस.जी. का महत्त्व बढ़ता रहेगा :

4.1 स्थिरता:

- ई.एस.जी. व्यवसाय में स्थिरता को बढ़ावा देने, पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह पर्यावरण की रक्षा करने, कार्बन उत्सर्जन को कम करने संसाधनों के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन को संबोधित करने की आवश्यकता को पहचानता है।
- कंपनी के निर्णय लेने में स्थिरता के कारण अधिक टिकाऊ भविष्य का निर्माण हो सकता है।

4.2 जोखिम प्रबंधन:

- ई.एस.जी. विश्लेषण, पर्यावरणीय और सामाजिक कारकों से जुड़े विभिन्न जोखिमों की पहचान और प्रबंधन में मदद करता है।
- गैर-पुनर्चक्रण उत्पादों का एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करके, व्यवसाय और निवेश निर्णयों को प्रभावित कर सकता है।
- निवेशकों को ऐसी कंपनी चुनने में सक्षम बना सकता है, जो कम जोखिम प्रोफ़ाइल के साथ, एक स्थायी भविष्य नीति प्रदान करता हो।

4.3 हितधारक मूल्य:

- ई.एस.जी. - शेयरधारकों से परे, हितधारकों के महत्त्व को स्वीकार करता है।
- यह कर्मचारियों, ग्राहकों, समुदायों और अन्य प्रभावित पक्षों के हितों पर विचार करता है।
- सामाजिक मुद्दों को संबोधित करके, विविधता और समावेशन को बढ़ावा देकर और समुदायों के साथ जुड़कर, कंपनियां मजबूत रिश्ते बना सकती हैं, विश्वास को बढ़ावा दे सकती हैं।
- भविष्य में संचालन के लिए, अपने सामाजिक लाइसेंस को बढ़ा सकती हैं।]

4.4 निवेशक की मांग:

- निवेशकों के निर्णय में स्थिरता के कारण, ई.एस.जी. तेजी से बढ़ रहा है।
- कई संस्थागत निवेशक अपने मूल्यों के अनुरूप, अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए ई.एस.जी. - संरेखित निवेश को प्राथमिकता देते हैं।

- ई.एस.जी. अपनाने से अधिक निवेशक आकर्षित हो सकते हैं, अधिक पूंजी का निर्माण हो सकता है जिससे भविष्य में कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन को बढ़ावा मिल सकता है।

4.5 नियामक परिदृश्य:

- सरकार और नियामक निकाय, नियमों और रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के माध्यम से, ई.एस.जी. प्रथाओं पर अधिक जोर दे रहे हैं।
- इन विनियमों के अनुपालन से कंपनियों को कानूनी दंड, प्रतिष्ठा क्षति और व्यावसायिक व्यवधानों से बचने में मदद मिल सकती है।
- ई.एस.जी. उपायों को सक्रिय रूप से अपनाकर, कंपनियां भविष्य में, नियामक परिवर्तनों से आगे रह सकती हैं और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं का प्रदर्शन कर सकती है।

4.6 ब्रांड प्रतिष्ठा:

- ईएसजी प्रदर्शन, कंपनी की प्रतिष्ठा और ब्रांड मूल्य पर महत्त्वपूर्ण प्रभाव डालता है।
- उपभोक्ता और निवेशक तेजी से ऐसे व्यवसायों को पसंद कर रहे हैं जो पर्यावरणीय प्रबंधन, सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक शासन का प्रदर्शन करते हैं।
- ई.एस.जी. मुद्दों को सक्रिय रूप से अपनाकर कंपनियां अपनी ब्रांड प्रतिष्ठा बढ़ा सकती हैं, ग्राहकों को आकर्षित कर सकती हैं और भविष्य में खुद को प्रतिस्पर्धियों से अलग कर सकती हैं।

4.7 दीर्घकालिक लाभप्रदता:

- जो कंपनियां ई.एस.जी. विचारों को अपनी रणनीतियों में एकीकृत करती हैं, वे दीर्घकालिक लाभप्रदता और लचीलेपन के लिए बेहतर स्थिति में होती हैं।
- पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिम कम करके, कंपनियां परिचालन लागत को कम कर सकती हैं, संसाधन दक्षता में सुधार कर सकती हैं और भविष्य में बाजार के बदलाव की आशा कर सकती हैं।

4.8 वित्तीय प्रदर्शन:

- ई.एस.जी. तेजी से वित्तीय प्रदर्शन से जुड़ा हुआ है।
- अध्ययनों से पता चला है कि मजबूत ई.एस.जी. प्रोफाइल वाली कंपनियां लंबी अवधि में अपने समकक्षों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं।

- निवेशक बेहतर रिटर्न देने और पोर्टफोलियो जोखिमों को कम करने के लिए टिकाऊ निवेश की क्षमता को पहचान रहे हैं जिससे भविष्य में निवेश उत्पादों की मांग बढ़ सकती है।

4.9 हितधारक की अपेक्षाएँ:

- ग्राहक, कर्मचारी और समुदाय तेजी से, व्यवसायों में सामाजिक और पर्यावरणीय जिम्मेदारी प्रदर्शित करने की अपेक्षा कर रहे हैं।
- उपभोक्ता टिकाऊ प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध कंपनियों के उत्पादनों और सेवाओं को पसंद करते हैं और कर्मचारी अक्सर उद्देश्य-संचालित संगठनों की तलाश करते हैं।
- भविष्य में ब्रांड प्रतिष्ठा बनाए रखने और प्रतिभा को आकर्षित करने के लिए हितधारकों की अपेक्षाओं को पूरा करना महत्त्वपूर्ण है।

4.10 विनियमन और अनुपालन:

- दुनिया भर में सरकारें, सख्त पर्यावरण और सामाजिक नियमों को लागू कर रही हैं।
- ई.एस.जी. मानकों का पालन करने से कंपनियों को मौजूदा नियमों का अनुपालन करने और भविष्य की आवश्यकताओं का अनुमान लगाने में मदद मिलती है।
- गैर-अनुपालन से कानूनी और वित्तीय परिणाम, ब्रांड प्रतिष्ठा को नुकसान और यहां तक कि व्यावसायिक नुकसान भी हो सकते हैं।

4.11 दीर्घकालिक मूल्य निर्माण:

- ई.एस.जी. विचार, अल्पकालिक लाभ के बजाय दीर्घकालिक मूल्य निर्माण को बढ़ावा देते हैं।
- पर्यावरणीय और सामाजिक कारकों को शामिल करके, कंपनियां नए व्यावसायिक अवसरों की पहचान कर सकती हैं, परिचालन दक्षता बढ़ा सकती हैं, निवेशकों को आकर्षित कर सकती हैं।
- ई.एस.जी. संगठनों को, उनकी रणनीतियों को सतत विकास लक्ष्यों के साथ, संरेखित करने में मदद करता है, जिससे भविष्य में सतत विकास हो सकता है।

4.12 निवेशक जुड़ाव:

- संस्थागत निवेशक, जैसे पेंशन फंड और आस्ति प्रबंधक, तेजी से ई.एस.जी. कारकों को अपनी निवेश निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में एकीकृत कर रहे हैं।
- वे जोखिम का मूल्यांकन करने और तदनुसार पूंजी आवंटित करने के लिए कंपनियों के ई.एस.जी. प्रदर्शन का आकलन करते हैं।

- खराब ई.एस.जी. प्रदर्शन वाली कंपनियों को पूंजी तक पहुंचने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है और उधार लेने की लागत अधिक हो सकती है।

निष्कर्ष:

संक्षेप में, **"ई.एस.जी. की साझेदारी, सफलता की सुखद गारंटी है।"** - ई.एस.जी. के मानकों का पालन करने वाली साझेदारी से, व्यापारिक संगठन को सुरक्षा, निरंतरता और सफलता की एक मजबूत गारंटी मिलती है। ई.एस.जी. महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह स्थिरता को बढ़ावा देता है, जोखिमों का प्रबंधन करता है, हितधारक मूल्य को बढ़ाता है, निवेशकों की मांगों के साथ संरेखित करता है, नियमों का अनुपालन सुनिश्चित करता है, ब्रांड प्रतिष्ठा को बढ़ाता है, दीर्घकालिक लाभ को बढ़ावा देता है और एक कंपनी को प्रतिस्पर्धात्मक लाभ देता है। इस वजह से, वर्तमान और भविष्य में ई.एस.जी. - केंद्रित कंपनियों को, निवेशकों, ग्राहकों और सरकारों से अधिक समर्थन मिल रहा है। कुल मिलाकर, बढ़ते नियामक समर्थन, निवेशक प्रभाव, उपभोक्ता मांगों, हितधारक जुड़ाव और तकनीकी प्रगति के साथ, कॉर्पोरेट क्षेत्र में ई.एस.जी. का भविष्य आशाजनक लग रहा है। ई.एस.जी. प्रथाओं को अपनाने से न केवल अधिक टिकाऊ और न्यायसंगत विश्व के निर्माण में मदद मिलेगी, बल्कि दीर्घकालिक व्यापार और सफलता भी बढ़ेगी।

संदर्भ :

- https://www.drishtiias.com/hindi/daily-news-editorials/esg-importance-and-possibilities
- https://en.wikipedia.org/wiki/Environmental,_social,_and_corporate_governance
- https://www.adecesg.com/resources/faq/what-is-esg-investing/
- https://www.renovablesverdes.com/hi/que-es-esg/
- https://www.techtarget.com/whatis/feature/5-ESG-benefits-for-businesses
- https://regask.com/why-is-esg-more-important-now-than-ever-for-your-business/

*****

पंकज कुमार मिश्रा

पदनाम:- प्रबंधक (मानव संसाधन)
संस्था का नाम:- गुजरात रिफ़ाइनरी, वड़ोदरा
मोबाइल नं. :- 9408707153
ई-मेल:- PKMISHRA@INDIANOIL.IN

संदर्भ

परंपरागत रूप से निवेश संबंधी निर्णय मुख्य रूप से वित्तीय मानकों द्वारा संचालित होते हैं। हालांकि, जलवायु परिवर्तन को लेकर बढ़ती चिंताओं के साथ, विकास के सतत् मॉडल (और इसलिये, निवेश) की ओर आगे बढ़ने के माध्यम से इसके प्रति अनुकूलित होना और इसके परिणामों का शमन करना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख चिंताओं के रूप में उभरा है।

- ईएसजी तीन शब्दों से मिलकर बना है पर्यावरण यानी कि (एन्वायरमेंट), सामाजिक- (सोशल) और शासन अर्थात् गवर्नेंस।
- सतत्/संवहनीय निवेश पर निवेशकों का ध्यान बढ़ रहा है, जहां वे वित्त-केंद्रित निवेश मॉडल से अधिक सामाजिक एवं पर्यावरणीय रूप से उत्तरदायी दीर्घकालिक निवेश प्रवृत्तियों की ओर आगे बढ़ रहे हैं। परिणामस्वरूप वैश्विक स्तर पर निवेश की मांग ने उल्लेखनीय आकर्षण प्राप्त किया है।
- पिछले कुछ वर्षों में 'ईएसजी फंड' की परिसंपत्ति का आकार लगभग पांच गुना बढ़कर 12,300 करोड़ रुपए का हो गया है।

ईएसजी लक्ष्य क्या हैं?

पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य कंपनी के संचालन के लिए मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये प्रेरित करते हैं।

- पर्यावरणीय मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है।
- सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों (जहां वह संचालित होती है) के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है।

- शासन किसी कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है।

यह निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिये एक मीट्रिक के रूप में गैर-वित्तीय कारकों पर ध्यान केंद्रित करता है जहां वित्तीय रिटर्न में वृद्धि अब निवेशकों का एकमात्र उद्देश्य नहीं रह गया है। वर्ष 2006 में 'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इंवेस्टमेंट' के आरंभ के साथ ईएसजी ढांचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है।

ईएसजी फंड

ईएसजी फंड एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है। इसका निवेश सतत् निवेश या सामाजिक रूप से उत्तरदायी निवेश के समानार्थी के रूप से उपयोग किया जाता है। इस प्रकार, ईएसजी फंड और अन्य फंडों के बीच प्रमुख अंतर 'विवेक' का है।

ईएसजी फंड पर्यावरण अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है।

इस फंड को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

ईएसजी कॉरपोरेट्स और उनके हितधारकों के लिए मूल्य सृजन कैसे करता है?

1. **राजस्व में वृद्धि:** ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखण से कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशन रणनीति' के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है।
2. **सार्वजनिक छवि में सुधार:** ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुंच प्राप्त होती है।

   धन जुटाने के लिए ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुंच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहां कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएं शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है।
3. **दीर्घकालिक संवहनीयता:** ईएसजी ढांचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक सतत् निवेश अवसरों की तलाश करने के लिये प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है।

4. **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि:** कंपनी पारितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।
5. **लागत/जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

ईएसजी अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए कौन-सी पहलें की गई हैं?

- कंपनियों के लिए ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई।
- वर्ष 2012 में सेबी ने 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट' तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं (जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया) के लिए उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में बीआरआर फाइल करना अनिवार्य कर दिया।
- वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' से प्रतिस्थापित कर दिया।
- यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं (बाजार पूंजीकरण के अनुसार) पर अनिवार्य रूप से लागू होगा।
- बीआरएसआर 'उत्तरदायी व्यावसायिक आचरण पर राष्ट्रीय दिशानिर्देश' के नौ सिद्धांतों पर सूचीबद्ध संस्थाओं से उनके प्रदर्शन पर प्रकटीकरण की अपेक्षा रखता है।

भविष्य की राह

नीति-निर्माताओं की भूमिका: नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिए जहां लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे के दायरे में लाया जाए।

ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके।

मानकीकृत ईएसजी मानदंड: ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएं प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएं समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी।

निवेशकों और कंपनियों की भूमिका: निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिये, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिये भी तत्पर रहना चाहिए।

कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

अन्य चुनौतियों को संबोधित करने की आवश्यकता हैं?

- सीमा-पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी ईएसजी सिद्धांतों, ढांचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं।
- ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियां भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएं खड़ी कर सकती हैं।

- हालांकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और/या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिए सीमित किया जा सकता है।

- भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिये इन चिंताओं को दूर किया जाना चाहिए।

*****

दिनेश कुमार अग्रवाल

पदनाम:- अभियंता एस जी
संस्था का नाम:- सैक इसरो, अहमदाबाद
मोबाइल नं. :- 9427458508
ई-मेल:- dinesh@sac.isro.gov.in

1.0 प्रस्तावना

ईएसजी या पर्यावरण, सामाजिक और शासन कारक शब्द 2004 में ग्लोबल कॉम्पैक्ट द्वारा गढ़ा गया था। ईएसजी (ई का मतलब पर्यावरण, एस का मतलब समाज और जी का मतलब शासन है)। शब्द ईएसजी निवेश, ईएसजी रिपोर्टिंग, ईएसजी रेटिंग इत्यादि हैं - सभी समान कारकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं और उन्हें सीमित करते हैं। ईएसजी विश्लेषण को जिम्मेदार निवेश के उपाय के रूप में माना जाता है और यह किसी निवेश या संभावित निवेश के मूल्यांकन के लिए केवल वित्तीय कारकों का उपयोग करने की पारंपरिक पद्धति से परे है। हालांकि, व्यवसाय में सभी गैर-वित्तीय कारकों को शामिल करने की धारणा बहुत लंबे समय से रही है। यह स्थिरता और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी के संदर्भ में किसी कंपनी या इकाई के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले कारकों का एक समूह है। इन मानदंडों का उपयोग निवेशकों, विश्लेषकों और अन्य इच्छुक पार्टियों द्वारा पर्यावरण, समाज और इसकी शासन संरचना पर कंपनी के प्रभाव का आकलन करने के लिए किया जाता है। इस संदर्भ में हमने कॉर्पोरेट व्यवसायों के संबंध में भारत में ईएसजी चिंताओं की पहचान करने का प्रयास किया है। वैश्विक "हू केयर्स विन्स: कनेक्टिंग फाइनेंशियल मार्केट्स टू ए चेंजिंग वर्ल्ड" शीर्षक वाली एक रिपोर्ट में उभरते ईएसजी मुद्दों पर प्रकाश डाला गया (i) अनुसंधान और निवेश प्रक्रियाओं में पर्यावरण, सामाजिक और शासन कारकों को अधिक व्यवस्थित तरीके से एकीकृत करने के लिए वित्तीय संस्थानों को प्रतिबद्ध होना चाहिए। (ii) कंपनियों को पर्यावरण, सामाजिक और कॉर्पोरेट प्रशासन सिद्धांतों और नीतियों को लागू करके नेतृत्व की भूमिका निभानी चाहिए और अधिक सुसंगत और मानकीकृत प्रारूप में संबंधित प्रदर्शन पर जानकारी और रिपोर्ट प्रदान करनी चाहिए।

(iii) निवेशक स्पष्ट रूप से ऐसे अनुसंधान का अनुरोध करेंगे और उसे पुरस्कृत करेंगे जिसमें पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी पहलू शामिल हों और अच्छी तरह से प्रबंधित कंपनियों को पुरस्कृत किया जाए। तीन कारणों से ईएसजी मानकों को प्रत्ययी शुल्क की नियामक अवधारणाओं में शामिल करने के महत्त्व की पहचान करती है - पहला, ईएसजी निगमन एक निवेश मानदंड है; दूसरा, ईएसजी मुद्दे वित्तीय रूप से महत्त्वपूर्ण हैं; और तीसरा ईएसजी निगमन की आवश्यकता के लिए नीति और नियामक ढांचे बदल रहे हैं। संस्थागत निवेशक बैंकिंग में निवेश के लिए केवल शासन कारक को ही महत्त्वपूर्ण मानदंड मानते थे। संस्थागत निवेशकों ने ऐतिहासिक रूप से बैंकों में निवेश के लिए कॉर्पोरेट प्रशासन से संबंधित पहलुओं पर विचार किया है।

2.0 ईएसजी मानदंडों की परिभाषा

ईएसजी मानदंड को महत्त्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वे कंपनी के प्रदर्शन का अधिक व्यापक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी कारकों को ध्यान में रखकर, निवेशक और विश्लेषक किसी कंपनी से जुड़े जोखिमों और अवसरों का बेहतर आकलन कर सकते हैं। **पहला मानदंड**, पर्यावरण, यह मूल्यांकन करने पर केंद्रित है कि कोई कंपनी पर्यावरणीय चुनौतियों का समाधान और प्रबंधन कैसे करती है। ऊर्जा दक्षता, अपशिष्ट प्रबंधन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण और नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग जैसी चीज़ें शामिल हैं जो कंपनियां जिम्मेदार पर्यावरणीय प्रथाओं को अपनाती हैं, उन्हें इस मानदंड में बेहतर महत्त्व दिया जाता है। **दूसरा मानदंड,** सामाजिक, यह दर्शाता है कि कोई कंपनी कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं, स्थानीय समुदायों और अन्य सामाजिक अभिनेताओं के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है। इसमें निष्पक्ष श्रम प्रथाएं, व्यावसायिक स्वास्थ्य और सुरक्षा, सामुदायिक संबंध और सकारात्मक सामाजिक प्रभाव जैसे पहलू शामिल हैं। समानता, विविधता और सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देने वाली कंपनियों को अक्सर इस दृष्टिकोण से अधिक अनुकूल माना जाता है। शासन का, **तीसरा मानदंड** किसी कंपनी की संरचना और शासन तंत्र का मूल्यांकन करता है। इसमें निदेशक मंडल की संरचना, सूचना के प्रकटीकरण में पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन और आंतरिक नियंत्रण तंत्र जैसे पहलू शामिल हैं। मजबूत प्रशासन वाली कंपनियां, जहां जवाबदेही को प्रोत्साहित किया जाता है और हितों के टकराव से बचा जाता है, अक्सर अधिक भरोसेमंद और स्थिर मानी जाती हैं।

2.1 कॉर्पोरेट प्रशासन के लाभ: अच्छा कॉरपोरेट प्रशासन एक अच्छी कंपनी को महान कंपनी में बदल सकता है। किसी भी उद्योग में सुदृढ़ नेतृत्व अपने उद्योग को शिखर पर ला सकता है, जिसका मुख्य कारण उत्कृष्ट कॉर्पोरेट प्रशासन पद्धतियां होती हैं।

2.2 बेहतर प्रबंधन: कॉर्पोरेट प्रशासन के अच्छे सिद्धांतों के तहत काम का माहौल भी टीम वर्क, एकता, दक्षता और सफलता की प्रेरणा को बढ़ावा देता है। अच्छे कॉर्पोरेट प्रशासन वाली कंपनियां अपनी उत्कृष्ट प्रतिष्ठा और ब्रांड छवि के आधार पर निवेशकों और बाहरी फाइनेंसरों को आसानी से आकर्षित करने में सक्षम होती हैं। कॉर्पोरेट प्रशासन के स्तंभों में से एक स्तंभ पारदर्शिता है, जो हितधारकों के साथ प्रमुख आंतरिक जानकारी साझा करने की प्रथा है। इससे कंपनी / इकाई का अपने हितधारकों के साथ संबंध बेहतर होता है और कंपनी और बड़े पैमाने पर समाज के बीच विश्वास का बीज बोती है। कार्यस्थल में बनाए गए नियम कर्मचारियों को उनके सामने आने वाली हर स्थिति में नैतिक रूप से जागरूक रहने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जिससे कर्मचारियों के बीच धोखाधड़ी और संघर्ष की संभावना समाप्त हो जाती है।

ईएसजी और सीएसआर के बीच अंतर : ईएसजी निवेश सीएसआर और प्रभाव निवेश से भिन्न है। ईएसजी निवेश, निवेश निर्णयों को निर्देशित करने के लिए पर्यावरण, सामाजिक और शासन कारकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं; सीएसआर निवेश समाज के प्रति कंपनी की जिम्मेदारी पर केंद्रित है।

3.0 पर्यावरण और मानव के लिए महत्त्व:

ईएसजी मानदंड का महत्त्व इस तथ्य में निहित है कि हम जलवायु परिवर्तन, सामाजिक असमानता और व्यावसायिक प्रथाओं में पारदर्शिता की कमी जैसी बढ़ती वैश्विक चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। ये चुनौतियां न केवल उस वातावरण को प्रभावित करती हैं जिसमें हम रहते हैं, बल्कि कंपनियों की लाभप्रदत्ता और प्रतिष्ठा पर भी सीधा प्रभाव डालती हैं।

निवेशक उन कंपनियों में निवेश करने में रुचि ले रहे हैं जो सामाजिक और पर्यावरणीय रूप से जिम्मेदार हैं, क्योंकि इससे न केवल नियामक जुर्माना या कानूनी दावों जैसे संभावित नकारात्मक प्रभावों से जुड़े जोखिम कम हो सकते हैं, बल्कि व्यावसायिक

अवसर भी पैदा हो सकते हैं और कंपनी की प्रतिष्ठा में सुधार हो सकता है। निवेश निर्णय लेने में ईएसजी मुद्दों पर प्रदर्शन और वित्तीय प्रदर्शन, प्रतिष्ठा संबंधी चिंताएं, उपभोक्ता दबाव, जनता की राय, कॉर्पोरेट पर्यावरण रिपोर्टिंग दायित्वों की शुरूआत आदि के बीच सांठगांठ के बढ़ते सबूत शामिल हैं।

पर्यावरण	सामाजिक	कॉर्पोरेट प्रशासन
♦ जलवायु परिवर्तन ♦ कार्बन उत्सर्जन ♦ ग्रीन हाउस गैसें ♦ प्रदूषण और अपशिष्ट ♦ इलेक्ट्रॉनिक अपशिष्ट ♦ प्राकृतिक संसाधन ♦ जल संसाधन, भूमि उपयोग ♦ जैव विविधता, कच्चे माल की सोर्सिंग ♦ पर्यावरणीय अवसर ♦ (स्वच्छ तकनीक, हरित भवन नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में)	♦ मानव पूंजी ♦ स्वास्थ्य और सुरक्षा ♦ कार्मिक विकास ♦ श्रम प्रबंधन ♦ कार्यबल और विविधता ♦ ग्राहक सहभागिता ♦ उत्पाद सुरक्षा ♦ डेटा और गोपनीयता सुरक्षा ♦ वित्तीय उत्पादन सुरक्षा ♦ हितधारक विरोध **समुदायों के साथ भागीदारी सामाजिक अवसर (स्वास्थ्य देखभाल, भोजन और पोषण, संचार तक पहुंच)**	♦ शासक संरचना ♦ कार्यकारी वेतन ♦ रिश्वत विरोधी और भ्रष्टाचार व्यासायिक नैतिकता ♦ प्रतिस्पर्धी विरोधी व्यवहार ♦ कर पारदर्शिता ♦ पारदर्शता और रिपोर्टिंग ♦ वित्तीय और परिचालन जोखिम ♦ हितधारको सगाई ♦ लेखापरीक्षा

4.0 एक कंपनी जिसका ईएसजी पर दृष्टिकोण स्पष्ट है: (उदाहरण)

कंपनी का दृष्टिकोण पर्यावरणीय स्थिरता पर केंद्रित सतत् विकास की अवधारणा को अपनाता है। ये मानते हैं कि स्थायी व्यावसायिक लाभ तब होता है जब वे उत्पादों के विकास और उनकी डिलीवरी सहित अपने परिचालन में पर्यावरणीय मुद्दों को समझते हैं और उनका समाधान करते हैं। इनकी साइटें उत्पादन प्रक्रियाओं की ऊर्जा दक्षता बढ़ाने, कम अपशिष्ट पैदा करने और कम ऊर्जा की मांग करने के लिए उन्नत तकनीक लागू करने, वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों सहित फ़ीड और उत्पाद गैसों की फ्लेरिंग और वेंटिंग को कम करने और खत्म करने की आकांक्षा रखती हैं।

- सभी लागू कानूनों और विनियमों का अनुपालन करते हैं, लेकिन स्रोत में कमी और पुनर्चक्रण के माध्यम से खतरनाक कचरे को कम करने और, जहां संभव हो, समाप्त करने का भी प्रयास करते हैं।
- सुरक्षित प्रौद्योगिकियों, सुविधा डिजाइन और संचालन प्रक्रियाओं के माध्यम से पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने के लिए लगातार काम करते हैं।
- अद्यतन कानूनों और विनियमों, प्रदूषण-रोकथाम और अपशिष्ट-न्यूनीकरण प्रथाओं और तकनीकी विकास का ज्ञान सुनिश्चित करने के लिए नियमित प्रशिक्षण आयोजित करते हैं।
- इन सिद्धांतों और स्थानीय कानूनों के अनुपालन की पुष्टि करने के लिए समय-समय पर अपने कार्यों का ऑडिट करते हैं।

ये 3आर - रिड्यूस, रियूज, रिसायकल के नेतृत्व वाली सर्कुलर इकोनॉमी के सिद्धांतों में दृढ़ विश्वास रखता है। कंपनी परिचालन दक्षता में सुधार करते हुए कार्बन कटौती के लिए नवाचार में तेजी लाने के लिए अनुसंधान एवं विकास निवेश बढ़ा रही है। यह उपायों को सुनिश्चित करता है और उच्चतम गुणवत्ता, सबसे कम लागत, सर्वोत्तम

निर्भरता और सबसे बड़े लचीलेपन जैसे परिचालन उद्देश्यों के संदर्भ में कंपनी (आरआईएल) की विशिष्ट क्षमता को मजबूत करने के अवसर प्रदान करते हैं। संसाधनों के प्रति सचेत रहना और कॉर्पोरेट प्रशासन एक ऐसी रुचि है जो उस खूबसूरत ग्रह की सुरक्षा के इरादे से तेजी से बढ़ रही है जिस पर हम रहते हैं।

5.0 ईएसजी मानदंड का महत्त्व : ईएसजी मानदंड संकट की स्थितियों को रोकने और जोखिमों को बेहतर ढंग से प्रबंधित करने में मदद कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक कंपनी जो अपने कार्बन उत्सर्जन का उचित प्रबंधन नहीं करती है, उसे भविष्य में उच्च नियामक लागत या उसके संचालन पर प्रतिबंध का सामना करना पड़ सकता है। उसी तरह से खराब प्रशासन प्रबंधन वाली कंपनी वित्तीय घोटालों की चपेट में आ सकती है जो इसकी छवि और निवेशकों के साथ इसके संबंधों को नुकसान पहुंचाता है। एक अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालता है कि कंपनियों ने पर्यावरण और सामाजिक कारकों की तुलना में शासन कारक के बाद नीतिगत खुलासे में काफी हद तक बेहतर स्कोर किया है। इसका श्रेय इस तथ्य को दिया जा सकता है कि पिछले दो दशकों में भारत के भीतर विभिन्न नियामक एजेंसियों द्वारा शासन सुधारों को कानूनों में बदल दिया गया है।

6.0 भारत में ईएसजी का महत्त्व : भारत में लंबे समय से पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन के मुद्दों के बारे में विभिन्न कानून एवं निकाय मौजूद हैं, जिनमें वर्ष 1986 का पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, अर्ध-न्यायिक संगठन जैसे राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण, श्रम संहिता की एक श्रृंखला एवं कर्मचारी संबद्धता तथा कॉर्पोरेट प्रशासन व्यवहार को नियंत्रित करने वाले कानून शामिल हैं। उल्लंघन के लिए पर्याप्त आर्थिक दंड हो सकता है। भारत में नई पहलें आगे जाती हैं, दिशा-निर्देशों की स्थापना करती हैं जो विश्व के अन्य भागों में पाई जाने वाली ईएसजी आवश्यकताओं के समान निगरानी, मात्रा एवं प्रकटीकरण पर बल देती हैं। ईएसजी निवेश में वृद्धि एवं ईएसजी जोखिमों के बारे में जानकारी के लिए निवेशकों की मांग पर, भारत में 1,000 सबसे बड़ी सूचीबद्ध कंपनियों द्वारा आवश्यक वार्षिक व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं स्थिरता रिपोर्ट (बिजनेस रिस्पांसिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट/बीआरएसआर) में भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (द सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया/सेबी) द्वारा काफी संशोधन किया गया है। सेबी वर्तमान रिपोर्ट प्रारूप को विगत प्रकटीकरण आवश्यकताओं से "उल्लेखनीय प्रस्थान" के रूप में वर्णित करता है, जो वैश्विक

मानकों के साथ संरेखित हैं एवं कंपनियों को हितधारकों के साथ सार्थक रूप से जुड़ने एवं निवेशक निर्णय लेने में वृद्धि करने की अनुमति प्रदान करने हेतु "मात्रात्मक मैट्रिक्स पर अत्यधिक बल" देते हैं। प्रकटीकरण में हरित गृह गैस उत्सर्जन से लेकर कंपनी के लैंगिक तथा सामाजिक विविधता तक के आयाम शामिल हैं। दूसरी ओर ईएसजी मानदंड कंपनियों के भीतर नवाचार और दक्षता को भी प्रोत्साहित कर सकते हैं। ईएसजी लंबी अवधि में रिटर्न देता है।

- ईएसजी जोखिम वैश्विक हितधारकों का ध्यान आकर्षित कर रहे हैं।
- बेहतर ईएसजी प्रदर्शन एक स्वस्थ उद्यम की पहचान बन रहा है।
- ईएसजी विषय हितधारक संवाद का केंद्र बिंदु बन रहे हैं।

ईएसजी और निवेश : ईएसजी की अत्यधिक लोकप्रियता और इसके मुख्यधारा में आने का कारण निवेश समुदाय में इस ढांचे का महत्त्व है। कई निवेश विधियां सामने आई हैं जिन्होंने निवेशकों को ई,एस और जी उपायों से संबंधित उनके मूल्यों और मान्यताओं के अनुसार निवेश के अपने निर्णय लेने में मदद की है। इन निवेश विधियों में म्यूचुअल फंड, ईटीएफ, ग्रीन बॉन्ड आदि शामिल हैं।

प्रभाव निवेश - ऐसे निवेश करने की प्रथा जो न केवल वित्तीय रिटर्न उत्पन्न करती है, बल्कि सकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव भी उत्पन्न करती है - इसकी उत्पत्ति धार्मिक समूहों में हुई है, जिन्होंने अपने पोर्टफोलियो में नैतिक मापदंडों को रखा (उदाहरण के लिए, तंबाकू, शराब और जुआ व्यवसायों से इनकार)।

7.0 निष्कर्ष : चूंकि तेजी से बढ़ते उद्योग पृथ्वी ग्रह के क्षरण के प्रमुख कारणों में से एक हैं, किसी कंपनी के कामकाज और प्रबंधन में पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन कारकों को समझना और लागू करना संरक्षण की दिशा में एक महान कदम है। निवेश में स्थिरता पर विचार करने के महत्त्व के बारे में तेजी से बढ़ती जागरूकता के परिणामस्वरूप अधिक से अधिक निवेशकों का झुकाव निवेश के लिए ईएसजी के कारकों की ओर हुआ है। अक्सर यह माना जाता था कि पर्यावरण की सुरक्षा के बारे में सोचने और स्थिरता पर विचार करते हुए निवेश करने से कम लाभ होता है, और टिकाऊ निवेश के लिए कीमत चुकानी पड़ती है। विभिन्न अध्ययन स्पष्ट करते हैं कि बिल्कुल विपरीत सच है और ईएसजी निवेश के परिणाम सकारात्मक रहे हैं। ये मानदंड

महत्त्वपूर्ण हैं क्योंकि वे हमें यह आकलन करने की अनुमति देते हैं कि कोई कंपनी पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों का समाधान कैसे कर रही है। उन कंपनियों में निवेश करके जो स्थिरता की परवाह करती हैं और कॉर्पोरेट जिम्मेदारी को समझती है। हम एक अधिक न्यायसंगत, टिकाऊ और लचीली दुनिया के विकास में योगदान दे सकते हैं। पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी पहलुओं पर विचार करके, ईएसजी मानदंड एक अधिक संपूर्ण तस्वीर प्रदान करते हैं कि एक कंपनी इन चुनौतियों का प्रबंधन कैसे कर रही है और क्या वह उनका सामना करने के लिए तैयार है।

8.0. संदर्भ:

- इंटरनेट की वेबसाइट,
  Drishti IAS, Vinod Kothari consultants 2021

*****

गंगाधर प्रसाद

पदनाम:- सहायक महाप्रबंधक
संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक
मोबाइल नं. :- 7710038060
ई-मेल:- gangadhar@pnb.co.in

ईएसजी (ईएसजी) अर्थात् पर्यावरणीय (Environment), सामाजिक (Social) एवं कॉर्पोरेट शासन (Corporate Governance) एक ऐसा दृष्टिकोण है, जिसके अंतर्गत कोई भी कंपनी वित्तीय लाभ के अलावा पर्यावरणीय, सामाजिक एवं शासन के लाभ को ध्यान में रखते हुए अपनी नीति का निर्धारण करती है। यह आज एक बहुत ही चर्चित अवधारणाओं में से एक है। दूसरे शब्दों में ईएसजी एक ऐसा निवेश मॉडल या रणनीति है जहां आप ऐसी कंपनियों में निवेश करते हैं जो दुनियां को कुछ बेहतर बनाने

के लिए काम करती हैं। इसमें निवेश करते समय निवेशक सिर्फ वित्तीय पैरामीटर न देखकर एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते गैर वित्तीय पैरामीटर जैसे पर्यावरण, सामाजिक एवं बेहतर शासन को भी आधार मानकर निवेश करते हैं।

ईएसजी दृष्टिकोण वैसे तो सदियों से अस्तित्व में है पर 1960 के दशक में इसका विशेष विकास हुआ। ईएसजी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव श्री कोफी अन्नान ने वर्ष 2004 में किया एवं अक्तूबर 2005 में यूएनईपीआई (UNEPI) ने फ्रेशफिल्ड्स रिपोर्ट में इसको शामिल किया। विश्व के अन्य देशों की तरह ही भारत में भी ईएसजी एवं ईएसजी स्कोर के प्रति जागरूकता बढ़ती जा रही है, ईएसजी निवेश इंडिपेंडेंट रेटिंग पर निर्भर करते हैं, इन रेटिंग से यह पता चलता है कि किसी कंपनी का पर्यावरणीय, सामाजिक एवं कॉर्पोरेट शासन के प्रति क्या दृष्टिकोण है। आइए देखते है कि ईएसजी के अंतर्गत कौन से बिंदु शामिल हैं।

पर्यावरणीय (Environmental): इसके अंतर्गत यह देखा जाता है कि कोई भी कंपनी अपने नीति निर्धारण में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधन, प्रदूषण नियंत्रण, कचरा प्रबंधन, वेस्ट रिडक्शन, ग्रीन हाउस गैस एमिशन, कार्बन फुटप्रिंट रिडक्शन और जैव विविधता के क्षेत्र में क्या योगदान दे रही है एवं भविष्य के लिए उनकी क्या योजनाएं एवं दृष्टिकोण हैं।

सामाजिक (social): क्या वह कंपनी समान वेतन, समान रोजगार अवसर, कर्मचारी लाभ, मानव अधिकार आदि का ध्यान रख रही है , क्या सप्लाई चैन मानकों का पालन हो रहा है, श्रम प्रबंधन की क्या स्थिति है, श्रमिकों के स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की क्या व्यवस्था है एवं मानव पूंजी विकास के लिए क्या कार्य किया जा रहा है, अर्थात उनके कौशल विकास के लिए प्रशिक्षण या अप्रेंटिस की सुविधा है या नहीं।

शासन (corporate governance) : यह देखना महत्त्वपूर्ण है कि कंपनी के अंदर कॉर्पोरेट गवर्नेंस की क्या स्थिति है, कंपनी के अंदर भ्रष्टाचार तो नहीं है, बैलेंस शीट/ एकाउंटिंग में ईमानदारी एवं पारदर्शिता, जोखिम प्रबंधन, अनुपालन, कर पारदर्शिता, एग्जीक्यूटिव पे, बोर्ड डाइवर्सिटी अर्थात् बोर्ड में महिलाओं की भागीदारी है कि नहीं, बिजनेस एथिक्स का पालन हो रहा है या नहीं।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: विदेशों में ईएसजी पर काफी समय से

काम हो रहा है एवं विभिन्न देशों में यह वर्ष 2006 से अनिवार्य कर दिया गया है, जबकि भारत में इस पर काम वर्ष 2011 से शुरू हुआ है पर अभी यह कंपनियों के लिए अनिवार्य नहीं है। भारत में सीएसआर (निगमित सामाजिक दायित्व) बड़ी कंपनियों के लिए आवश्यक है, पर ईएसजी वास्तव में सीएसआर से ज्यादा व्यापक है जिसमें सामाजिक कार्यों के अलावा पर्यावरणीय एवं बेहतर शासन के लिए भी कार्य करना आवश्यक है। ईएसजी अभी भारत में प्रारंभिक अवस्था में है एवं इसके अंतर्गत शीर्ष 1000 कंपनियों के लिए पर्यावरणीय, सामाजिक एवं कॉर्पोरेट शासन की दिशा में काम करना आवश्यक है। भारत में ईएसजी फंड की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है, आजकल विभिन्न रिटेल एवं संस्थागत निवेशक निवेश करने के पहले यह देखना जरूरी समझते हैं कि कंपनी का ईएसजी क्षेत्र में प्रदर्शन कैसा है। ईएसजी का महत्त्व वर्तमान और भविष्य में कॉर्पोरेट संस्थानों के लिए बढ़ रहा है क्योंकि यह निवेशकों की मांग, जोखिम प्रबंधन, प्रतिस्पर्धा और वित्तीय प्रदर्शन में सुधार को प्रोत्साहित करता है। आइए हम विस्तार से देखते हैं कि ईएसजी का कॉर्पोरेट क्षेत्र में महत्त्व बढ़ने के क्या कारण हैं।

निवेशकों में ईएसजी के प्रति जागरूकता : आधुनिक निवेशक, संगठनों और पेंशन निधियों ने ईएसजी मानदंडों को अपनाने की मांग की है। उन्हें कॉर्पोरेट संघों के वातावरणीय, सामाजिक और शासनीय प्रदर्शन की जानकारी चाहिए ताकि वे निवेश के फैसलों को ईएसजी प्रतिभूति के संदर्भ में ले सकें। ऐसे में, कंपनियों को ईएसजी मानदंडों का पालन करना महत्त्वपूर्ण हो गया है ताकि वे निवेशकों को आकर्षित करें और उनके निवेश को बनाए रखें। निवेशकों का मानना है कि जो कंपनियां ईएसजी के सिद्धांतों को अपनाती है,उसमें भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता होती है एवं उनमें वित्तीय जोखिम भी तुलनात्मक रूप से कम होता है।

जोखिम प्रबंधन: वातावरणीय, सामाजिक और शासनीय मुद्दों का प्रबंधन करने के लिए ईएसजी प्रदर्शन मानकों के अनुसरण करने से कंपनियाँ जोखिम प्रबंधन कर सकती हैं। उन्हें कार्बन आवश्यकता कम करने, प्रदूषण कम करने, स्वच्छ पानी उपयोग करने, न्यायसंगत कार्यक्रमों और मानकों को प्रदान करने, नकारात्मक संघर्षों को नियंत्रित करने, मज़दूरों के अधिकारों को सुनिश्चित करने, और संघर्षकों के खिलाफ सामंजस्यपूर्ण राजनीतिक योजनाएं अपनाने की आवश्यकता होती है। बैंकों के साथ ही नॉन बैंकिंग फाइनेंशियल सेक्टर भी ईएसजी के प्रति अपेक्षाकृत कम जोखिम होने के

कारण आकर्षित हो रही हैं।

वित्तीय प्रदर्शन : ईएसजी का कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन के साथ भी सकारात्मक संबंध है, इससे कम लागत पर पूंजी जुटाने में मदद मिलती है एवं इसके जरिए सही संसाधनों के इस्तेमाल से टॉप लाइन ग्रोथ को बढ़ावा मिलता है।

बेहतर इमेज : ईएसजी पर ध्यान देने से कंपनियों को न सिर्फ अपनी इमेज बेहतर करने में मदद मिलती है बल्कि निवेशकों का फोकस भी ऐसी कंपनियों पर बढ़ जाता है। ऐसा देखा गया है कि ईएसजी से संबंधित नकारात्मक समाचार से कंपनी के शेयर के रिटर्न पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यही कारण है कि भारत सहित दुनिया की विभिन्न कंपनियां तेजी से ईएसजी मैट्रिक्स पर काम कर रही हैं।

वर्त्तमान : भारत में कंपनियों के लिए ईएसजी की प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई। वर्तमान में भारत में ईएसजी का विनियमन सेबी के द्वारा किया जाता है। सेबी ने 2012 में 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट' (बीआरआर) तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं तथा वर्ष 2015 से शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं के लिए उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में बीआरआर फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया। वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को एक अधिक व्यापक एकीकृत तंत्र 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' (बीआरएसआर) से प्रतिस्थापित कर दिया। यह वित्त वर्ष 2022-23 से बाजार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं पर अनिवार्य रूप से लागू होगा।

भारतीय निवेशकों के ईएसजी पालन करने वाली कंपनियों एवं ईएसजी फंड में बढ़ती हुई रूचि को देखते हुए भारतीय कंपनियां भी अब अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही है। अभी हाल में ही टीसीएस द्वारा वर्ष 2030 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन के लक्ष्य की घोषणा एवं गाजियाबाद नगर निगम द्वारा अपशिष्ट जल के उपयोग के लिए पर्यावरणीय रूप से संवाहनीयता परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (बीएसई) में सूचीबद्ध ग्रीन बांड जारी किया जाना इसका एक उदाहरण है।

भविष्य : सतत् विकास की समझ विकसित होने के साथ ही भारत में ईएसजी प्रोफेशनल की मांग में अभूतपूर्व वृद्धि देखी जा रही है। अप्रैल 2019 से अप्रैल 2023 के दौरान इसमें 223% की वृद्धि दर्ज की गई। भविष्य में, ईएसजी का महत्त्व बढ़ने की उम्मीद है क्योंकि लोगों की जागरूकता बढ़ रही है और वे उच्चतम मानकों और दृष्टिकोणों को आदर्श मानकर कंपनियों का चयन करने के लिए प्रयास कर रहे हैं। दुनिया भर में निवेशकों की ओर से ईएसजी के मानकों के प्रति बढ़ती रुचि देखी जा रही है, और यह वृद्धि निवेश करने के लिए विभिन्न आयामों के साथ कंपनियों को प्रभावित कर सकती है।

ईएसजी कार्यक्रम का महत्त्व भविष्य में वृद्धि करने के साथ-साथ इसके लागू होने वाले नियमों और विनियमों में भी वृद्धि हो सकती है। सरकारों और प्राधिकरणों के द्वारा ईएसजी के मानकों के प्रति बढ़ती संवेदनशीलता और आपातकालीन उद्योग राजनीति भी ईएसजी के प्रभाव को बढ़ा सकते हैं। इस प्रकार, ईएसजी का महत्त्व कॉर्पोरेट क्षेत्र में वृद्धि करने की संभावना है और कंपनियां इसे अपने व्यवसाय माध्यम में एक महत्त्वपूर्ण पहलू बनाने के लिए तैयार होनी चाहिए।

नीति-निर्माताओं की भूमिका: नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिये जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए।

ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बिठाया जा सके।

मानकीकृत ईएसजी मानदंड: ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा और इस बारे में संक्षिप्त संचार करेगा कि संवहनीयता संबंधी मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप कैसे एक संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाएँ समय के साथ मूल्य सृजित करेंगी।

निवेशकों और कंपनियों की भूमिका: निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न हासिल करने की ओर उन्मुख होना चाहिए, बल्कि सतत् विकास के साथ अपने पोर्टफोलियो को संरेखित करने के लिये भी तत्पर रहना चाहिये।

कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यापार रणनीति/नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है।

जैसे जैसे आम निवेशकों में ईएसजी के प्रति जागरूकता फ़ैल रही है, कंपनियों को अपने नीति / पालिसी में ईएसजी पर अधिक ध्यान देने की जरुरत है। यह पर्यावरण, समाज एवं बेहतर शासन के लिए एक सकारात्मक लक्षण है एवं सरकार को चाहिए कि समय समय पर अपनी नीतियों में आवश्यक बदलाव करते रहें जिससे कि कोई भी कंपनी केवल वित्तीय लाभ पर ध्यान न देकर पर्यावरण, समाज एवं बेहतर शासन के लिए अधिक कृतसंकल्प हो एवं गंभीर प्रयास करे।

निष्कर्ष: हालाँकि भारत पर्यावरण, समाज एवं कॉर्पोरेट गवर्नेंस के लिए आवश्यक विनियमन करने की दिशा में धीरे धीरे बढ़ रहा है, बीआरएसआर फ्रेमवर्क के लागु होने के साथ ही भारत उन देशों के समूह में शामिल हो गया है जो इसके लिए विस्तृत फ्रेमवर्क पर काम कर रहे हैं। भले ही अभी यह बाज़ार पूंजीकरण में शीर्ष 1000 लिस्टेड कंपनियों के लिए ही आवश्यक किया गया है पर यह स्पष्ट दिख रहा है कि शीघ्र ही और अधिक कंपनियां इस फ्रेमवर्क का हिस्सा होंगे।

*****

अर्पण बाजपेयी

पदनाम:- वरिष्ठ प्रबंधक
संस्था का नाम:- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
मोबाइल नं. :- 7974724100
ई-मेल:- arpanchhi@gmail.com

किसी व्यवसाय की सफलता न केवल उसके नवीन उत्पादों पर निर्भर करती है, बल्कि उसके संचालन के तरीके पर भी निर्भर करती है। उपभोक्ता उन कंपनियों की ओर आकर्षित नहीं होते हैं जो पर्यावरण, कर्मचारियों या उस समुदाय के साथ खराब व्यवहार करती हैं जिसमें वे काम करते हैं। इसमें कहा गया है कि 76% उपभोक्ता ऐसी कंपनियों से खरीदारी बंद कर देते हैं।

ईएसजी पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) का संक्षिप्त रूप है। ईएसजी एक रिपोर्टिंग ढांचा है, और महत्त्वपूर्ण गैर-वित्तीय कारकों में से एक है जिसका उपयोग कंपनी के प्रदर्शन का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह इस बात की ओर इंगित करता है कि कोई संगठन पर्यावरणीय कारकों जैसे कार्बन फुट प्रिंट, जल उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, वायु प्रदूषण, आदि, सामाजिक कारकों जैसे विविधता, मानवाधिकार, कार्यस्थल पर सुरक्षा और शेयरधारकों के अधिकारों जैसे कॉर्पोरेट शासी कारकों पर कैसे प्रभाव डालता है।

हाल के वर्षों में, पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) निवेश ने भारत सहित दुनिया भर में महत्त्वपूर्ण आकर्षण प्राप्त किया है। जैसा कि निवेशक अपने वित्तीय लक्ष्यों को सतत् विकास के साथ संरेखित करने की आवश्यकता को पहचानते हैं, ईएसजी निवेश वित्तीय रिटर्न के साथ-साथ सकारात्मक प्रभाव पैदा करने के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में उभरा है।

किसी कंपनी के वित्तीय प्रदर्शन का विश्लेषण किए बिना, निवेशकों का झुकाव ईएसजी विचारों की ओर अधिक होता है। ईएसजी संभवतः मुख्यधारा के निवेश का केंद्र बन रहा है क्योंकि यह व्यवसाय के हर पहलू कर्मचारी खुशी, कार्य वातावरण की सुरक्षा, ग्राहक डेटा की सुरक्षा, किसी संगठन द्वारा प्राकृतिक निकायों या जलवायु परिवर्तन के

कारण होने वाले संभावित खतरे को संबोधित करता है। ईएसजी स्कोर और ईएसजी रेटिंग निश्चित रूप से मायने रखती हैं और ये महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। कई ईएसजी रेटिंग कंपनियां हैं, जो किसी संगठन के ईएसजी प्रदर्शन का निष्पक्ष मूल्यांकन करती हैं और ग्राहकों को डेटा उपलब्ध कराती हैं। सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी के लाखों टुकड़ों के वास्तविक समय विश्लेषण द्वारा, संचयी रेटिंग के साथ-साथ "ई", "एस" और "जी" के लिए व्यक्तिगत स्कोर निर्दिष्ट किए जाते हैं। कंपनी का विश्लेषण मानवीय प्रयासों के साथ-साथ प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण और मशीन लर्निंग एल्गोरिथम के संयोजन द्वारा किया जाता है।

स्वतंत्र निवेशक और वित्तीय संस्थान कंपनी के रिटर्न और उसके जोखिमों को निर्धारित करने के लिए ईएसजी स्कोर को प्रॉक्सी के रूप में उपयोग करते हैं। उच्च ईएसजी स्कोर बेहतर अवसरों और स्वस्थ मुनाफे में तब्दील होता है। ईएसजी स्कोर उद्यमों को अधिक टिकाऊ समाधान बनाने और अधिक प्रतिभाओं को आकर्षित करने में मदद करता है। ईएसजी निवेश में पारंपरिक वित्तीय मैट्रिक्स के साथ-साथ कंपनी के पर्यावरण, सामाजिक और शासन प्रदर्शन पर विचार करना शामिल है। यह कंपनी की स्थिरता प्रथाओं, समाज पर इसके प्रभाव और इसके कॉर्पोरेट प्रशासन की प्रभावशीलता का आकलन करने पर केंद्रित है। निवेश निर्णयों में ईएसजी कारकों को शामिल करके, निवेशकों का लक्ष्य पर्यावरण, समाज और शासन प्रथाओं में सकारात्मक योगदान देने वाली कंपनियों का समर्थन करते हुए दीर्घकालिक मूल्य उत्पन्न करना है।

भारत में ईएसजी निवेश के मुख्य चालक तत्वों को निम्नानुसार समझा जा सकता है:-

नियामक समर्थन: भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने दिशानिर्देश पेश करके ईएसजी निवेश को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिसके लिए शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों को अपनी ईएसजी-संबंधित गतिविधियों का खुलासा करने की आवश्यकता होती है। ये दिशानिर्देश पारदर्शिता बढ़ाते हैं और कंपनियों को अपनी ईएसजी प्रथाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

निवेशक की मांग: संस्थागत निवेशकों, परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियों और खुदरा निवेशकों सहित भारत में निवेशक ईएसजी निवेश की क्षमता को तेजी से पहचान रहे हैं। टिकाऊ निवेश विकल्पों की मांग जलवायु परिवर्तन, सामाजिक मुद्दों और कॉर्पोरेट प्रशासन घोटालों के बारे में बढ़ती जागरूकता से प्रेरित है।

व्यावसायिक अवसर: ईएसजी निवेश भारत में कंपनियों के लिए महत्त्वपूर्ण व्यावसायिक अवसर प्रस्तुत करता है। स्थायी प्रथाओं को अपनाने और ईएसजी कारकों पर ध्यान केंद्रित करके, व्यवसाय अपनी परिचालन दक्षता बढ़ा सकते हैं, जोखिम कम कर सकते हैं, जिम्मेदार निवेशकों से पूंजी आकर्षित कर सकते हैं और बाजार में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल कर सकते हैं।

कॉर्पोरेट क्षेत्र के लिए ईएसजी के निम्नलिखित पांच प्रमुख लाभ हैं -

1. अनुपालन
2. निवेश
3. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ
4. प्रतिभा तक पहुंच
5. लागत में कमी

1. अनुपालन:

यूके, यूएस, चीन, न्यूजीलैंड, यूरोपीय देशों सहित कई देशों में ईएसजी रिपोर्टिंग अनिवार्य कर दी गई है। ईएसजी प्रकटीकरण रिपोर्ट अपने प्रमुख हितधारकों, उपभोक्ताओं, निवेशकों और गैर सरकारी संगठनों के लिए एक उद्यम की गतिविधि में पारदर्शिता और दृश्यता प्रदान करती है। यह देखना दिलचस्प है कि वैश्विक संगठन ईएसजी पर कैसे रुख अपना रहे हैं, ईएसजी रिपोर्टिंग को अपनी नियामक प्रणालियों में पूरी तरह से एकीकृत कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, जापान की वित्तीय सेवा एजेंसी, वित्तीय स्थिरता के लिए बैंकिंग, सुरक्षा और विनिमय और बीमा क्षेत्र की देखरेख करने वाली एक सरकारी संस्था ने देश में स्थायी वित्त को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश और सिफारिशें जारी कीं। यूरोपीय क्षेत्र में, यूरोपीय संघ के स्थायी वित्तीय ढांचे में कई नियम शामिल हैं, जो 2050 तक यूरोप को पहला कार्बन-तटस्थ महाद्वीप बनाने के मिशन पर जोर देते हैं।

यदि आप एक सामाजिक लाइसेंस बनाए रखना चाहते हैं और व्यावसायिक संबंध स्थापित करना चाहते हैं और अन्य देशों में निवेश के अवसर तलाशना चाहते हैं तो ईएसजी एक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता बन जाती है। ईएसजी आपके व्यवसाय के लचीलेपन को मजबूत करता है।

2. निवेश:

हाल में हुई महामारी ने व्यवसायों को स्थिरता का मूल्य दिखाया है। नई सामान्य स्थिति में निवेशक ऐसे टिकाऊ व्यवसायों की तलाश कर रहे हैं जो अपने संचालन में उचित प्रथाओं के प्रति सचेत हों। उदाहरण के लिए, संपत्ति को अधिकतम करना, एक अप्रयुक्त कार गैरेज को डेकेयर सुविधा में परिवर्तित करना, प्लास्टिक के उपयोग पर प्रतिबंध लगाना, जितना संभव हो सके कागज रहित कार्यस्थलों को लाना आदि। संभावित निवेश अवसरों की स्क्रीनिंग करते समय ये सभी निवेशक के निर्णय को अत्यधिक प्रभावित कर सकते हैं।

3. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ:

इस गतिशील व्यावसायिक परिदृश्य में, भीड़ में अलग दिखना एक उच्च प्राथमिकता है, न केवल अद्वितीय उत्पादों/सेवाओं की पेशकश में बल्कि अपने कर्मचारियों और ग्राहकों की खुशी को शीर्ष पर रखने में भी। एक अच्छी ईएसजी योजना में आपके कर्मचारियों और ग्राहकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करने की नैतिकता और प्रतिबद्धता में सुधार के तरीके शामिल होने चाहिए। इन दिनों, उपभोक्ता संतुष्ट हैं और उन कंपनियों से निपटने की अधिक संभावना रखते हैं जो उन्हें स्थायी खरीदारी विकल्प प्रदान कर सकती हैं और ईंधन की बढ़ती लागत और हमारे जीवन में खर्च होने वाली ऊर्जा के उपयोग को देखते हुए पर्यावरणीय प्रभाव से अधिक सावधान हैं।

4. प्रतिभा तक पहुंच:

जब श्रम की स्थिति, नैतिक कार्यस्थल, विविधता और समावेशन कार्यक्रम, समाज को वापस देने और अन्य नैतिक नीतियों की बात आती है तो नई पीढ़ी का कार्यबल अधिक जागरूक है। ईएसजी शीर्ष प्रतिभाओं को आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए एक बेहतरीन कार्य संस्कृति बनाने में योगदान देता है। चूंकि बहुत से लोग पर्यावरण के संरक्षण के प्रति सचेत हो रहे हैं, विशेष रूप से महामारी के बाद, वे ऐसे कार्यस्थल से जुड़ने का भी इरादा रखते हैं जो उनके सिद्धांतों के अनुरूप हो।

5. लागत में कमी:

मैकिन्से की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि, "ईएसजी रणनीतियां परिचालन लाभ को 60% तक प्रभावित कर सकती हैं।" ईएसजी लागत बचत में काफी योगदान दे सकता है। कच्चे माल की खरीद की लागत की कल्पना करें। पर्यावरण-अनुकूल उत्पाद बनाना,

रीसाइक्लिंग विकल्पों के साथ नवाचार करना, उपकरणों को फिर से डिजाइन करना, ईंधन की खपत और कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए विद्युत वितरण ट्रकों या वाहनों का एक बेड़ा शुरू करना, कर्मचारियों को लचीले कामकाजी घंटों की पेशकश करना, संपूर्ण आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन प्रक्रिया को डिजिटल बनाने के लिए आपूर्तिकर्ताओं के साथ काम करना, और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग करके कार्बन फुट प्रिंट को कम करने के लिए क्लाउड- आधारित प्रणाली की ओर बढ़ना, संगठनों के लिए कुछ लागत- कटौती ईएसजी रणनीतियों में शामिल हैं।

दुनिया भर की कंपनियों ने ईएसजी के महत्त्व को समझना शुरू कर दिया है। वास्तव में, एक अध्ययन, ईएसजी सीआईओ सर्वेक्षण 2022 के अनुसार, 53% से अधिक निवेशक जलवायु परिवर्तन को अपने निवेश निर्णयों को प्रभावित करने में सबसे महत्त्वपूर्ण मानते हैं, जो वर्ष 2021 में 47% से अधिक है। अध्ययन में बताया गया है कि लगभग 78% निवेशक चिंतित हैं कि जलवायु परिवर्तन का अर्थव्यवस्था पर नकारात्मक प्रभाव पड़ रहा है।

वुरम का ईएसजी समाधान, जो एपियन की कम-कोड क्षमताओं पर बनाया गया है, उद्यमों को ईएसजी लक्ष्यों को प्राप्त करने और स्वचालन के माध्यम से शुद्ध शून्य उद्देश्यों के लिए संगठन की यात्रा के सभी पहलुओं का प्रबंधन करने की अनुमति देता है। यह जोखिम स्कोर कैलकुलेटर, कार्य योजना प्रबंधन, विक्रेता/ग्राहक का ईएसजी मूल्यांकन आदि जैसी सुविधाओं के साथ प्रमुख हितधारकों के प्रबंधन के लिए एक एकीकृत और केंद्रीकृत मंच प्रदान करता है।

भारतीय निवेशक विभिन्न परिसंपत्ति वर्गों में अपनी निवेश रणनीतियों में ईएसजी कारकों को एकीकृत कर रहे हैं। इक्विटी और बॉन्ड से लेकर निजी इक्विटी और उद्यम पूंजी तक, निवेशक सक्रिय रूप से ऐसे अवसरों की तलाश कर रहे हैं जो उनके स्थिरता लक्ष्यों के अनुरूप हों। ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग के साथ, विश्वसनीय और मानकीकृत ईएसजी डेटा और रेटिंग पर जोर बढ़ रहा है। भारतीय कंपनियां अपने ईएसजी प्रकटीकरण में सुधार कर रही हैं, और रेटिंग एजेंसियां उनके ईएसजी प्रदर्शन के आधार पर कंपनियों का मूल्यांकन और रैंक करने के लिए व्यापक रूपरेखा विकसित कर रही हैं। भारत में ग्रीन बांड जारी करने में वृद्धि देखी गई है, जिसका उपयोग पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए किया जाता है।

इसके अतिरिक्त, स्थिरता से जुड़े उपकरण, जहां ब्याज दरें जारीकर्ता के ईएसजी प्रदर्शन से जुड़ी होती हैं, लोकप्रियता हासिल कर रहे हैं, जिससे कंपनियों को अपनी स्थिरता प्रथाओं में सुधार करने के लिए प्रोत्साहन मिल रहा है।

भविष्य की संभावना: भारत में ईएसजी निवेश में सकारात्मक बदलाव लाने और कई तरीकों से स्थायी भविष्य में योगदान करने की क्षमता है:

जलवायु परिवर्तन शमन: नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं, टिकाऊ बुनियादी ढांचे और स्वच्छ प्रौद्योगिकियों की ओर पूंजी को निर्देशित करके, ईएसजी निवेश भारत को कम कार्बन वाली अर्थव्यवस्था में बदलने और इसके कार्बन फुट प्रिंट को कम करने में मदद कर सकता है।

सामाजिक प्रभाव: ईएसजी निवेश उन कंपनियों को बढ़ावा देता है जो लैंगिक समानता, विविधता और समावेशन, श्रम अधिकार और सामुदायिक विकास जैसे सामाजिक मुद्दों को प्राथमिकता देती हैं। यह सकारात्मक सामाजिक प्रभाव पैदा करता है और अधिक न्यायसंगत समाज में योगदान देता है।

शासन संवर्धन: ईएसजी निवेश कंपनियों को पारदर्शिता, जवाबदेही और नैतिक व्यवहार सुनिश्चित करते हुए मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। इससे निवेशकों का विश्वास बढ़ता है और कॉरिट धोखाधड़ी और कदाचार को रोकने में मदद मिलती है

नियामक समर्थन, निवेशकों की मांग और व्यावसायिक अवसरों की पहचान के कारण भारत में ईएसजी निवेश में उल्लेखनीय वृद्धि हो रही है। जैसा कि देश सतत् विकास के लिए प्रयास करता है, ईएसजी निवेश पर्यावरण, समाज और कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं पर सकारात्मक प्रभाव पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ईएसजी निवेश को अपनाकर, भारत एक स्थायी भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकता है जो सामाजिक और पर्यावरणीय कल्याण के साथ वित्तीय रिटर्न को संतुलित करता है।

*****

अजित कुमार

पदनाम:- प्रबंधक (राजभाषा)
संस्था का नाम:- भारतीय स्टेट बैंक
मोबाइल नं. :- 9265964178
ई-मेल:- ajit.kumar111@sbi.co.in

आठ अरब लोगों के सपने, उनकी महत्त्वकांक्षाएं, आकांक्षाएं और उन सभी को सहारा देने वाली एक ही धरती है। मानवीय जनसंख्या जो वर्तमान में आठ अरब के करीब है उन सबकी जरूरतों को पूरा करने की जिम्मेदारी पृथ्वी की है। पृथ्वी जिसके हम निवासी हैं जो हमें जीवन-निर्वाह करने के लिए संसाधन प्रदान कर सकती है उसकी भी सीमाएं हैं। जिन वैश्विक आर्थिक ताकतों ने आरंभिक दौर में औद्योगिकरण के जरिये अपने देश को संरचनात्मक रूप से मजबूत कर लिया है वे विकसित देश कहलाते हैं। जो इस दिशा में तेजी से कदम बढ़ा रहे हैं वे विकासशील देश हैं। जो देश अभी तक बुनियादी जरूरतों के लिए संघर्षरत हैं वे तीसरी दुनिया के देश हैं। इस पृष्ठभूमि में हम कॉर्पोरेट क्षेत्र के भीतर पर्यावरण, समाज और शासन के विकास एवं चुनौतियों को समझने का प्रयास करेंगे।

भारत विकासशील देश है। विकास के बहुआयामी मानदंडो में भारत अपने सुनहरे भविष्य को देख रहा है। वैश्विक मंच पर सेवा, विनिर्माण एवं कृषि इन तीनों क्षेत्रों में भारत का स्वर गंभीरता से सुना जा रहा है। नतीजतन वैश्विक आर्थिक ताकतें हमारी तरफ देख रही हैं। हम देख सकते हैं कि सकल घरेलू उत्पाद के पैमाने पर भारत की आर्थिक ताकत का लोहा विकसित देश भी अपनी जरूरत मानते हुए स्वीकार कर रहे हैं।

हम जानते हैं कि कॉर्पोरेट क्षेत्र में विनिर्माण और सेवा क्षेत्र शामिल होता है। नब्बे के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन हुए। वैश्विकरण ने उत्पादन और आयात-निर्यात को गति दी। कृषि के बाद कॉर्पोरेट जगत का विस्तार हुआ। इस विस्तार को समझने के लिए इस क्षेत्र को भी विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है।

मुख्य रूप से सरकारी क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र। इन दोनों क्षेत्रों के अंतर्गत भारतीय कॉर्पोरेट जगत पूरी तरह शामिल हो जाता है। अध्ययन की सहुलियत की दृष्टि से इस क्षेत्र को एक इकाई के रूप में रख कर भारतीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था पर इसके प्रभाव का मूल्यांकन करेंगे ताकि इस क्षेत्र में इएसजी के महत्त्व को बारीकी से समझ सकें।

इएसजी अंग्रेजी के E- एनवाइर्नमेंट, S- समाज, G- शासन, से निर्मीत है। इस तरह हम कह सकते है कि इएसजी के मुख्य रूप से तीन आधार स्तंभ हैं। पर्यावरण, समाज एवं शासन। इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि उत्पादन के किसी भी चरण में भूमि, श्रम, पूंजी और उद्यम एक महत्त्वपूर्ण घटक हैं। फिर वह कृषि हो अथवा विनिर्माण या सेवा क्षेत्र। उत्पादन के मुख्य चार साधनों का दोहन तो होता ही है। यो चारों संसाधन पृथ्वी की देन है।

ऐसे में सवाल यह उठता है कि क्या पर्यावरण और पारिस्थितिकी को नजरअंदाज करते हुए क्या हम विकास की राह बना सकते हैं? जबकि हम जानते हैं कि पर्यावरण के विनाश की शर्त पर विकास होता है। इस विषय पर वाद-विवाद पिछले कई दशकों से हो रहा है। प्रकृतिवाद और विकासवाद के वैचारिक संघर्षों से इतना तो साफ हो गया है कि प्रकृति और पारिस्थितिकी को विगत दशकों में पर्याप्त महत्त्व दिया गया है। विकासवाद के नाम पर प्रकृति को अनदेखा नहीं किया जा सकता। इसलिए there is no another earth, There is no Planet B, जैसे वाक्य हम अक्सर सुनते हैं।

विकास के स्थायी मानदंडो को ही देख लें। जीवन की प्रत्याशा, शिक्षा का स्तर और प्रति व्यक्ति आय के मानदंडो को विकास के मानक माना जाता है। परंतु आर्थिक विकास का अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग मतलब होता है। व्यापक स्तर पर कह सकते हैं कि एक स्वस्थ अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने और बनाने के लिए एक समुदाय जो कुछ भी करता है वह आर्थिक विकास की परिधि में आ सकता है। इस व्याख्या के सामने आर्थिक स्थिरता का भी सवाल खड़ा होता है। जिसे अंग्रेजी में Sustainability और हिंदी में संवहनीयता कहते हैं। संवहनीय विकास की अवधारणा पर तमाम वैश्विक ताकतें सक्रिय हैं।

वर्तमान और भावी पीढ़ियों के लिए संपन्न, स्वस्थ, विविध और लचीला समुदाय बनाने के लिए पर्यावरणीय स्वास्थ्य, सामाजिक समानता और आर्थिक जीवन शक्ति के

एकीकरण के लक्ष्य से संचालित यह अवधारणा बेहद महत्त्वपूर्ण है। दरअसल संवहनीय विकास की अवधारणा पर्यावरण, समानता और अर्थव्यवस्था के बीच संतुलन पर टीकी हुई है। इसलिए संवहनीय विकास की अवधारणा कुछ मौलिक प्रश्नों के उत्तर देती हुई कहती है कि संवहनीय विकास दरअसल स्थायी पारिस्थितिक, मानव के आर्थिक स्वास्थ्य और जीवन शक्ति के साथ संतुलन बनाती है। यह अवधारणा मानती है कि संसाधन सीमित हैं और संसाधनों का उपयोग करने के तरीकों की दीर्घकालिक प्राथमिकताओं और परिणामों की दृष्टि से बुद्धिमानी से उपयोग किया जाना चाहिए। सरल शब्दों में कह सकते हैं कि स्थायी विकास पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही संभव है। इस विषय पर दुनिया भर के देशों में अलग-अलग तरीके से प्रभावी नियम और कानून बनाए गए हैं।

यूरोपीय यूनियन ने अपनी सीमा में कार्यरत सभी तरह के उत्पादन इकाइयों के वार्षिक रिपोर्ट में ईएसजी को आधिकारीक रूप से अनिवार्य रिपोर्ट के रूप में शामिल किया है। 'Sustainable economy: Parliament adopts new reporting rules for multinationals' नाम से प्रकाशित यूरोपीय संघ के संसद ने दिनांक 10.11.2022 को यह प्रेस विज्ञप्ति जारी की जिसमें यह अनुदेश जारी किये गये कि यूरोपीय संघ के सभी देशों की सीमा में कार्यरत बहुराष्ट्रीय निगमों को आपनी वार्षिक रिपोर्ट में पर्यावरण, समाज और शासन संबंधी विवरण देना ही होगा। इसका प्रभाव निम्नानुसार पडेगा।

1. पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी विषयों पर पारदर्शिता बड़ी कंपनियों के लिए आदर्श बन जाएगी।
2. यूरोपीय संघ वैश्विक स्थिरता रिपोर्टिंग मानकों में अग्रणी बनेगा।
3. इस नियम के बाद वर्तमान में 11,700 से बढ़कर लगभग 50,000 कंपनियां इएसजी के दायरे में आएंगी।

भारतीय परिप्रेक्ष्य में इएसजी का महत्त्व और भी अधिक है। दुनिया के सबसे बड़ी आबादी वाले देश में पर्यावरण और विकास के बीच संतुलन इसलिए भी जरूरी है क्योंकि जिस तेजी से हमारे देश में उत्पादन-उपभोग की प्रवृति बढ़ रही है उसमें समाज और आधारभूत संरचना को हानि भी हो रही है। इएसजी की अवधारणा कॉर्पोरेट क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण क्यों है इसे निम्नानुसार हम कुछ मुख्य तथ्यों द्वार समझ सकते हैं।–

1. नीति आयोग के अनुसार, "भारत में 60 करोड़ जनसंख्या को दैनिक रूप से शुद्ध

पेयजल के लिए संघर्ष करना पड़ता है जिसमें से लगभग 70% पानी दूषित होता है। ज्ञात्वय हो कि जल गुणवत्ता सूचकांक में भारत 122 देशों में 120वें स्थान पर है।

2. वैश्विक पर्यावरण रैंकिंग में भारत 180 देशों में सबसे नीचे है।

उपर्युक्त आंकड़े हमें यह सोचने पर विवश कर देते हैं कि विकास बनाम पर्यावरण संरक्षण की वैचारिक लड़ाई में हमारी पक्षधरता किस ओर होनी चाहिए। आइए हम अपने देश की प्रमुख समस्याओं पर एक सरसरी नजर डाल लें।

बेरोज़गारी: भारतीय संदर्भ में बेरोजगारी राष्ट्रीय समस्या है। प्रत्येक वर्ष लाखों युवा देश के कार्यबल में प्रवेश करते हैं। ऐसे में औद्योगीकरण और शहरीकरण के लिए कठिन बुनियादी ढांचे में पर्याप्त निवेश जुटाना कठिन कार्य है।

स्वास्थ्य- देश में स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति में सुधार लाना सरकार की प्राथमिकताओं में शामिल है।

शिक्षा – देश में हो रहे व्यापक परिवर्तनों के केंद्र में शिक्षा का सर्वाधिक महत्त्व है। सभी को शिक्षा मिले यह सुनिश्चि किया जा रहा है।

बुनियादी ढांचा: लेकिन आने वाले दशकों में भारत को नौकरी के अवसरों का सृजन करने और बढ़ती शहरी आबादी को समायोजित करने और जोड़ने के लिए पूरी तरह से नए शहर और बुनियादी ढांचे का निर्माण करने के लिए निवेश-आधारित विनिर्माण विकास मॉडल की ओर बढ़ना होगा।

कार्बन के कम उत्सर्जन के साथ विकास: पिछले तीन दशकों में सेवा क्षेत्र में वृद्धि के कारण भारत की आर्थिक वृद्धि हुई है साथ ही कार्बन उत्सर्जन की दर कम रही है।

उपरोक्त मुख्य समस्याओं के आधार पर हम कॉर्पोरेट क्षेत्र में इएसजी के महत्त्व को रेखांकित कर सकते हैं। कॉर्पोरेट क्षेत्र में हो रहे व्यापक परिवर्तन दरअसल भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण कर रहे हैं। यह अतिक्रमण नाकारात्मक नहीं है। इससे विभिन्न देशों के आर्थिक विकास को जोड़ कर देखा जाना चाहिए। इसलिए आर्थिक विकास के साथ जलवायु और वातावरण और मानव विकास सूचकांक को भी महत्त्वपूर्ण

घटक के रूप में देखा जा रहा है। हम कुछ मुख्य बिंदुओं के आधार पर इएसजी के महत्त्व को समझने का प्रयास करेंगे।

1. पर्यावरण (E)

पर्यावरण मानव विकास के समानानंतर नकारात्मक रूप से प्रभावित होने वाला मुख्य विषय है। पर्यावरण के भी बहुत सारे घटक हैं जिनपर आर्थिक विकास ने चिंतनीय स्थिति बनाई है। हम जानते हैं कि वर्तमान में ऊर्जा संरक्षण एक महत्त्वपूर्ण विषय के रूप में वैश्विक समस्या बना हुआ है। इसके दक्षतापूर्ण उपयोग से जलवायु परिवर्तन को नियंत्रित किया जा सकता है। जलवायु परिवर्तन की रणनीति में संसाधनों की बर्बादी पर रोक लगाना, जैव विविधता के नुकसान को कम करना, ग्रीन-हाईस गैस उत्सर्जन में कमी, कार्बन उत्सर्जन पर नियंत्रण आदि अनेक विषय हैं। हम कर सकते हैं कि पर्यावरण के नाम से प्रचलित इस अध्याय के बहुत सारे उप अध्याय या पाठ हैं। हमें समझना होगा कि उत्पादन चक्र में संसाधन की क्या भूमिका है। संसाधन के नविकरणीय रूप हो या अनविकरणीय रूप इन सभी के बेहतर उपयोग से उर्जा की दक्षता के क्षेत्र में अनुसंधान हो रहे हैं। इन अनुसंधानों से निकले परिणाम संस्थानों के लिए बहुत उपयोगी हैं।

अब सवाल यह उठता है कि पर्यावरण से संबंधित जितने भी क्षेत्र हैं उनकी संरचना में हो रहे परिवर्तन के संरक्षण की जिम्मेदारी किसकी है? उत्तर एकदम स्वाभाविक है कि जिन कारकों की वजह से पर्यावरण को नुकसान हो रहा है उन कारकों और कारणों को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी। ऐसे में उत्पादन क्षेत्र में विनिर्माण विशेष रूप से वातावरण को गहरे रूप से प्रभावित करने वाली उत्पादन इकाईयों को इस दिशा में उत्तरदायी बनाया गया है। यह एइसजी का मूल तत्व है।

2. समाज (S)

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज की संरचना में प्रत्येक व्यक्ति के अपने जीवनाधिकार है। यह अधिकार जन्मजात हैं। विभिन्न देशों ने इस अधिकार को संवैधानिक संरक्षण भी दिया है। विकसित देश हो या दुनिया के गरीब देश इन सब में जीवन के न्यूनतम जरूरतों को पूरा करने के लिए सरकार और समाज सक्रिय भूमिका रहती हैं।

इएसजी के एक घटक के रूप में समाज को रखने के पीछे मुख्य वजह साफ है। समाज के बाहर व्यक्ति की सत्ता का कोई औचित्य नहीं है। अमीर-गरीब के बीच के फर्क को महसूस करने के लिए हमें समाज को ही देखाना पड़ता है। यह समाज जब एकांगी और एकपक्षीय विकास करता है तब समाज में अराजकता और असंतुलन होता है।

शासन अपने नियोजित योजनाओं के माध्यम से समाज के संतुलन हेतु कार्य करता है। इसके प्रमुख तत्व के रूप में उचित वेतन और जीवन निर्वाह के लिए न्यूनतम मजदूरी, रोजगार के एक समान अवसर, कर्मचारी कल्याण, कार्यस्थल पर स्वास्थ्य एवं सुरक्षा की व्यावस्था, सामुदायिक व्यस्तता, जिम्मेदार आपूर्ति श्रृंखला साझेदारी विकसित करने पडते हैं। हम देख सकते हैं कि जो देश जितना अधिक विकसित हुआ है वह मानव विकास सूचकांक के मानकों पर खरा उतरता है। कॉर्पोरेट जगत की जीवन शैली में सबको एक समान वेतन देना संभव नहीं है परंतु न्यूनतम वेतन और कर्मचारी कल्याण संबंधी तत्वों पर मजबूत कदम तो उठाए जा सकते हैं। इस बात को ध्यान में रखते हुए कॉर्पोरेट संस्थानों में सामाजिक विकास की अवधारणा पर बेहतर काम हो रहे हैं।

3. **शासन (G)**

गवर्नेन्स जिसे हिंदी में शासन कहा जा सकता है। स्पष्ट रूप से इस बात की ओर इशारा करता है कि देश के शासन और प्रशासन का तरीका कैसा होगा। नियमों और कानून के सह-सबंधों में व्याप्त जटिलताओं को किस हद तक कम किया जा सकता है। हम लालफिताशाही और जटिल आर्थिक तंत्र के इतिहास के साक्षी हैं। भारतीय संदर्भ में उन्नीस सौ नब्बे के पहले की आर्थिक प्रणाली को याद करें। जहां लाईसेंस राज और कठोर आर्थिक नियमों के हवाले से उत्पादन और सेवाओं को किस हद तक कमजोर किया जाता था। समय और समाज की जरूरतों के अनुरूप वैश्विक मंचों के लिए हमारी आर्थिक नीति भी बदली गयी है।

ये बदलाव हमें शासन के लचीले रूख की ओर ले जाती है। यह लचीलापन लापरवाही नहीं है बल्कि उदारीकरण के हवाले विकसित ऐसे शासन की स्थापना करता है जो लालफिताशाही को खत्म करता है। इसके विस्तार में जाने पर हम इसके अनेक पक्षों पर बात कर सकते हैं। निगमों से संबंधित शासन प्रणाली, उनके जोखिम

प्रबंधन, अनुपालन संस्कृति का विकास, नैतिक व्यवसायिक प्रथाएं, आपसी हितों के टकराव से बचने के लिए संकल्पबद्ध रहना, पारदर्शिता, श्रम कानून का पालन कराना आदि अनेक तत्व हैं। इन सभी के बेहतर संयोजन से शासन को उद्दात और सहयोगी की भूमिका में बदला जा सकता है। इस दिशा में हमारे देश में कॉर्पोरेट जगत से आगे बढ़ा है।

हम कॉर्पोरेट जगत के **बैंक एवं वित्तीय संस्थानों में** पर्यावरण, सामाज और शासन (ईएसजी) से जुड़े अवसरों को थोड़ा विस्तार से समझ सकते हैं। हम देख रहे हैं कि बैंकिग सेवा में कितनी तेजी से बदलाव हो रहे हैं। ये बदलाव दरअसल सच्ची और अच्छी सेवा के प्रति समर्पण भाव है।

प्रतिस्पर्धा के माहौल में स्वंय को बनाए रखने की चुनौती तो है ही साथ ही नियामकों द्वारा नियमित रूप से अपनाये जाने वाले तत्वों का अनुपालन भी किया जाता है। जोखिम को कम करने के लिए शासन अर्थात् नियामकों की पैनी नजर रहती है। ईएसजी विचार न केवल पर्यावरण के स्तर पर ग्रीन बैंकिग, डिजिटल बैंकिंग, आदि अवधारणाएं विकसित हो गयी हैं। स्थायी संचालन को बेहतर आर्थिक प्रदर्शन से जोड़ कर देखा जा रहा है। इसलिए बैंक न केवल पर्यावरण बल्कि सामाजिक विकास के सार्वजिनिक और सामूहिक दायित्वों की पूर्ति के लिए प्रतिबद्ध हैं।

यह अवधारणा कॉर्पोरेट क्षेत्र में ड्राईवर की तरह है जो गाड़ी की गति और दशा-दिशा को नियमित रूप से संभालने का काम करता है। नीजि क्षेत्र हो अथवा सार्वजनिक क्षेत्र कॉर्पोरेट जगत की प्रतिस्पर्धा को देखें तो कह सकते हैं कि लाभ में बने रहने के लिए यह किसी भी सीमा तक जा सकते हैं। मानवीय संवेदना से मशीन संरचना में परिवर्तित होते हुए कॉर्पोरेट क्षेत्र के संस्थान अगर इएसजी के पैमाने पर खरे उतरते हैं तो यह सामाजिक संतुलन और संतुलित विकास की अवधारणा को सफल कर सकेंगे।

*****

प्रेम रामनाणी

पदनाम:- वरिष्ठ सहयोगी
संस्था का नाम:- भारतीय स्टेट बैंक
मोबाइल नं. :- 7984233271
ई-मेल:- prem.ramanani@sbi.co.in

"It's not just 2% of your money you give away that matters. What you do with the other 98% is almost more important."

दिशाहीन आर्थिक विकास आदि से बाढ़-सूखा, औद्योगिक, वाहन व वायु प्रदूषण, जैव-अपघटनीय द्रव्यों का दुरुपयोग, ग्लोबल वार्मिंग, जलवायु परिवर्तन सहित मानव निर्मित पर्यावरणीय संकटों ने नागरिकों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाले जीवन की आवश्यकता पर बहस को भी बल दिया। बढ़ते यंत्रीकरण और बेतहाशा उपभोगतावाद और ऊपर से बेलगाम जन-संख्या वृद्धि की वजह से बेरोज़गारी दर में वृद्धि आई और सामाजिक संघर्ष की उपज हुई। महत्तम लाभ के चक्कर में पर्यावरण की हानी के साथ-साथ कर्मचारी शोषण, मानवाधिकार भंग आदि ने भी ज़ोर पकड़ा। कोविड-19 महामारी ने भी हमें आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, प्रवासी श्रमिक मुद्दों, स्वास्थ्य सुविधाओं की अपर्याप्तता और मांग में गिरावट की भयावहता को दिखाया और यह भी उजागर हो गया कि दुनिया एक-दूसरे से इतनी जुड़ी हुई है कि किसी एक भू-भाग की समस्या पलभर में वैश्विक आफ़त बन सकती है।

ये सभी मुद्दे तुरंत और स्थायी समाधान मांगते हैं। इन समस्याओं के निवारण हेतु कुछ सार्थक एवं दूरगामी विनियमों का क्रमशः उदय होता गया और आज भी हो रहा है, जिन्होंने समाधानीय जवाबदेही के भार का एक हिस्सा कॉर्पोरेट क्षेत्र के कंधे पर भी स्थानांतरित कर दिया है। कॉर्पोरेट क्षेत्र की पर्यावरण, समाज और सुशासन की इसी जवाबदेही को हम आज जिस नाम से जानते हैं, वह है- ईएसजी।

ईएसजी: अर्थ

ईएसजी एक अँग्रेजी संक्षिप्ति है, जिसका विस्तार है- Environmental, Social

and Governance. ईएसजी मुहिम का लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि कंपनियां न केवल अपने लाभ को ध्यान में रखें बल्कि दुनिया-पर्यावरण-समाज पर पड़ने वाले उनके प्रभाव को भी ध्यान में रखें। इस जवाबदेही के भार की अनदेखी करने पर हो रहे प्रतिष्ठात्मक हानि एवं वित्तीय दंडों के चलते अब तो कंपनियों ने भी बड़े पैमाने पर अपने कॉर्पोरेट एजेंडे में समाज और विश्व की चिंता को स्थान देना शुरू कर दिया है। व्यावसायिक सफलता का पैमाना अब केवल **अल्पकालिक लाभप्रदता और शेयरधारकों की हितरक्षा** के विचार से ऊपर उठकर **दीर्घकालिक संवहनीयता और हितधारकों के कल्याण** पर ध्यान केंद्रित कर रहा है।

ईएसजी: घटकों की व्याख्या

पर्यावरणीय घटकों में प्राकृतिक संसाधनों और ऊर्जा का संरक्षण एवं इष्टतम खपत, न्यूनतम पर्यावरणीय पदचिह्न छोड़ने वाला ज़िम्मेदार अपशिष्ट एवं प्रदूषण प्रबंधन, आदि को सम्मिलित किया जा सकता है।

सामाजिक आयामों में कॉर्पोरेट द्वारा स्थानीय समुदाय के संबंधों, कर्मचारियों की सुरक्षा और बेहतर कामकाजी परिस्थितियों, उचित वेतन, लैंगिक समानता, विविधता और समावेशन के साथ-साथ अपने आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों, अनुबंधकों आदि सहित सभी हितधारकों की 'दीर्घकालिक' भलाई उपायों को रख सकते हैं।

अभिशासन अपेक्षाओं में स्वतंत्र निदेशकों की प्रभावशील भूमिका एवं ऑडिट नियंत्रण द्वारा पारदर्शिता निश्चयन, भ्रष्टाचार/ रिश्वत विरोधी नियम, सदाचार एवं सर्व-हितधारक कल्याण के प्रति बोर्ड की प्रतिबद्धता को समाहित कर सकते हैं।

ईएसजी: कार्यक्षेत्र

ईएसजी का उद्देश्य ना केवल कॉर्पोरेट द्वारा पर्यावरणीय-सामाजिक और सुशासन संबंधी उपायों को करना है, बल्कि इसमें उस प्रत्येक जानकारी/ डेटा प्रकटीकरण भी सम्मिलित है; जो कि कॉर्पोरेट द्वारा इन उपायों के संदर्भ में उठाया गया हो और नहीं भी उठाया गया हो। अतः ईएसजी **ACTION और REPORTING** दोनों को समाहित करती हुई अवधारणा है।

ईएसजी: वैश्विक उत्क्रांति

ईएसजी के पीछे की अवधारणा हमारे द्वारा इसे "ईएसजी" नाम देने से बहुत पहले से ही

उद्भवित हुई मान सकते है; जो कि आज अपने सुव्यवस्थित नियमों एवं बृहद अनुप्रयोगों तक आ पहुंची है और साथ ही यह लगातार विकसित भी हो रही है। ईएसजी का संक्षिप्त इतिहास एवं विकास हम निम्नानुसार समझ सकते हैं:

- 1997 में यूएस में कंपनियों के लिए उनके ज़िम्मेदार पर्यावरणीय व्यवसाय प्रथाओं को अपने हितधारकों के समक्ष प्रदर्शित करने हेतु **Global Reporting Initiative (GRI)** नामक एक जवाबदेही ढांचे की स्थापना की गई।
- तत्पश्चात् 2004 में संयुक्त राष्ट्र के निमंत्रण पर वित्तीय संस्थानों का एक सहयोगात्मक अध्ययन हुआ, जिसके परिणाम में ***"Who Cares Wins"*** नामक एक रिपोर्ट प्रकाशित हुई। ***इसी रिपोर्ट में सर्वप्रथम "ईएसजी" शब्दावली का प्रयोग हुआ।*** इस रिपोर्ट में **Principles for Responsible Investment (PRI)** व्याख्यायित किए गए हैं; जिनके द्वारा ईएसजी मानदंड को पहली बार कंपनियों के वित्तीय मूल्यांकन में शामिल करना आवश्यक बनाया गया था।
- सन् 2000 में जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध एक वैश्विक आर्थिक प्रणाली बनाने के उद्देश्य से **Carbon Disclosure Project (CDP)** का प्रारंभ हुआ।
- निवेशक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर कंपनियों के प्रदर्शन की तुलना कर सकें और तदनुसार अपनी पूंजी को सबसे टिकाऊ व्यवसायों में निवेश कर सकें उस हेतु सन् 2011 में संवहनीयता मानदंडो को दर्शाने वाला **Sustainability Accounting Standards Board (SASB)** अस्तित्व में लाया गया।
- 2015 में वैश्विक वित्तीय प्रणाली में जलवायु संरक्षण को बढ़ावा देने हेतु **Taskforce on Climate-related Financial Disclosures (TCFD)** की स्थापना हुई।
- ईएसजी के संबंध में एक ऐतिहासिक घटना मई 2017 में हुई जब दुनिया की अग्रणी तेल और गैस कंपनी **ExxonMobil** के 62% शेयरधारक कंपनी को अपने व्यवसाय द्वारा जलवायु परिवर्तन प्रभावों पर आवश्यक रिपोर्टिंग हेतु बाध्य किया; और इस पर शीघ्र प्रतिक्रिया के पश्चात् ही **Paris Climate agreement** संभव हो पाया।
- **NASDAQ** ने **2019 MSCI S&P 500** कंपनियों की समीक्षा कर एक ESG रैंकिंग तैयार की, जिसमें कंपनियों को ईएसजी की कसौटी पर **Leaders,**

- **Average एवं Laggards** वर्गों में बांटा गया और समीक्षा का निष्कर्ष यह निकला कि उच्च रिटर्न, कम जोखिम, कम ब्याजदार, स्थिरता, लाभप्रदता, RoI, RoE, मार्केट कैप आदि जैसे सभी महत्त्वपूर्ण व्यवसायी मानकों पर ईएसजी लीडर कंपनियां बाकी वर्गों से कई गुना अग्रसर हैं।
- जापान में, **JPX-Nikkei 400** इंडेक्स है, जिसे **"शेम इंडेक्स"** के रूप में जाना जाता है, जो उन कंपनियों की पहचान करता है जो अंतर्राष्ट्रीय ईएसजी प्रकटीकरण मानकों का अनुपालन नहीं करते।
- EU ने 2021 में अनिवार्य ईएसजी प्रकटीकरण दायित्व हेतु **SFDR (Sustainable Finance Disclosure Regulation)** एवं टिकाऊ निवेश हेतु **The EU Sustainable Finance Action Plan** लागू किए।
- **The EU Taxonomy** एक वर्गीकरण प्रणाली है, जो पर्यावरणीय रूप से टिकाऊ आर्थिक गतिविधियों की एक सूची स्थापित करती है, जिसके तहत 2022 से वित्तीय कंपनियों को यह रिपोर्ट करना आवश्यक है कि उनके वित्तीय उत्पाद ईयू टैक्सोनॉमी के साथ कैसे और किस हद तक संरेखित हैं।

ईएसजी संकल्पना: भारतीय परिप्रेक्ष्य

जिन समस्याओं की प्रतिक्रिया के रूप में वैश्विक पटल पर ईएसजी संकल्पना का चलन बढ़ा, भारत में भी वैसी ही समस्याओं के समाधान एवं वैश्विक कदमताल मिलान स्वरूप ईएसजी गतिविधियों का विकास हुआ है।

हालांकि भारत में ईएसजी मुद्दों के नियंत्रण हेतु नियामक ढांचा किसी एक समेकित कानून के तहत संहिताबद्ध नहीं है; कई सारे कानून हैं जो ईएसजी मामलों को संबोधित करते हैं, जिनमें निम्नलिखित देखे जा सकते हैं:

- पर्यावरण संरक्षण- पर्यावरण संरक्षण अधिनियम,1986; जल (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम,1974 आदि;
- कर्मचारी लाभ- फ़ैक्टरी अधिनियम,1948; दुकानें और स्थापना कानून; बोनस और ग्रेच्युटी कानून आदि;
- कॉर्पोरेट प्रशासन- धनशोधन निवारण अधिनियम, 2002; भ्रष्टाचार निवारण अधिनियम, 1988; कंपनी अधिनियम, 2013; भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) अधिनियम,1992 आदि।

पिछले तीन दशकों ने भारत के आर्थिक प्रतिमान को मौलिक रूप से बदल दिया है। आर्थिक उदारीकरण और मुक्त बाज़ार व्यवस्था ने जैसे खेल के नियमों को पुनःपरिभाषित कर दिया है। कॉर्पोरेट भारत के लिए संरक्षित वातावरण से खुली प्रतिस्पर्धा में बदले हुए परिवेश में स्वयं को नए साँचे में ढालना चुनौतीपूर्ण रहा। इस परिवर्तन में कहीं भ्रष्टाचार तो कहीं दिवालियापन के मामले दिखे, तो कहीं कमज़ोर अभिशासन संरचनाएं उजागर हुईं। कई बड़ी सफल पारंपरिक कंपनियां विफल भी हो गईं। परंतु इन सब के बीच कई उद्योगों में नए उद्यमी खिलाड़ियों की एक नई नस्ल भी उभरी।

आज भारतीय व्यवसाय एवं उद्यमी किसी भी लिहाज़ से वैश्विक प्रचलन से कंधे से कंधा मिलाने के लिए उत्सुक भी हैं और सक्षम भी। भारतीय शासन एवं उद्योग दोनों ही तेज़ी से ईएसजी पहलुओं को अपनी समग्र व्यवसाय रणनीति में शामिल कर रहे हैं। भारत में, ईएसजी के ठोस विकास के लिए दो क्षण महत्त्वपूर्ण रहे हैं:-

- भारतीय कंपनी अधिनियम, 2013 के अंतर्गत कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) संबंधी रिपोर्टिंग व खर्च को अनिवार्य बनाना; जिसके तहत भारत में ₹5 अरब की शुद्ध संपत्ति या ₹10 अरब के टर्नओवर या ₹50 मिलियन के शुद्ध लाभ वाली कंपनियों हेतु कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) हेतु अपने शुद्ध लाभ का कम-से-कम **2%** भाग सीएसआर प्रयासों पर खर्च करना अनिवार्य हुआ।
- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं स्थिरता संबंधी रिपोर्टिंग हेतु **Business Responsibility and Sustainability Reporting (BRSR)** नामक मानक ढांचे का प्रयोग; जिसके तहत शीर्ष 1,000 लिस्टेड कंपनियों हेतु ईएसजी संबंधी प्रकटीकरण अनिवार्य बना।

ईएसजी: भविष्य

"We are the first generation to feel the effect of climate change and the last generation who can do something about it."

आज, जब हम मुड़कर देखें तो कई पर्यावरणीय एवं सामाजिक समस्याएं जिन्हें पहले हल्के में लिया जाता था, अब वे अत्याधिक गंभीरता से ली जा रही हैं। पृथ्वी ग्रह और

समाज की चिंता पहले कभी इतने बड़े पैमाने पर कॉर्पोरेट एजेंडे में नहीं रही, जितनी की आज है।

ऐसे कई कारण हैं जिनकी वजह से ईएसजी अब पहले से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। सर्वप्रथम, दुनिया जलवायु परिवर्तन जैसी कई पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना कर रही है, जिन पर तत्काल ध्यान देना अनिवार्य है। दूसरे, असमानता और मानवाधिकार जैसे सामाजिक मुद्दों संबंधी जागरूकता बढ़ी है। अंततः भ्रष्टाचार और कॉर्पोरेट पारदर्शिता जैसे अभिशासन पहलू पहले से कहीं अधिक लोकचर्चा के दायरे में हैं।

यूएन के **सतत विकास लक्ष्य (SDG)** भी 2030 तक हासिल किए जाने का निर्धारण है; इनमें गरीबी उन्मूलन, स्वास्थ्य-कल्याण, स्वच्छ ऊर्जा, ज़िम्मेदार उत्पादन व उपभोग, जलवायु संरक्षक कार्रवाई, लैंगिक समानता आदि जैसे ईएसजी मुद्दे शामिल हैं। इन लक्ष्यों की पूर्ति वैश्विक संवहनीयता एजेंडे में गंभीरता से योगदान देने हेतु देशों और कॉर्पोरेट्स पर भारी अंतर्राष्ट्रीय दबाव है।

बेहतर कॉर्पोरेट छवि निर्माण हेतु कंपनियों के लिए पर्यावरणीय मुद्दों के अतिरिक्त एक **सर्वांगी मानव संसाधन रणनीति** को अपनाना भी अनिवार्य हुआ है; जो गरिमा एवं सम्मानजनक कार्यस्थल निर्माण, उचित वेतन, लैंगिक समानता, भौतिक/मनोवैज्ञानिक सुरक्षा, दिव्यांगों हेतु रोज़गार अवसर, मानवाधिकार संरक्षण, सामाजिक न्याय एवं प्रतिनिधित्व और समावेशिता प्रदान करती हो।

भारत की बात करें तो भारत सरकार ने **COP-26 बैठक में 2070 तक भारत के NET ZERO EMISSIONS** स्थिति प्राप्त करने हेतु प्रतिबद्धता जताई है। भारतीय व्यवसायी अपनी कार्बन कटौती नीति द्वारा इस राष्ट्रीय उद्देश्य में अपनी सार्थक भूमिका निभाने को तत्पर हैं। भारतीय कंपनियां नवीन संवहनीय प्रौद्योगिकियों/प्रक्रियाओं के प्रयोग से संसाधनों की खपत को और अधिक कुशल बनाने, प्रदूषण को कम करने आदि में सहयोग कर रही हैं।

SDG लक्ष्यों की परिणति हेतु भी भारत एक राष्ट्र के रूप में पूर्ण व परम कटिबद्ध है।

भारतीय विनिर्माण और सेवा क्षेत्र कई वैश्विक कॉर्पोरेट्स की मूल्य श्रृंखला के एक प्रमुख भागीदार के रूप में भी उभर रहे हैं जिससे वे वैश्विक संवहनीयता उद्देश्यों की पूर्ति

में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक भी **Global Green Finance** में योगदान देने और भारत के वित्तीय क्षेत्र को जलवायु जोखिमों के विरुद्ध मज़बूत बनाने की दिशा में **Network for Greening the Financial System (NGFS)** में शामिल हुआ है। **भारतीय वित्तीय संस्थान एवं विशेषकर भारतीय बैंके** इसमें अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका को सकुशल निभाने हेतु तत्पर हैं।

निष्कर्ष

जहां एक ओर दुनिया अनिश्चितता एवं नए-नए जोखिमों से भरी और अस्थिर होती जा रही है, वहीं दूसरी ओर यह आज पहले की तुलना में कहीं अधिक जुड़ी हुई है; कॉर्पोरेट जगत को प्रभावित करने वाले रुझान तेज़ी से दुनिया भर में फैल रहे हैं, जिससे व्यवसायों पर एकदूसरे के साथ कदमताल कर चलने का प्रभाव भी है और भारी दबाव भी। अतः किसी भी सकारात्मक पहल की उपेक्षा, अनदेखी या अवहेलना कॉर्पोरेट के लिए घातक सिद्ध हो सकती है।

इन सभी कारकों का सार यही है कि **मज़बूत ईएसजी साख वाली कंपनियों का भविष्य उज्ज्वल** होना तय है। वास्तव में, कई निवेशक अब निवेश निर्णय लेते समय ईएसजी कारकों पर विचार करते हैं; जिस कारण **ईएसजी अनुरागी कॉर्पोरेट प्रवृत्तियों को अधिकाधिक बल मिलना** भी तय है।

हम विलंब से ही सही परंतु **Shareholder Wealth Creation से Stakeholder Value Creation की ओर** आगे बढ़ रहे हैं। **कभी केवल महत्तम लाभ (लोभ) की धुरी पर घूमता है कॉर्पोरेट जगत आज लोक, लोग और लाभ (Planet, People and Prosperity) की त्रयी पर खुद को आधारित करने के लिए बाध्य हुआ है; और ये मंगल भविष्य के शुभ संकेत हैं।**

*****

विधि चंद्रकांत जटनिया

पदनाम:- अधिकारी
संस्था का नाम:- केनरा बैंक
मोबाइल नं. :- 9428058126
ई-मेल:- vidhijataniya@canarabank.com

आखिर ईएसजी है क्या?

ईएसजी **पर्यावरण, सामाजिक और शासन** को दर्शाता है। इन्हें ईएसजी फ्रेमवर्क में स्तंभ कहा जाता है और 3 मुख्य विषय क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करता है, जिनमें कंपनियों को रिपोर्ट करना होता है। ईएसजी का मुख्य लक्ष्य कंपनी की दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में निहित सभी गैर-वित्तीय जोखिमों और अवसरों को पकड़ना है।

"अगर हमें पर्यावरण में थोड़ा सा भी सुधार लाना है तो केवल एक ही तरीका है इसमें सबको शामिल करना।"

- रिचर्ड रोजर्स

अन्य किन चुनौतियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है?

रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण का अभाव सीमाओं के पार ईएसजी सिद्धांतों, रूपरेखाओं और विचारों में सामंजस्य स्थापित करने में कठिनाई हो सकती है। अन्य चुनौतियां पारदर्शिता, स्थिरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित है। ईएसजी मानक भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग ढांचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएं पैदा कर सकते हैं। हालांकि ईएसजी मध्यम आकार और छोटी कंपनियों में अपना रास्ता बना रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने में बाधा हो सकती है क्योंकि उच्च पूंजीगत लागत और/ या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी। भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिए इन चिंताओं को संबोधित किया जाना चाहिए।

आगे का रास्ता क्या हो सकता है?

"ग्लोबल वार्मिंग से है खतरे में जान,
पर्यावरण की रक्षा करना सबकी शान।"

नीति निर्माताओं की भूमिका :

नीति निर्माताओं का लक्ष्य धीरे-धीरे निर्माण करना होगा अधिक व्यापक और व्यापक ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था, के उद्देश्य के साथ इसमें सभी सूचीबद्ध और गैर-सूचीबद्ध संस्थाएं शामिल है। और उन्हें ईएसजी reporting ढांचे के दायरे में लाना। ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का मतलब है। पर्याप्त प्रकटीकरण और रिपोर्टिंग तंत्र की बढ़ती आवश्यकता दीर्घकालिक टिकाऊ रिटर्न के लक्ष्यों की ओर झुकाव वाले बदलते निवेश रुझानों के साथ तालमेल बनाए रखने के लिए इसे लागू किया जाना चाहिए। जोखिम मूल्यांकन और उसे कम करने के उपाय शामिल करना। पर्यावरण, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियां।

मानकीकृत ईएसजी पैरामीटर:

मात्रात्मक और मानकीकृत खुलासे ईएसजी पैरामीटर हितधारकों को प्रदान करते हुए अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेंगे। वित्तीय एवं गैर-वित्तीय दोनों प्रकार की जानकारी और संगठन की रणनीति, शासन, प्रदर्शन और संभावनाओं के बारे में संक्षिप्त संचार, स्थिरता के मुद्दों पर अधिक पारदर्शिता प्राप्त करने के उद्देश्य के अनुरूप समय के साथ मूल्य पैदा करेगा।

निवेशकों और कंपनियों की भूमिका:

निवेशकों को न केवल बढ़े हुए वित्तीय रिटर्न को सुरक्षित करने की ओर उन्मुख होना चाहिए। अपने पोर्टफोलियो को सतत् विकास के साथ संरेखित करने के लिए तत्पर है। कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना जैसा कि यह खेलता है, कंपनियों का निवेश, निवेश के दृष्टिकोण से बेहद परिणामी होता जा रहा है।

आज समय की यही पुकार,
बंद करों पर्यावरण पर अत्याचार"

भारत में ईएसजी की आवश्यकता :

आज जब वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वायु प्रदूषण जैसे गंभीर पर्यावरण चुनौतियों के साथ-साथ गरीबी असमानता के साथ समाज कई चुनौतियों का सामना भारत देश कर रहा है, तब ऐसी चुनौतियों को संबोधित करने तथा सामाजिक न्याय को बढ़ावा देने हेतु कंपनियों में ईएसजी के मानदंडों को लागू कराना महत्त्वपूर्ण है।

वर्तमान एवं भविष्य :

वर्तमान परिप्रेक्ष्य पर दृष्टिपात करे तो ईएसजी अभी भी भारत में प्रारंभिक अवस्था में है और भविष्य में इस दिशा में बहुत कुछ किया जा सकता है और आज से ही हम यदि पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन पर कार्य करने लगे इस पर चर्चा करे, पहल करे तो आगे हम ईएसजी के मानदंडों पर अवश्य ही भारत में एक नई क्रांति या परिवर्तन ला सकेंगे जो भारत की विकास संस्था में महत्त्वपूर्ण है।

"पक्षी पर्यावरण के संकेतक हैं। यदि वे खतरे में हैं तो हम जानते है कि हम भी जल्द ही खतरे में होंगे।"

- रोजर टोरी पीटरसन

ईएसजी रणनीति लागू करने के आसान कदम :

संगठनों के लिए पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) योजना के लिए एक निष्क्रिय दृष्टिकोण लेने का समय बीत चुका है। अब पहले से कहीं अधिक, निवेशक, कर्मचारी और ग्राहक कंपनियों की ईएसजी रणनीतियों, प्रथाओं एवं प्रदर्शन पर न केवल ध्यान दे रहे है किन्तु निवेश करते वक्त भी ख्याल रख रहे है और ईएसजी से ही तय किया जाता है कि कहां और किसके साथ साझेदारी करनी है या निवेश करना है।

ईएसजी कार्यक्रम का निर्माण हो सकता है जब आप "ई," "एस" और "जी" बनाने वाले सभी संभावित विषयों पर विचार करते हैं और वास्तविकता यह है कि ईएसजी एक कंपनी के सभी कार्यात्मक क्षेत्रों को कवर करता है।

1. भौतिकता मूल्यांकन का संचालन करना :

एक भौतिकता मूल्यांकन ईएसजी रणनीति की नींव होनी चाहिए। उचित मूल्यांकन के बिना, कंपनियों के पास अक्सर तदर्थ प्रयास होते हैं या आम सहमति प्राथमिकताओं पर निरंतर ध्यान केंद्रित नहीं किया जाता है। इसका उद्देश्य उन प्रमुख ईएसजी मुद्दों और अवसरों पर ध्यान केंद्रित करना है, जो आपकी कंपनी के व्यावसायिक प्रदर्शन के साथ -साथ आपके हितधारकों को प्रभावित करने की सबसे अधिक संभावना रखते है। दिन के अंत में सभी ईएसजी विषय महत्त्वपूर्ण है, लेकिन वे सभी एक ही प्राथमिकता नहीं रख सकते है।

2. वर्तमान स्थिति का आकलन करें

एक बार जब आप जानते हैं कि कौन से ईएसजी विषयों को प्राथमिकता देनी है, तो

आपकी कंपनी में मौजूदा कार्यक्रमों, नीतियों, मैट्रिक्स और व्यस्तताओं का आकलन करना महत्त्वपूर्ण है। आप अपने संगठन के भीतर क्रॉस-फंक्शनल हितधारकों के साथ सीधे काम करके ऐसा कर सकते हैं जिनके पास प्रत्येक प्राथमिकता ईएसजी विषय में विशेषज्ञता है। हम पहले रिपोर्ट, नीतियों और डेटा सिस्टम से जानकारी इकट्ठा करने की सलाह देते हैं, आंतरिक हितधारकों के साथ साक्षात्कार द्वारा पूरक होते हैं ताकि बारीकियों का पालन किया जा सके और अधिक विस्तृत अंतर्दृष्टि एकत्र की जा सके।

यह मूल्यांकन आपको अपनी कंपनी की वर्तमान स्थिति का जायजा लेने और संगठन भर में ईएसजी की सापेक्ष परिपक्वता को मापने की अनुमति देता है।

3. उद्देश्य और लक्ष्य निर्धारित करें

उद्देश्यों पर निर्णय लेने के लिए एक स्वाभाविक अगला कदम लक्ष्य निर्धारित करना है। लक्ष्य आपकी गतिविधियों के प्रभाव को मापने, प्रमुख क्षेत्रों में कंपनी के प्रदर्शन में सुधार करने, अपनी कंपनी को साथियों के बीच अच्छी तरह से स्थान देने और व्यवसाय में ईएसजी प्रथाओं को एकीकृत करने का एक शानदार तरीका है। सार्वजनिक लक्ष्य हितधारकों को सूचित करने और आपकी महत्त्वकांक्षाओं की गंभीरता को सुदृढ़ करने में भी मदद करते है।

ईएसजी में चुनौतियां :

अनुपालन से संबंधित चुनौतियां, कमजोर वातावरण, कंपनी द्वारा अनुपालन करने के लिए भारत का नियम को वातावरण पूरी तरह से अनुरूप नहीं हो सका है इससे पारदर्शिता की कमी हो सकती है।

भारत में विविध सांस्कृतिक परिदृश्य है और कुछ पारंपारिक व्यवस्था भी है। यहां कुछ ऐसे रीति रिवाज और परंपराएं है जिसमें सिद्धांतों के अनुरूप नहीं हो सकती, इन कंपनियों में लागू करने के लिए कंपनियों को सांस्कृतिक कारकों में कुछ परिवर्तन करने की आवश्यकता हो सकती है।

आईआईसीए सर्टिफाइड ईएसजी प्रोफेशनल- इम्पैक्ट लीडर प्रोग्राम:

अभी हाल ही में भारत में 12 जुलाई, 2023 को आईआईसीए सर्टिफाइड ईएसजी प्रोफेशनल: इम्पैक्ट लीडर प्रोग्राम के दूसरे बैच का उद्घाटन पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय की सुश्री लीना नंदन द्वारा किया गया। ऐसे प्रोग्राम सबसे

पहले तो इस बात पर इंगित करते है की ईएसजी को लेकर भारत देश भी अब बहुत तेजी से बदल रहा है।

इसी प्रोग्राम में आईआईसीए के महानिदेशक और सीईओ श्री प्रवीण कुमार ने कहा कि आईआईसीए प्रमाणित ईएसजी प्रोफेशनल-इम्पैक्ट लीडर प्रोग्राम के फाउंडेशन बैच को उद्योग से बहुत सराहना मिली है। उन्होंने कहा कि ईएसजी कार्यक्रम कॉर्पोरेट पदाधिकारियों की आईआईसीए की विरासत को आगे बढ़ाता है, क्षमता निर्माण के माध्यम से उद्योगों में परिवर्तन की जरूरतों को पूरा करने के लिए समय पर पहल करने के लिए सक्रिय भूमिका निभा रहा है। उन्होंने जोर देकर कहा कि कॉर्पोरेट्स द्वारा ईएसजी अपनाने से उन्हें वैश्विक अर्थव्यवस्था के बदलते स्वरूप में प्रतिस्पर्धा करने में मदद मिलेगी। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि आईआईसीए ने एक 'नेशनल एसोसिएशन ऑफ़ इम्पैक्ट लीडर्स' भी बनाया है जो केवल ईएसजी पेशेवरों के लिए सदस्यता-आधारित संघ है और आईआईसीए द्वारा प्रमाणित है।

25 मई, 2022 को 'हिंदू बिजनेसलाइन' में "टेकिंग ईएसजी रेपोर्टिंग टू द नैक्सट लैवल" के मुताबिक पिछले कुछ ही वर्षो में "ईएसजी फ़ंड" की परिसंपति का आकार पाँच गुना बढ़कर 12,300 करोड़ का हो गया है।

ईएसजी रिपोर्टिंग का महत्त्व :

कॉर्पोरेट पारदर्शिता में बढ़ोत्तरी :

यह पारंपरिक वित्तीय मेट्रिक्स से परे संगठनात्मक प्रकटीकरण को व्यापक बनाता है और पर्यावरण पर कॉर्पोरेट पारदर्शिता बढ़ाता और सामाजिक मेट्रिक्स स्थिरता रिपोर्टिंग हितधारकों द्वारा कंपनी के प्रदर्शन के संतुलित और समझने योग्य मूल्यांकन की अनुमति देती है। कॉर्पोरेट जवाबदेही को सुविधाजनक बनाना, जैसा कि कॉर्पोरेट प्रशासन संहिता के तहत सिद्धांतों में से एक द्वारा प्रख्यापित किया गया है।

जोखिम प्रबंधन को मजबूत करता है :

स्थिरता रिपोर्टिंग सूचीबद्ध कंपनियों को उभरते जोखिम क्षेत्रों पर विचार करने और प्रस्तुत अवसरों की पहचान करने की अनुमति देती है। वे जोखिम जिन्हें अन्य विश्लेषणात्मक और सिस्टम संचालित दृष्टिकोणों द्वारा अनदेखा कर दिया जाता है।

हितधारकों के साथ संचार में सुधार :

प्रकटीकरण को वित्तीय प्रकटीकरण से आगे बढ़ाकर पर्यावर्णीय और सामाजिक गैर-वित्तीय प्रकटीकरण को शामिल करना सहभागिता और प्रभाव, कंपनी गैर-वित्तीय प्रदर्शन को मापने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है। गैर-वित्तीय जोखिमों के प्रबंधन में आने वाले अवसर और खतरॉन के बारे में यह मार्गदर्शन भी देता है।

भारत में नई रिपोर्टिंग आवश्यकताएं :

भारत ने बाजार पूंजीकरण के आधार पर देश की शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों के लिए नई पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) रिपोर्टिंग आवश्यकताओं की शुरुआत की है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) का कहना है कि खुलासा एक नए प्रारूप, अर्थात् व्यावसायिक उत्तरदायित्व और स्थिरता रिपोर्ट (बीआरएसआर) के माध्यम से किया जाना चाहिए। वित्त वर्ष 2021-22 के लिए बीआरएसआर रिपोर्टिंग को स्वैच्छिक बना दिया गया है, लेकिन वित्त वर्ष 2022-23 से यह अनिवार्य होगा।

भारत में ईएसजी रिपोर्टिंग परिदृश्य :

भारत एक जागरूक आकांक्षी के रूप में उभरा है और उसने जलवायु परिवर्तन से निपटने और आंतरिक रूप से अपनी कई नियामक योजनाओं में संयुक्त राष्ट्र के सतत् विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को पूरा करने के लिए महान पहल करने का वादा और क्षमता दिखाई है, जैसे कि 2021 में सेबी द्वारा बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग (बीआरएसआर) की शुरुआत और स्थिरता रिपोर्टिंग प्रारूप सेबी द्वारा शुरू किए गए और जिम्मेदार व्यवसाय आचरण (एनजीआरबीसी) के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देशों के नौ सिद्धांतों पर आधारित है।

जलवायु परिवर्तन पर पार्टियों का 2021 सम्मेलन (सीओपी 26) हाल ही में ग्लासगो में आयोजित किया गया था, जिसमें वैश्विक समुदाय ने जलवायु परिवर्तन को प्रबंधित करने और इसके प्रभाव को कम करने के तरीकों पर बातचीत की, साथ ही यह सुनिश्चित किया कि रोजगार, खाद्य सुरक्षा और जीवन स्तर पर कोई प्रतिकूल प्रभाव महसूस न हो। बाढ़, सूखा, तूफान, बढ़ते तापमान और अन्य जलवायु परिवर्तन से संबंधित घटनाओं जैसे गंभीर भौतिक घटनाओं से बढ़ते खतरों के कारण, जलवायु परिवर्तन से निपटना हमारे लिए सबसे जरूरी कार्यों में से एक है, खासकर भारत के

लिए। जलवायु परिवर्तन, अनुकूलन और शमन की दिशा में तत्काल और परिणामी कदम उठाना आवश्यक हो गया है; अन्यथा, वैश्विक समुदाय को खरबों डॉलर और लाखों नौकरियों का नुकसान होगा।

इस प्रकार, CoP26 में भारत ने 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन हासिल करने का वादा किया है। यह पिछले कुछ वर्षों में भारतीय नियामकों द्वारा अपनाई गई नीतियों के अनुरूप है, जो दर्शाता है कि भारत ने डीकार्बोनाइजेशन की दिशा में एक आक्रामक कदम उठाया है। बाज़ार के खिलाड़ियों को व्यवसाय करने के स्थायी तरीके अपनाने के लिए बाध्य करना। उसी के संकेतकों में से एक व्यापक स्थिरता और पर्यावरण, सामाजिक और शासन ("ईएसजी") से संबंधित खुलासे की शुरूआत है, जो कंपनियों को पारंपरिक वित्त-केंद्रित मॉडल से परे देखने के लिए प्रेरित करता है।

जय हिन्द
जय हिन्दी
जय भारत

*****

डॉ. बी. एन. शर्मा

पदनाम:- वैज्ञानिक/अभियंता - एसजी
संस्था का नाम:- अंतरिक्ष उपयोग केंद्र, इसरो
मोबाइल नं. :- 9687596277
ई-मेल:- bns@sac.isro.gov.in

प्रस्तावना:

सहस्राब्दियों से व्यवसाय/व्यापार हमारे सामाजिक ताने-बाने का अहम हिस्सा रहा है। हमेशा से सिर्फ़ वही व्यवसाय या व्यापारी सफल हो पाता है जो अपने ग्राहकों का विश्वास जीत पाता है और पूंजीवादिता से ऊपर उठकर सामाजिक जीवन में अपना योगदान करता है। लालच से प्रेरित कोई भी व्यवसाय या व्यावसायिक संस्थान या व्यक्ति ज्यादा समय तक समाज में टिक नहीं पाता है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय भी कई व्यावसायियों ने अपने व्यापार से ऊपर उठकर देशहित में तन मन धन से योगदान दिया, इससे उनके व्यवसाय में तात्कालिक हानि तो हुई पर दीर्घकालिक लाभ प्राप्त हुआ। परन्तु बहुत से ऐसे भी व्यवसायी रहे जिन्होंने अपने व्यवसाय को बढ़ाने के लिए अंग्रेजों से हाथ मिलाया और स्वतंत्रता संग्राम में बाधा उत्पन्न की। यह स्थिति कमोवेश हर मानवीय समाज में हमेशा से रही है। यही कारण है की व्यावसायीयों के व्यवहार और इरादों को हमेशा से संदेह और अविश्वास की दृष्टि से देखा जाता रहा। जब भी व्यवसाय में कोई संदिग्ध या बेईमानी का कार्य करता है तो व्यवसाय के प्रति अविश्वास और भी बढ़ जाता है। जबकि सरकारी नियामक लगातार अनुचित व्यवहार को कम करने के तरीकों की तलाश करते हैं, व्यापारिक संस्थानों द्वारा प्रमुखता से नैतिक उल्लंघन करने की कहानियां समाचार की सुर्खियाँ बटोरती रहती हैं। सदी की शुरुआत में वैश्विक व्यापार को प्रभावित करने वाले नैतिक घोटालों ने व्यावसायिक नैतिकता पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। व्यवसाय संचालन का ध्यान अब शेयरधारकों को लाभ प्रदान करने तक ही सीमित नहीं है, बल्कि अब इसमें हितधारकों की बढ़ती श्रृंखला को लाभ प्रदान करना भी शामिल है। इसी सन्दर्भ में, ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) का कार्पोरेट क्षेत्र में पालन होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाता है। इस लेख में ईएसजी को परिभाषित करते हुए उसके महत्त्व पर चर्चा की गई है तथा उसके वर्तमान स्वरुप एवं भविष्य में उसके संभावित स्वरुप को रेखांकित किया गया है।

ईएसजी क्या है और कार्पोरेट क्षेत्र में उसका महत्त्व:

चिर निरंतर से व्यावसायीयों की सफलता या विफलता उनके पर्यावरणीय, सामाजिक एवं राजकीय संबंधों के आधार पर होती रही है। परन्तु, ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और शासन) शब्द की जड़ें 1960 के दशक में पड़ी, जिसने लोकप्रियता हासिल की है क्योंकि व्यावसायिक संस्थान नैतिक जिम्मेदारी से काम करने के अपने प्रयासों में अधिक सक्रिय हो गए थे। ईएसजी इस बात से निर्धारित होता है कि कोई व्यवसाय पर्यावरण के साथ कैसे संपर्क करता है, कर्मचारियों, समुदायों और ग्राहकों की देखभाल कैसे करता है और खुद को नियंत्रित कैसे करता है। एक संकीर्ण शेयरधारकिय परिप्रेक्ष्य से ऊपर उठकर एक व्यापक हितधारक परिप्रेक्ष्य में परिवर्तन के लिए प्रणालीगत स्तर पर सोचने, प्रबंधन करने और प्रभावित करने में सक्षम नेताओं की आवश्यकता होती है। आने वाले समय में व्यापारिक संस्थानों को गतिशील प्रणाली एवं नेतृत्व शैली तथा कौशल विकसित करना होगा जो भविष्य पर आधारित हो न कि अतीत पर। अतीत की कार्रवाइयाँ और रणनीतियाँ अब काम नहीं करतीं, यह सुनिश्चित करने के लिए नए तरीकों की आवश्यकता है कि संगठन जीवित रहें और फलते-फूलते रहें।

इसके बाद ईएसजी शब्द को 2004 में छपी "हू केयर्स विंस" नाम की रिपोर्ट ने और अधिक लोकप्रिय बनाया। यह रिपोर्ट पहली बार 18 बैंकों और निवेश फर्मों के एक समूह द्वारा प्रकाशित की गई थी, जिसे संयुक्त राष्ट्र द्वारा आयोजित किया गया था। रिपोर्ट में परिसंपत्ति प्रबंधन, ब्रोकरेज सेवाओं और संबंधित अनुसंधान गतिविधियों में ईएसजी मुद्दों को बेहतर ढंग से शामिल करने के बारे में सिफारिशें पेश की गईं थी। इसके एक साल बाद तथाकथित फ्रेशफील्ड्स रिपोर्ट आई, जो एक अन्य संयुक्त राष्ट्र-समर्थित दस्तावेज था, जिसे लंदन स्थित कानूनी फर्म फ्रेशफील्ड्स ब्रुकहॉस डेरिंगर द्वारा तैयार किया गया था और निवेश निर्णयों में ईएसजी मानदंडों को एकीकृत करने के लिए एक कानूनी ढांचे की रूपरेखा तैयार की गई थी।

पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) एक ढांचा है जिसका उपयोग किसी संगठन की व्यावसायिक प्रथाओं और विभिन्न स्थिरता और नैतिक मुद्दों पर प्रदर्शन का आकलन करने के लिए किया जाता है। यह उन क्षेत्रों में व्यावसायिक जोखिमों और अवसरों को मापने का एक तरीका भी प्रदान करता है। पूंजी बाजार में, कुछ निवेशक कंपनियों का मूल्यांकन करने और उनकी निवेश योजनाओं को निर्धारित करने में मदद करने के लिए ईएसजी मानदंड का उपयोग करते हैं, जिसे ईएसजी निवेश के रूप में जाना जाता है।

व्यावसायिक स्थिरता, नैतिकता और कॉर्पोरेट प्रशासन को आम तौर पर गैर-वित्तीय प्रदर्शन संकेतक माना जाता है। ईएसजी कार्यक्रम की भूमिका कंपनी के प्रभाव को प्रबंधित करने के लिए जवाबदेही और सिस्टम और प्रक्रियाओं के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करना होता है, जैसे कि इसके कार्बन पदचिह्न और यह कैसे अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ता एवं अन्य हितधारकों से व्यवहार करता है आदि। ईएसजी पहल व्यापक व्यावसायिक स्थिरता प्रयासों में भी योगदान देती है जिसका उद्देश्य जिम्मेदार कॉर्पोरेट प्रबंधन और व्यावसायिक रणनीतियों के आधार पर कंपनियों को दीर्घकालिक सफलता के लिए स्थापित करना होता है।

कॉर्पोरेट ईएसजी की पहल, कॉर्पोरेट संस्कृति में नैतिकता, मूल्यों और वैश्विक चिंताओं को एकीकृत करके पूंजीवाद के नकारात्मक दुष्प्रभावों और छवि को दूर करने की बढ़ती प्रवृत्ति को दर्शाती है। उच्च ईएसजी रेटिंग वाली कंपनियां प्रतिस्पर्धियों से बेहतर प्रदर्शन करती हैं और उनकी पूंजी लागत कम होती है (फुल्टन एट अल., 2012)। निवेशक और ऋणदाता तेजी से ऐसे व्यवसायों में निवेश करना और पैसा उधार देना चाहते हैं जो जिम्मेदारी से व्यवहार करते हैं। वित्तीय निर्णय लेते समय वे व्यावसायिक जोखिम और विकास के अवसरों का आकलन करने के लिए अक्सर ईएसजी रिपोर्ट का उपयोग करते हैं। इसलिए, जो व्यापारिक संस्थान समकालीन आर्थिक माहौल में जीवित रहना चाहते हैं, उन्हें वास्तविक ईएसजी पहल और कार्यक्रमों को विकसित और कार्यान्वित करना चाहिए।

नैतिक मूल्यों वाले व्यावसायिक संसथान हमेशा ईमानदार और सम्मानजनक होते हैं, दूसरे लोगों के हितों को अपने हितों से ऊपर रखते हैं, निष्पक्ष और न्यायसंगत निर्णय लेते हैं और सामुदायिक निर्माण के लिए समर्पित होते हैं। ऐसे संस्थान हितधारकों, भावी पीढ़ियों और प्राकृतिक पर्यावरण की जरूरतों को स्वीकार और प्रतिक्रिया देकर नैतिक दायरे का विस्तार करते हैं (पीटरलिन एट अल।, 2015)। यही नैतिक जिम्मेदारी ईएसजी की नींव बनाता है। जो संस्थान नैतिक एवं सिस्टम नेतृत्व का प्रदर्शन करते हैं, वे ईएसजी-निर्देशित व्यवसायों को महत्त्वपूर्ण आर्थिक, पर्यावरणीय और सामाजिक सफलता की ओर ले जाने में सक्षम होते हैं। जो लोग ऐसा नहीं करते उनके भविष्य के व्यावसायिक समाचारों की सुर्खियों में आने की अधिक संभावना होती है।

ईएसजी के लिए मानदंड क्या हैं?

ईएसजी का प्रत्येक पहलू टिकाऊ और नैतिक प्रथाओं पर कंपनी का फोकस बढ़ाने के प्रयास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यहां कंपनियों और निवेशकों द्वारा उपयोग

किए जाने वाले सामान्य ईएसजी मानदंडों का विवरण दिया गया है:

पर्यावरण:

पर्यावरण पर किसी संगठन के समग्र प्रभाव और पर्यावरणीय मुद्दों, जैसे जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के उपायों के कारण संभावित जोखिमों और अवसरों पर विचार शामिल होता है। पर्यावरणीय कारकों के उदाहरण जो ईएसजी मानदंड हो सकते हैं उनमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- ऊर्जा की खपत और दक्षता
- ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन सहित कार्बन पदचिह्न
- कचरे का प्रबंधन
- वायु एवं जल प्रदूषण
- जैव विविधता हानि
- वनों की कटाई
- प्राकृतिक संसाधनों की कमी

ब) सामाजिक

ईएसजी के तहत सामाजिक कारक बताते हैं कि एक कंपनी व्यक्तियों के विभिन्न समूहों - कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों, समुदाय के सदस्यों और अन्य के साथ कैसा व्यवहार करती है। उपयोग किए गए मानदंडों में ये उदाहरण शामिल हैं:

- कर्मचारियों के लिए उचित वेतन, जिसमें जीवन निर्वाह वेतन भी शामिल है
- विविधता, समानता और समावेशन (डीईआई) कार्यक्रम
- कर्मचारी अनुभव और जुड़ाव
- कार्यस्थल स्वास्थ्य और सुरक्षा
- डेटा सुरक्षा और गोपनीयता नीतियां
- ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ उचित व्यवहार
- ग्राहक संतुष्टि का स्तर
- सामुदायिक संबंध, जिसमें संगठन का उन स्थानीय समुदायों से संबंध और उन पर प्रभाव शामिल है जिनमें वह संचालित होता है
- गरीबों और वंचित समुदायों की मदद करने वाली परियोजनाओं या संस्थानों को वित्त पोषण
- मानवाधिकारों और श्रम मानकों के लिए समर्थन

स) शासन

ईएसजी के तहत शामिल शासन कारक इस बात की जांच करते हैं कि कोई कंपनी नियमों, उद्योग की सर्वोत्तम प्रथाओं और कॉर्पोरेट नीतियों के अनुपालन को बनाए रखने के लिए आंतरिक नियंत्रण और प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करके खुद को कैसे नियंत्रित करती है। उदाहरणों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- कंपनी का नेतृत्व और प्रबंधन
- बोर्ड की संरचना, इसकी विविधता और संरचना सहित
- कार्यकारी मुआवजा नीतियां
- वित्तीय पारदर्शिता और व्यावसायिक अखंडता
- विनियामक अनुपालन और जोखिम प्रबंधन पहल
- नैतिक व्यवसाय प्रथाएँ
- भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, हितों के टकराव और राजनीतिक दान और पैरवी पर नियम
- मुखबिर कार्यक्रम

ईएसजी के फायदे:

- निवेश रिटर्न और स्थिरता प्राप्त होती है
- ईएसजी अतिरिक्त वृद्धि के लिए नए ग्राहकों को आकर्षित कर सकता है
- ईएसजी निवेश कंपनियों को अन्य सकारात्मक निवेश निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है
- ईएसजी पहल वाले संगठन पर्यावरणीय मुद्दों और नैतिक प्रथाओं की एक विस्तृत श्रृंखला पर ध्यान केंद्रित करते हैं
- ईएसजी कंपनियों को उच्च गुणवत्ता वाले कर्मचारियों को आकर्षित करने और बनाए रखने में मदद करता है
- ईएसजी लागत में कटौती कर सकता है

ईएसजी के नुकसान:

- एक प्रकार का ईएसजी सभी व्यवसायों के लिए उचित नहीं हो सकता है
- ईएसजी को व्यवसाय केन्द्रित होना पड़ता है, यद्यपि कुछ सामान दृष्टिकोण का पालन हो सकता है
- ईएसजी रणनीतियाँ जो प्रामाणिक नहीं हैं, उलटा असर डाल सकती हैं
- शेयर बाज़ार के मजबूत प्रदर्शन की गारंटी नहीं है, क्योंकि शेयर बाजार को

प्रभावित करने वाले दुसरे के जटिल घटक भी होते हैं

- विभिन्न ईएसजी मानदंडों पर विस्तृत प्रदर्शन रिपोर्टिंग चुनौतीपूर्ण हो सकती है

भारत में ईएसजी क्यों महत्त्वपूर्ण है?

2021 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन के पेरिस समझौते में, भारत के प्रधान मंत्री ने 2070 तक शुद्ध शून्य उत्सर्जन प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्धता जताई है। तदनुसार, कॉर्पोरेट संस्थाओं को पर्यावरण की सुरक्षा, विभिन्न हितधारकों के हितों और व्यावसायिक स्थिरता के लिए ईएसजी सिद्धांतों को एकीकृत करना होगा। ईएसजी-संचालित पूंजी के खरबों डॉलर के वैश्विक पूल से प्रेरित होकर, भारतीय कंपनियां तेजी से ईएसजी को अपनी समग्र व्यापार रणनीति में शामिल कर रही हैं। वे स्वीकार करते हैं कि उनकी ज़िम्मेदारियाँ केवल मौद्रिक रिटर्न तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सकारात्मक सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभाव डालने तक फैली हुई हैं। ईएसजी अपनाने से कॉर्पोरेट विकास को बढ़ावा मिलेगा, सार्वजनिक छवि में सुधार होगा और कंपनियों को कम लागत पर पूंजी जुटाने में मदद मिलेगी।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का वर्तमान स्थिति:

ईएसजी पर जोर तेजी से बढ़ रहा है क्योंकि प्रमुख संस्थागत निवेशक यह स्पष्ट कर रहे हैं कि वे उम्मीद करते हैं कि जिन कंपनियों के पास वे हैं वे ईएसजी मानदंडों के प्रति दृढ़ता से प्रतिबद्ध होंगी। 2017 के प्रॉक्सी सीज़न के दौरान, स्टेट स्ट्रीट ग्लोबल एडवाइजर्स (एसएसजीए) ने 400 कंपनियों में निदेशकों के पुन: चुनाव के खिलाफ मतदान किया, जिनके बारे में एसएसजीए ने कहा कि वे अपने सभी पुरुष बोर्डों में महिलाओं को नियुक्त करने के लिए कोई महत्त्वपूर्ण प्रयास करने में विफल रहीं। यह 475 संस्थानों के वैश्विक सर्वेक्षण के नतीजों के बाद आया जिसमें निजी और सार्वजनिक पेंशन फंड, बंदोबस्ती, फाउंडेशन और आधिकारिक संस्थान शामिल थे।

इस प्रवृत्ति का एक और उदाहरण जलवायु परिवर्तन के जवाब में एक्सॉनमोबाइल एक्सओएम के शेयरधारकों द्वारा कंपनी के प्रति अवज्ञा करना था। मई 2017 में, एक्सॉनमोबाइल के 62% शेयरधारकों ने दुनिया की सबसे बड़ी तेल और गैस कंपनीको अपने व्यवसाय पर जलवायु परिवर्तन के प्रभावों पर रिपोर्ट करने के लिए प्रबंधन की सिफारिशों के खिलाफ मतदान किया। यह प्रतिक्रिया पेरिस जलवायु समझौते के बाद हुई।

ईएसजी को संबोधित करने के लिए अलग-अलग रूप-रेखा हाल के वर्षों में उभरी हैं क्योंकि ईएसजी कॉर्पोरेट क्षेत्र में अब मुख्यधारा में है। पर्यावरण संसाधन प्रबंधन के एक भागीदार, माइक वालेस ने कहा कि, "हालांकि यह भ्रमित करने वाला और भारी लग सकता है, यह वास्तव में हमारे क्षेत्र के विकास और सोच की एक तार्किक प्रगति है। कई रूप-रेखाओं में से, जीआरआई, सीडीपी, एसएएसबी, टीसीएफडी और डब्ल्यूडीआई आज सबसे अधिक उपयोग किए जाते हैं।

ग्लोबल रिपोर्टिंग इनिशिएटिव (जीआरआई) की स्थापना 1997 में कंपनियों के लिए एक जवाबदेही ढांचा बनाने के लिए की गई थी ताकि वे अपने हितधारकों को अपनी जिम्मेदार पर्यावरणीय व्यावसायिक प्रथाओं को प्रदर्शित कर सकें। जीआरआई ने ईएसजी शब्द को लागू करना शुरू किया और 2009 में इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया, ईएसजी शब्द सामने आने के कुछ वर्ष बाद, कई निवेशक, व्यवसाय और सरकारें आज जलवायु परिवर्तन, मानवाधिकार, शासन और सामाजिक कल्याण जैसे प्रभावों को व्यक्त करने में जीआरआई के ईएसजी ढांचे का उपयोग करते हैं।

कार्बन प्रकटीकरण परियोजना (सीडीपी) 2000 में शुरू हुई जिसका उद्देश्य एक वैश्विक आर्थिक प्रणाली बनाना है जो जलवायु परिवर्तन से रक्षा करती है। पर्यावरणीय रिपोर्टिंग और जोखिम प्रबंधन को प्राथमिकता देने के लिए व्यवसायों को स्थानांतरित करके पूंजी बाजार को बदलने के लिए सीडीपी ढांचे की रचना की गई। 2002 में, सीडीपी ने अपना पर्यावरण प्रकटीकरण कार्यक्रम स्थापित किया और तब से 800 शहरों और 120 राज्यों और क्षेत्रों में 8,400 से अधिक कंपनियों के लिए मंच बन गया है।

सस्टेनेबिलिटी अकाउंटिंग स्टैंडर्ड्स बोर्ड (एसएएसबी) ने 2011 में ऐसे मानकों को विकसित करना शुरू किया जो स्थिरता और वित्तीय बुनियादी सिद्धांतों दोनों को प्रदर्शित करते हैं। रूपरेखा का लक्ष्य यह था कि "निवेशक महत्त्वपूर्ण सामाजिक और पर्यावरणीय मुद्दों पर प्रदर्शन की तुलना कर सकें, और पूंजी को सबसे टिकाऊ परिणामों के लिए निर्देशित किया जा सके"। आज की स्थिति के अनुसार, एसएएसबी वित्तीय रूप से महत्त्वपूर्ण जानकारी पर ध्यान केंद्रित करता है जो प्रति उद्योग अधिक विशिष्ट रूप से परिभाषित होती है। एसएएसबी का यह पहलू इसे अन्य रूप-रेखाओं से अलग करता है।

वैश्विक वित्तीय प्रणाली में जलवायु पर आगे विचार करने के प्रयास में माइकल ब्लूमबर्ग के अध्यक्ष के रूप में जलवायु-संबंधित वित्तीय प्रकटीकरण (टीसीएफडी) पर टास्कफोर्स दिसंबर 2015 में आया था। टीसीएफडी कंपनियों को अपने जलवायु-संबंधी वित्तीय जोखिमों, जिसमें भौतिक, दायित्व और संक्रमण जोखिम शामिल हैं, को हितधारकों को रिपोर्ट करने का एक तरीका प्रदान करता है। फरवरी 2020 तक, $138.8 ट्रिलियन एयूएम वाली 1,000 से अधिक सार्वजनिक और निजी कंपनियों ने अपना समर्थन प्रदर्शित किया है।

अंत में, वर्कफोर्स डिस्क्लोजर इनिशिएटिव (डब्ल्यूडीआई) 2016 में यूके में "जिम्मेदार निवेश" गैर-लाभकारी शेयरएक्शन द्वारा बनाया गया था। सीडीपी के अनुरूप बनाया गया ढांचा, संस्थान के निवेशकों को सार्थक जानकारी प्रदान करने के प्रयास में प्रत्यक्ष कर्मचारियों और आपूर्ति श्रृंखला श्रमिकों दोनों के प्रबंधन पर डेटा एकत्र करता है। 2019 तक, WDI पर 137 निवेशकों के हस्ताक्षर थे और 118 कंपनियां फ्रेमवर्क का उपयोग कर रही थीं।

ईएसजी निवेशकों के बढ़ते समूह और डेटा की बढ़ती मांग को पूरा करने के लिए सूचकांक प्रदान करने वाली रेटिंग एजेंसियों ने ईएसजी कारकों का मूल्यांकन करने के लिए अपनी स्वयं की रेटिंग बनाई है। ईएसजी के लिए मौजूदा बाजार पर हावी होने वाली चार प्रमुख रेटिंग एजेंसियों में एमएससीआई, सस्टेनलिटिक्स, रिरिस्क और नई उभरती आईएसएस शामिल हैं।

भारत में ईएसजी कार्यान्वयन की स्थिति

उद्योग और ऊर्जा जैसे उच्च उत्सर्जन वाले क्षेत्रों की कंपनियों को सरकार द्वारा कड़ी जांच का सामना करना पड़ता है। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने भी अपनी व्यावसायिक जिम्मेदारी और स्थिरता रिपोर्टिंग (बीआरएसआर) पहल के तहत शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों के लिए ईएसजी खुलासे को अनिवार्य बना दिया है। भारत में ₹5 अरब की कुल संपत्ति, ₹10 अरब के टर्नओवर या ₹50 मिलियन के शुद्ध लाभ वाली कंपनियों के लिए कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) के लिए एक परिभाषित जनादेश है। इन कंपनियों को अपने शुद्ध लाभ का कम से कम 2% सीएसआर प्रयासों पर खर्च करना होगा और वैश्विक ईएसजी निवेशकों और फाइनेंसरों से पूंजी एकत्र करने के लिए अपने ईएसजी प्रोफाइल का खुलासा करना होगा।

कोविड के बाद, भारत के बैंकिंग और गैर-बैंकिंग क्षेत्रों ने तत्काल अपना ध्यान सतत विकास पर केंद्रित कर दिया है। भारतीय रिज़र्व बैंक वैश्विक हरित वित्त में योगदान देने और भारत के वित्तीय क्षेत्र को नीति निर्माण और जलवायु जोखिम लचीलापन विकास की दिशा में आगे बढ़ाने के लिए नेटवर्क फॉर ग्रीनिंग द फाइनेंशियल सिस्टम (एनजीएफएस) में शामिल हुआ। बैंक ने जलवायु जोखिम मुद्दों के समाधान के लिए तनाव परीक्षण, रणनीति निर्माण, क्षमता निर्माण और जोखिम प्रशासन संरचना पर भी ध्यान केंद्रित किया। इसके अलावा, भारतीय स्टेट बैंक ने कंपनियों के लिए ईएसजी-अनुपालक ऋण नीतियां तैयार कीं, जिससे उन्हें अधिक जिम्मेदारी से कार्य करने के लिए प्रेरित किया गया।

भविष्योन्मुखी संगठनों ने जीआरआई, टीसीएफडी और आईआर जैसे विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त ढांचे का अनुपालन करते हुए अपने ईएसजी प्रदर्शन की रिपोर्ट करना शुरू कर दिया है। यहां तक कि गैर-सूचीबद्ध कंपनियां भी स्वेच्छा से बीआरएसआर-लाइट प्रारूप के आधार पर अपने ईएसजी अभ्यासों का खुलासा करती हैं। कई बड़े वैश्विक निवेशकों ने अपनी उचित परिश्रम और निवेश निगरानी प्रक्रियाओं में अच्छी तरह से परिभाषित ईएसजी नीतियों को अपनाया है। वे पारिस्थितिक रूप से प्रभावशाली निवेश और पर्यावरणीय स्थिरता को बढ़ावा देने के अवसरों का लाभ उठाते हैं। दूसरी ओर, निवेशक सामाजिक रूप से संवेदनशील कंपनियों के लिए बहिष्करणीय स्क्रीनिंग करते हैं और खराब ईएसजी मानदंडों वाली संस्थाओं में निवेश करने से बचते हैं। हालाँकि, भारतीय कॉर्पोरेट पारिस्थितिकी तंत्र अभी भी अपनी संक्रमण रणनीति, वित्तपोषण आवश्यकताओं और ईएसजी प्रोफाइल को अनुकूलित करने के प्रारंभिक चरण में है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का भविष्य:

ईएसजी की अनिवार्यता दिन-प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। नियामकों का दबाव, ईएसजी प्रकटीकरण को अनिवार्य करना और हितधारकों की एक श्रृंखला का दबाव आदि की वजहों से कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी के कार्यान्वयन आवश्यक होता जा रहा है। व्यावसायिक संगठन को अपना व्यवसाय मॉडल बदलना होगा और अगले दशक में और ईएसजी लगाकर उसका संचालन सुचारू रूप से करना ही एक मात्र रास्ता होगा। जो ईएसजी का अनुकूलन करने में विफल रहते हैं या जो बेईमानी करते हैं तो बाजार में पिछड़ने लगेंगे। उनके शेयर में गिरावट, ब्लैक-लिस्टिंग, गंभीर दंड और संभावित कैद

होना आदि शामिल हो सकता है। भविष्य में ईएसजी की राह आसान नहीं होगी। संगठनों को सार्थकता की आवश्यकता होगी, विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़कर और बेहतर प्रदर्शन करना होगा। उन्हें पीआर स्टंट से परे ठोस कार्रवाई करनी होगी। व्यावसायिक संस्थानों को ईएसजी पारदर्शिता की आवश्यकता को बढ़ावा देना होगा और डिजिटल परिवर्तन लाना होगा। गहन निरीक्षण और उच्च गुणवत्ता वाला डेटा और विश्लेषण प्रदर्शन को मापने और मूल्यांकन करने के लिए आवश्यक प्रयास करना होगा। ईएसजी पहल को सक्षम करने वाले संस्थानों के लिए साझा हितों वाले लोगों द्वारा अच्छा समर्थन प्राप्त होगा। प्रमुख ईएसजी मुद्दों पर संगठनात्मक रुख महत्त्वपूर्ण होगा, शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करने के लिए भी ई एसजी आवश्यक होगा। नई ईएसजी पहलों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिकाएं और इसे बढ़ाने के लिए सभी हितग्राहियों के साथ मिलकर काम करना होगा।

उपसंहार

कार्पोरेट क्षेत्र में कंपनीयों को समग्र रणनीति के हिस्से के रूप में ईएसजी के बारे में सोचने की ज़रूरत है। यह एक वृहत्त प्रवृत्ति है जो गति पकड़ रही है। डेटा से पता चलता है कि ईएसजी मानदंडों को अपनाने वाली कंपनियां सभी हितधारकों, निवेशकों, कर्मचारियों, ग्राहकों और समुदाय के लिए बेहतर और सुरक्षित प्रदर्शन कर रही हैं। ईएसजी पर परिचालन और रिपोर्टिंग करने वाली कंपनियों को पूंजी के पूल तक बेहतर पहुंच मिल सकती है जो दीर्घकालिक कंपनी के प्रदर्शन को मजबूत कर सकती है। कार्पोरेट क्षेत्र में कंपनियों को अपनी अगली बोर्ड बैठक में गहन चर्चा करके शुरुआत करनी चाहिए। मेरा सुझाव है कि प्रत्येक बोर्ड को प्रबंधन के साथ स्पष्टता और तालमेल बनाने की जरूरत है और उन्हें रेखांकित करना चाहिए कि वह सभी हितधारकों के लिए ईएसजी को कैसे संबोधित करेगा। मेरा मानना है कि अब ईएसजी कार्यक्रमों को लागू करने का समय आ गया है। कई मौजूदा ढाँचे हैं। हम प्रबंधन से उनके प्रमुख उद्योग मेट्रिक्स को मापना और रिपोर्ट करना शुरू करने के लिए कह सकते हैं। यह एक यात्रा है और रूपरेखा और अभी भी विकसित हो रहे हैं। हालाँकि अंतिम वैश्विक ईएसजी माप प्रणाली पूरी नहीं हुई है, लेकिन अब और इंतजार करने का कोई कारण नहीं है। अब इस प्रवृत्ति का नेतृत्व करने का समय आ गया है।

*****

तपन कीर्तिकुमार बिलखिया

पदनाम:- विशेष सहायक
संस्था का नाम:- यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
मोबाइल नं. :- 9033530595
ई-मेल:- bioinfotapan@gmail.com

ईएसजी तीन शब्दों से मिलकर बना है पर्यावरण, सामाजिक और शासन। 'पर्यावरण, सामाजिक और शासन लक्ष्य' कंपनी के संचालन के लिये मानकों का एक ऐसा समूह है जो कंपनियों को बेहतर शासन, नैतिक अभ्यासों, पर्यावरण-अनुकूल उपायों और सामाजिक उत्तरदायित्वों का पालन करने के लिये विवश करते है। परंपरागत रूप से निवेश संबंधी निर्णय मुख्य रूप से वित्तीय मानकों द्वारा संचालित होते है। हालाँकि, जलवायु परिवर्तन को लेकर बढ़ती चिंताओं के साथ, विकास के मॉडल की ओर आगे बढ़ने के माध्यम से इसके प्रति अनुकूलित होना और इसके परिणामों का शमन करना अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रमुख चिंताओं के रूप में उभरा है।

ईएसजी के तीन मानदंड है: पर्यावरण, सामाजिक और शासन। **पर्यावरणीय** मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कोई कंपनी प्रकृति के परिचारक के रूप में कैसा प्रदर्शन करती है। इस तरह के निवेश में एक कंपनी का पर्यावरण पर प्रभाव एक महत्त्वपूर्ण कारक है। इसमें कंपनी का कार्बन फुटप्रिंट, निर्माण प्रक्रियाएं और उसकी आपूर्ति श्रृंखला बनाने वाले प्रयास शामिल हो सकते हैं। रसायन, धातु और थर्मल प्लांट जैसी प्रदूषण फैलाने वाली कंपनियों का ईएसजी मानदंडों पर 'ई' स्कोर कम है। दूसरी ओर, सेवा क्षेत्र की कंपनियां जैसे सूचना प्रौद्योगिकी या बैंकिंग क्षेत्र की कंपनियों की रैंकिंग इस मामले में ऊंची होगी। **सामाजिक** मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कंपनी अपने अंदर और बाहर सामाजिक प्रभाव को कैसे सुधारती है। कैसे एक कंपनी सिर्फ अपने व्यवसाय क्षेत्र में सीमित न हो कर उसके बाहर भी सामाजिक मुद्दों के लिए आवाज़ उठाती है। सामाजिक मानदंड यह परीक्षण करते हैं कि कंपनी अपने कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों और स्थानीय समुदायों के साथ अपने संबंधों का प्रबंधन कैसे करती है। **शासन** मानदंड इस बात पर विचार करते हैं कि कंपनी का बोर्ड और मैनेजमेंट कैसे सकारात्मक बदलाव लाता है। शासन के भीतर आसपास के मुद्दों

से लेकर लीडरशिप प्रोवाइड करना और वो लीडरशिप कितना बेहतर चेंज लाता है उसको समविष्ट किया जाता है। शासन किसी कंपनी के नेतृत्व, कार्यकारी वेतन, लेखा परीक्षा, आंतरिक नियंत्रण और शेयरधारक अधिकारों से संबोधित होता है। जिस तरह से एक कंपनी निदेशक मंडल और प्रबंधकीय टीम की गुणवत्ता के साथ कारोबार करती है, वह शासन रैंकिंग को प्रभावित करती है। शासन में नियुक्ति की पद्धतियां, वेतन असमानता और मीडिया व शेयरधारकों के साथ कंपनी की बातचीत भी इस पैमाने में शामिल है।

वर्ष 2006 में 'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट' के आरंभ के साथ ईसीजी ढाँचे को आधुनिक समय के व्यवसायों की एक अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता दी गई है। कंपनियों के लिये ईएसजी प्रकटीकरण आवश्यकताओं की पहचान करने की दिशा में प्रारंभिक उल्लेखनीय कार्रवाई वर्ष 2011 में कॉर्पोरेट कार्य मंत्रालय द्वारा जारी की गई 'कारोबार के सामाजिक, पर्यावरण और आर्थिक दायित्वों पर राष्ट्रीय स्वैच्छिक दिशानिर्देश' के रूप में प्रकट हुई। वर्ष 2012 में सेबी ने 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्ट' तैयार की, जिसने बाज़ार पूंजीकरण के अनुसार शीर्ष 100 सूचीबद्ध संस्थाओं के लिये उनकी वार्षिक रिपोर्ट के एक भाग के रूप में बीआरआर फ़ाइल करना अनिवार्य कर दिया, जिसे वर्ष 2015 में शीर्ष 500 सूचीबद्ध संस्थाओं तक विस्तारित कर दिया गया। वर्ष 2021 में सेबी ने मौजूदा बीआरआर रिपोर्टिंग आवश्यकता को 'बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट' से प्रतिस्थापित कर दिया। यह वित्त वर्ष 2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध संस्थाओं पर अनिवार्य रूप से लागू होगा। बीआरएसआर रिपोर्टिंग कंपनियों को उनके ईएसजी प्रदर्शन की पहचान करने और निगरानी करने में मदद करती है। इससे उन्हें अपने पर्यावरणीय प्रभाव, सामाजिक जिम्मेदारी और शासन प्रथाओं को बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है।

भारत में लंबे समय से पर्यावरण, सामाजिक एवं शासन के मुद्दों के बारे में विभिन्न कानून एवं निकाय मौजूद है, जिनमें 1986 का पर्यावरण संरक्षण अधिनियम, अर्ध-न्यायिक संगठन जैसे राष्ट्रीय हरित न्यायाधिकरण, श्रम संहिता की एक श्रृंखला एवं कर्मचारी संबद्धता तथा कॉर्पोरेट प्रशासन व्यवहार को नियंत्रित करने वाले कानून शामिल हैं। उल्लंघन के लिए पर्याप्त आर्थिक दंड हो सकता है। जबकि ये कानून महत्त्वपूर्ण पर्यावरणीय तथा सामाजिक सुरक्षा उपाय प्रदान करते हैं, भारत में नई पहलें

आगे जाती हैं, दिशा-निर्देशों की स्थापना करती हैं जो विश्व के अन्य भागों में पाई जाने वाली ईएसजी आवश्यकताओं के समान निगरानी, मात्रा एवं प्रकटीकरण पर बल देती हैं । भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (द सिक्योरिटीज एंड एक्सचेंज बोर्ड ऑफ इंडिया / सेबी), ईएसजी निवेश में वृद्धि एवं ईएसजी जोखिमों के बारे में जानकारी के लिए निवेशकों की मांग के उत्तर में, भारत में 1,000 सबसे बड़ी सूचीबद्ध कंपनियों द्वारा आवश्यक वार्षिक व्यावसायिक उत्तरदायित्व एवं स्थिरता रिपोर्ट (बिजनेस रिस्पांसिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट/बीआरएसआर) में काफी संशोधन किया गया है। सेबी वर्तमान रिपोर्ट प्रकटीकरण में हरित गृह गैस उत्सर्जन से लेकर कंपनी के सामाजिक विविधता तक के आयाम शामिल हैं । भारतीय निवेशक ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों और निवेश उत्पादों में अधिक रुचि दिखा रहे हैं और कंपनियां अपनी कॉर्पोरेट प्रशासन रणनीतियों में ईएसजी को शामिल करने की दिशा में लगातार कदम उठा रही है। ईएसजी सिद्धांतों के साथ कंपनियों को मौजूदा बाज़ारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशन रणनीति' के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है। ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि संसाधनों तक आसान पहुँच प्राप्त होती है। धन जुटाने के लिये ईएसजी महत्त्वपूर्ण है और भारत जैसे देशों में अन्य संसाधनों तक मुक्त पहुँच भी उतनी ही महत्त्वपूर्ण है, जहाँ कंपनियों को आरक्षित क्षेत्रों में नई परियोजनाएँ शुरू करते समय स्थानीय समुदायों के कड़े प्रतिरोध का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिये, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज ने वर्ष 2030 तक 'शुद्ध शून्य उत्सर्जन' प्राप्त करने की योजना का खुलासा किया है। गाजियाबाद नगर निगम भारत का पहला नगर बन गया है जिसने अपशिष्ट जल के पुन: उपयोग के लिये पर्यावरणीय रूप से एक परियोजना हेतु बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज में सूचीबद्ध ग्रीन बॉण्ड जारी किया है। ईएसजी ढाँचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक निवेश अवसरों की तलाश करने के लिये प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है। निम्न कार्बन उत्सर्जन, अपशिष्ट में कमी, इष्टतम जल-उपयोग, उच्च रोज़गार सृजन और अपेक्षाकृत बेहतर प्रकटीकरण रखने वाली कंपनियाँ ईएसजी सूचकांक में उच्च स्कोर प्राप्त कर सकेंगी। कंपनी पारितंत्र के साथ ईएसजी का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' बनाता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें। शेयरधारकों की शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप दंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

ईएसजी इनवेस्टिंग का मतलब उन कंपनियों का पोर्टफोलियो बनाने से है जो पर्यावरण, समाज और शासन संबंधी ऊंचे मानकों को पूरा करती है। सही से ऊंचे मानकों वाली कंपनियों में फंड मैनेजर इन्हीं बुनियादी बातों की तलाश करते हैं। फंड हाउसों के अध्ययन दिखाते हैं कि ईएसजी-फ्रेंडली कंपनियों में निवेश करना फायदेमंद होता है। ईएसजी इन्वेस्टिंग एक ऐसी स्ट्रेटेजी है जहां आप उन कंपनियों में निवेश करते हैं जो कि दुनिया को कुछ बेहतर बनाने की ओर काम करती है। ईएसजी फंड पर्यावरण-अनुकूल अभ्यासों, नैतिक कारोबार अभ्यासों और कर्मचारी-अनुकूल रिकॉर्ड रखने वाली कंपनियों पर ध्यान केंद्रित करता है। इस फंड को भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ये एक तरह का म्यूचुअल फंड होता है, इसके जरिए कंपनी के अच्छे स्टॉक्स दर्शाए जाते हैं। इसे सोशली रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टिंग भी कहा जाता है। यहां इन्वेस्टमेंट पर्यावरण और इंसान और ईकोनॉमी सभी के हित में सोच कर किए जाते हैं। आसान शब्दों में समझें तो मान लीजिए आप कुछ पैसा इन्वेस्ट करना चाहते हैं ताकि वो नियत समय में बढ़ता रहे। ऐसे में आप किसी कंपनी में निवेश करते समय सभी फाइनेंशियल पैरामीटर्स को कैलकुलेट करते ही हैं, लेकिन एक जिम्मेदार नागरिक होने के नाते आप गैर वित्तीय पैरामीटर्स भी कंसीडर कर सकते हैं: जैसे कि पर्यावरण, समाज और शासन। म्यूचुअल फंड हाउस इन दिनों ईएसजी स्कीमें लॉन्च करने में व्यस्त है। भारत में ईएसजी फंड के रूप में निवेश का एक नया रूप तेजी से बढ़ रहा है। वैसे तो ग्लोबल मार्केट में यह काफी पहले से चलन में है, लेकिन अब भारत में भी कई परिसंपत्ति प्रबंधन कंपनियां ईएसजी थीम फंड लॉन्च कर रही हैं। ईएसजी निवेश वास्तव में उन कंपनियों से जुड़ा है जो पर्यावरण, सामाजिक और गर्वनेंस या शासन के पैमाने पर बेहतर काम करती हैं। म्यूचुअल फंड डिस्ट्रीब्यूटरों के अनुसार, आने वाले महीनों में और ईएसजी स्कीमों के आने के आसार है। विकसित देशों में ईएसजी थीम काफी लोकप्रिय है। हालांकि, भारत में इस थीम को निवेशकों का ध्यान अब भी खींचना बाकी है। बेहतर तरीके से चलने वाली कंपनियों की तरफ निवेशकों का रुख हुआ है। आने वाले वर्षों में भारत में आने वाला पैसा कहीं और की तुलना में ईएसजी मानकों पर खरी उतरने वाली कंपनियों में ज्यादा जाएगा। इस तरह ईएसजी को फायदा होगा। ईएसजी स्कोरबोर्ड पर भारत की रैंकिंग निचले पायदान पर है। स्थितियों को देखते हुए भारत में ईएसजी थीम के बढ़ने की जबरदस्त क्षमता है। इसके लिए अपेक्षाकृत ज्यादा ईएसजी स्कोर वाली कंपनियों की पहचान करनी होगी।

नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिये जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए। ईएसजी निवेश की बढ़ती मांग का अर्थ है कि पर्याप्त प्रकटीकरण की बढ़ती हुई आवश्यकता और एक रिपोर्टिंग तंत्र की स्थापना की जाए ताकि पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी चुनौतियों के जोखिम मूल्यांकन और शमन उपायों को शामिल कर दीर्घावधि के स्थायी रिटर्न के लक्ष्यों की ओर तालमेल बिठाया जा सके। कंपनियों के कॉर्पोरेट प्रशासन अभ्यासों के साथ ईएसजी प्रकटीकरण को एकीकृत करना निवेश के दृष्टिकोण से अत्यंत परिणामी होता जा रहा है क्योंकि यह कंपनियों के मूल्य का आकलन करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यापार नीतियों में ईएसजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं, क्योंकि कानूनी और विनियामक परिवर्तन भविष्य में कारोबार करने के विशेष तरीके को निषिद्ध कर सकते हैं और इस प्रकार निवेशकों के दृष्टिकोण से इसकी व्यवहार्यता कम हो सकती है। ईएसजी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएँ खड़ी कर सकती हैं। हालाँकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है। वैश्विक अर्थव्यवस्था में अपने अवसरों को अधिकतम करने की इच्छा रखने वाली कंपनियों को इन नई ईएसजी आवश्यकताओं को अपनाने एवं तदनुसार अपने संगठनों को समायोजित करने की आवश्यकता है।

*****

धीरेन्द्र मंडावत

पदनाम:- वरिष्ठ प्रबंधक (आईटी)
संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक
मोबाइल नं. :- 7023755551
ई-मेल:- zoahmit@pnb.co.in

परिचय:

"ऐसा डेवलपमेंट है बेकार"
"जिससे मानव जीवन पर खतरे हों बरकरार"

अगर ऐसा डेवलपमेंट होगा तो राष्ट्र का विकास तो होगा लेकिन साथ-ही-साथ पर्यावरण और समाज को बहुत नुकसान होगा | पूँजीवाद के इस दौर में हर कंपनी अपना मुनाफा देखती है, उसका ग्राफ बढ़ाने के लिए हर तरह के प्रयास करती है, हालांकि इसमें कोई बुराई नहीं है, बात तब बिगड़ जाती है जब कंपनियां सिर्फ अपने मुनाफे के लिए समाज पर्यावरण और मानवता सभी को ताक पर रख देती हैं। तो ऐसा क्या किया जाए कि कंपनियां मुनाफा तो कमाएं लेकिन नैतिकता के दायरे में रहकर इसलिए कंपनियों के लिए ईएसजी पैरामीटर्स की शुरुआत 2004 में की गई।

पूरी दुनिया में कोरोना की वजह से ईएसजी फंड का महत्त्व और बढ़ गया है कंपनियां अब एनवायरमेंट, सोशल और गवर्नेंस को लेकर काफी सतर्क हो गई हैं। केमिकल फ्री, ऑर्गेनिक, कम उत्सर्जन वाली वस्तुओं में लोगों की दिलचस्पी लगातार बढ़ रही है। जो लोग ईएसजी निवेश के फायदे और नुकसान को जानते हैं वे ईएसजी फंड का लाभ उठा सकते हैं, वैश्विक ईएसजी फंड भी भारत में निवेश कर रहे हैं।

एक्सपर्ट का मानना है कि जिन कंपनियों का मैनेजमेंट इन सिद्धांतों को अपनाता है उसमें भविष्य में कमाई बढ़ाने की क्षमता होती है और साथ ही उनमें वित्तीय जोखिम भी कम होता है।

ईएसजी क्या है : ईएसजी तीन शब्दों से मिलकर बना है पर्यावरण, सामाजिक और शासन। ये एक तरह का म्यूचुअल फंड होता है, इसे सोशली रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टिंग भी कहा जाता है। पर्यावरण, सामाजिक और शासन निवेश एक कंपनी के लिए मानकों

के एक सेट को संदर्भित करता है। यह संभावित निवेश के लिए सामाजिक रूप से जागरूक निवेश को प्रभावित करता है। ईएसजी ढांचा संगठनों को अपने व्यवसायों में जोखिम की पहचान करने और उसे कम करने के लिए इन गैर-वित्तीय कारकों की रिपोर्ट करने की अनुमति देता है।

* ईएसजी इन्वेस्टिंग इंडिपेंडेंट रेटिंग्स पर निर्भर करते हैं। इन रेटिंग्स से पता चलता है कि कंपनी का व्यवहार पर्यावरण, समाज और शासन के लिए कितना बेहतर है। इसके तीन भागों को अलग अलग रूप में समझ सकते हैं।

1.**पर्यावरणीय:** कोई कंपनी पर्यावरण पर किस तरह प्रभाव डालती है जलवायु जोखिम किसी व्यवसाय के संबंधित उद्योग के भविष्य को किस तरह प्रभावित कर सकते हैं। कोई कंपनी या संगठन अपने नकारात्मक प्रभावों को नकारने के लिए क्या कर रहा हैं? ऐसे कई हिस्से हैं जिससे जीवन पर पड़ने वाले कई परिणामों पर प्रकाश डालता है।

सीएफए संस्थान के अनुसार जलवायु परिवर्तन मानव इतिहास में सबसे अधिक आर्थिक रूप से प्रभावशाली घटनाओं में से एक है। "ईएसजी पत्रकारों को कंपनी और उसके द्वारा संचालित उद्योग के लिए उपयुक्त समझे जाने वाले डेटा को एकत्र करना, व्याख्या करना और रिपोर्ट करना होगा। कुछ पर्यावरणीय विचार हैं जिन पर विचार करके पर्यावरण संरक्षण को बचाया जा सकता है।

- कार्बन उत्सर्जन
- ऊर्जा दक्षता
- संसाधन की कमी
- जलवायु जोखिम प्रबंधन
- वायु एवं जल प्रदूषण
- कचरे का प्रबंधन
- वनों की कटाई

"पर्यावरण रक्षा है जीवन के लिए महत्त्वपूर्ण"
"इसके बिना हो जायेगी पृथ्वी अपूर्ण"

2. सामाजिक:

यह उस सामाजिक प्रभाव को मापता है जो कंपनी के भीतर और बाहर के समाज से जुड़ा है सामाजिक कारकों में एलजीबीटीक्यू + समानता, नस्लीय विविधता और समावेशी कार्यक्रम व नियुक्ति प्रथाओं समेत सब कुछ शामिल है, भारत में, कॉरपोरेट -

सामाजिक उत्तरदायित्व खर्च भी सामाजिक रैंकिंग में शामिल हैं यानी जिन कंपनियों का सीएसआर अच्छा होगा, उनकी रैंकिंग भी इस मामले में बेहतर होगी | ईएसजी ढांचे के सामाजिक पहलू की रिपोर्ट करते समय निम्नलिखित मुख्य विचार सामने आते हैं, जिन पर गौर करना चाहिए :-

- मानवाधिकार मानक
- कर्मचारी आवाजाही
- विविधता और लिंग समावेशन
- श्रम मानक
- कर्मचारी को काम पर लगाना
- ग्राहक संतुष्टि
- समुदाय संबंध
- डेटा सुरक्षा और गोपनीयता

3. गवर्नेंस शासन: जिस तरह से एक कंपनी निदेशक मंडल और प्रबंधकीय टीम की गुणवत्ता के साथ कारोबार करती है, वह गवर्नेंस रैंकिंग को प्रभावित करती है, गवर्नेंस या शासन में नियुक्ति की पद्धतियां, वेतन असमानता और मीडिया व शेयरधारकों के साथ कंपनी की बातचीत भी इस पैमाने में शामिल हैं। इसके अलावा और भी निम्नलिखित विचार शामिल हैं:-

- बोर्ड विविधता और समावेशन
- लेखापरीक्षा समिति संरचना
- घूसखोरी और भ्रष्टाचार
- पक्ष जुटाव
- नेतृत्व मुआवजा
- मुखबिर योजनाएँ
- राजनीतिक योगदान

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का वर्तमान में महत्त्व:

- **राजस्व में वृद्धि:** ईएसजी सिद्धांतों के साथ संरेखण से कंपनियों को मौजूदा बाजारों का विस्तार करने और उनकी 'ब्लू ओशन रणनीति' के एक अंग के रूप में विकास के नए अवसर प्रदान करने में मदद मिलती है।

- **सार्वजनिक छवि में सुधार:** ईएसजी अनुपालनकर्ता कंपनियों को कम लागत पर संसाधनों (प्राकृतिक, वित्तीय, मानव प्रतिभा आदि) तक आसान पहुँच प्रदान करता है।
- **दीर्घकालिक संवहनीयता:** ईएसजी ढाँचे का अनुपालन कंपनियों को अधिक सतत् निवेश अवसरों की तलाश को करने के लिये प्रोत्साहित करता है जो दीर्घावधि में प्रतिस्पर्द्धात्मक लाभ सृजित करता है।
- **कर्मचारी उत्पादकता में वृद्धि** : कंपनी पारितंत्र के साथ ईएमजी उत्पादकता का एकीकरण कर्मचारियों के बीच एक 'उद्देश्य-संचालित-जीवन' सन्निहित करता है ताकि वे अपनी नौकरी में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकें।
- **लागत/ जोखिम में कमी:** शेयरधारक शिकायत का निवारण, मानवाधिकार और कंपनियों की लैंगिक विविधता जैसे ईएसजी मानदंडों की पूर्ति के परिणामस्वरूप अर्थदंड एवं प्रवर्तन कार्रवाई में कमी आएगी।

पिछले कुछ वर्षों में ईएसजी फंड की परिसंपत्ति का आकार लगभग पाँच गुना बढ़कर 12,300 करोड़ रुपए का हो गया है।

ईएसजी का भविष्य में महत्त्व: आज की दुनिया में ईएसजी सभी व्यवसायों पर लागू होता है और कंपनियां इसके योगदान को तेजी से महसूस कर रही हैं। अधिक से अधिक निवेशकों शेयर धारकों, कर्मचारियों, ग्राहकों नियामकों के साथ प्रणाली में अधिक पारदर्शिता के लिए क्लैमरिंग, ईएसजी निवेश अनिवार्य हो रहा है। आधुनिक निवेशक पारंपरिक दृष्टिकोणों का पुनर्मूल्यांकन कर रहे हैं और पारंपरिक निवेश से पृथ्वी पर पड़ने वाले प्रभावों का भी मूल्यांकन कर रहे हैं। इस प्रकार निवेशकों ने अपनी निवेश प्रथाओं में ईएसजी कारकों को शामिल करना शुरू कर दिया है।

'यूनाइटेड नेशंस प्रिंसिपल फॉर रिस्पॉन्सिबल इन्वेस्टमेंट' नामक एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन निवेश निर्णय लेने में पर्यावरणीय, सामाजिक एवं कॉर्पोरेट प्रशासन कारकों के समावेश को बढ़ावा देने के लिये कार्य करता है। विशेष रूप से नए सामान्य रूप में, ईएसजी निवेश निस्संदेह एक अधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएगा और भारत और दुनिया भर में व्यवसाय करने के तरीके को बदल देगा। यह अंततः व्यापार समुदाय और बाकी सभी की मदद करेगा।

कॉरपोरेट्स के लिए ईएसजी के लाभ: व्यवसायों के लिए, यह पूंजी के एक बड़े

पूल तक पहुंच खोलता है और एक मजबूत पहचान को बढ़ावा देता है और निवेशक अपने मूल्यों का प्रदर्शन कर सकते हैं और अक्सर ईएसजी-केंद्रित ब्रांड से जुड़े निवेश के माध्यम से पारंपरिक दृष्टिकोण के समान या उससे बेहतर रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं।

1. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करता है

ईएसजी प्रयासों में भाग लेने वाली कंपनियां अक्सर व्यावसायिक प्रतिद्वंद्वियों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ हासिल करती हैं। कंपनियों द्वारा ट्रैक और रिपोर्ट किए गए विभिन्न ईएसजी मेट्रिक्स उपभोक्ताओं, कर्मचारियों, ऋणदाताओं और नियामकों के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। कंपनी के नेता जो श्रम स्थितियों में सुधार करने, विविधता को बढ़ावा देने, समुदाय को वापस लौटाने और सामाजिक-आर्थिक मुद्दों पर रुख अपनाने के प्रयास करते हैं, वे कंपनी के ब्रांड को मजबूत करने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं।

2. निवेशकों और ऋणदाताओं को आकर्षित करता है: निवेशक और ऋणदाता उन संगठनों के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो रहे हैं जो ईएसजी में निवेश करते हैं और अपने स्थिरता प्रयासों पर प्रकाश डालने के लिए ईएसजी प्रकटीकरण का उपयोग करते हैं। 2022 में जारी एक गैलप अध्ययन में पाया गया कि 48% निवेशक स्थायी निवेश निधि में रुचि रखते हैं, जबकि 2022 में आयोजित 200 निवेश पेशेवरों के डॉव जोन्स सर्वेक्षण में भी अनुमान लगाया गया था कि ईएसजी निवेश अगले तीन वर्षों में दोगुने से अधिक हो जाएगा।

3. वित्तीय प्रदर्शन में सुधार: ईएसजी न केवल किसी व्यवसाय को निवेशकों के लिए अनुकूल बनाता है, बल्कि यह किसी व्यवसाय के समग्र वित्तीय प्रदर्शन में भी सुधार कर सकता है। स्थिरता की दिशा में छोटे प्रयास भी - जैसे कागज रहित होना, रीसाइक्लिंग या ऊर्जा-कुशल उन्नयन करना - किसी व्यवसाय की निचली रेखा और आरओआई में सुधार कर सकते हैं।

4. ग्राहक निष्ठा बनाता है: यह उन संगठनों के प्रति अधिक वफादार हैं जो लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। आज के सामाजिक रूप से जागरूक उपभोक्ता जानना चाहते हैं कि वे जिन व्यवसायों का समर्थन करते हैं वे व्यापक भलाई के लिए क्या कर रहे हैं। ईएसजी सिद्धांतों का पालन करने वाली कंपनियां पारदर्शी होकर और अपने ईएसजी प्रयासों को ग्राहकों तक प्रभावी ढंग से संप्रेषित करके अधिक ग्राहकों को आकर्षित बनाए रख सकती हैं।

5. कंपनी के संचालन को टिकाऊ बनाता है: ईएसजी पहल में निवेश करने वाली कंपनियां लगातार बदलते परिदृश्य को बनाए रख सकती हैं और उसके अनुकूल ढल सकती हैं । उदाहरण के लिए, जो व्यवसाय ईएसजी सिद्धांतों को अपने मुख्य संचालन में ठीक से एकीकृत करते हैं, वे लागत-बचत के अवसरों की पहचान करने और कम ऊर्जा खपत, कम संसाधन बर्बादी और परिचालन लागत में समग्र कमी का आनंद लेने में बेहतर सक्षम होते हैं।

जो कंपनियां अभी ईएसजी नीतियों को नजरअंदाज करती हैं, उन्हें बाद में कानूनी, नियामक, प्रतिष्ठित और अनुपालन मुद्दों के रूप में उनसे निपटना पड़ सकता है।

चुनौतियाँ: भारत में काम करने वाली कंपनियों को भ्रष्टाचार, नियामक अनुपालन और कॉर्पोरेट प्रशासन से संबंधित चुनौतियों का सामना करना पड़ सकता है।
सीमा पार रिपोर्टिंग आवश्यकताओं के मानकीकरण की कमी ईएसजी सिद्धांतों, ढाँचे और विचारों के सामंजस्य में कठिनाइयाँ उत्पन्न कर सकती हैं।

ईएससी मानकों की पारदर्शिता, निरंतरता, भौतिकता और तुलनीयता से संबंधित अन्य चुनौतियाँ भी आगे ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के निर्बाध कार्यान्वयन में बाधाएं खड़ी कर सकती हैं।

हालांकि मध्यम और लघु कंपनियों में ईएसजी का उपयोग बढ़ रहा है, लेकिन इन छोटे व्यवसायों को उच्च पूंजी लागत और / या ऐसे उपायों को लागू करने में विशेषज्ञता की कमी के कारण ईएसजी पर न्यूनतम से अधिक करने के लिये सीमित किया जा सकता है। भविष्य में ईएसजी रिपोर्टिंग का एक प्रभावी और कुशल तंत्र तैयार करने के लिये इन चिंताओं को दूर किया जाना चाहिये।

आगे की राह: नीति निर्माताओं को धीरे-धीरे एक अधिक व्यापक और विस्तृत ईएसजी रिपोर्टिंग व्यवस्था के निर्माण की ओर आगे बढ़ना चाहिये, जहाँ लक्ष्य हो कि सभी सूचीबद्ध एवं गैर-सूचीबद्ध संस्थाओं को शामिल किया जाए और उन्हें ईएसजी रिपोर्टिंग ढाँचे के दायरे में लाया जाए। ईएसजी मानदंडों पर मात्रात्मक और मानकीकृत प्रकटीकरण एक अधिक समग्र दृष्टिकोण सुनिश्चित करेगा, हितधारकों को वित्तीय और गैर-वित्तीय दोनों सूचनाएँ प्रदान करेगा। व्यापार रणनीति/ नीतियों में ईएमजी कारकों को ध्यान में नहीं रखने के परिणाम भविष्य में व्यावसायिक प्रक्रियाओं को निरर्थक बना सकते हैं।

निष्कर्ष: पर्यावरण, सामाजिक और शासन, वित्तीय कारकों के साथ-साथ कंपनी के जोखिमों और प्रभावों को मापने वाले मानकों का एक ढांचा है। कंपनियां ईएसजी रिपोर्टिंग का उपयोग उत्सर्जन, अपशिष्ट प्रबंधन, कर्मचारी संतुष्टि, भ्रष्टाचार विरोधी प्रथाओं और अधिक पर डेटा का खुलासा करने के लिए एक उपकरण के रूप में काम करती है। ईएसजी रिपोर्टिंग व्यावसायिक प्रथाओं में पारदर्शिता और जुड़ाव को बढ़ावा देती हैं।

ईएसजी रिपोर्टिंग का उद्देश्य निवेशकों और कंपनियों को उनकी व्यावसायिक प्रथाओं और उत्सर्जन के लिए जवाबदेह बनाना है। जैसे-जैसे अधिक निवेशक निवेश के दीर्घकालिक रिटर्न पर ग्लोबल वार्मिंग और जलवायु परिवर्तन के संभावित प्रभाव का आकलन कर रहे हैं, ईएसजी रिपोर्टिंग तेजी से अधिक लोकप्रिय हो गई है। ईएसजी का लक्ष्य किसी व्यवसाय या संगठन के भीतर जोखिम की पहचान करना और उसे कम करना है। ईएसजी रिपोर्टिंग निवेशकों को अधिक जानकारीपूर्ण निर्णय लेने में भी सशक्त बनाती है और कंपनियों को बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं के साथ तालमेल बिठाने में मदद करती है। भारत में कॉरपोरेट्स के बीच ईएसजी जागरूकता पैदा हो रही है। कॉर्पोरेट सामाजिक जिम्मेदारी अनिवार्य करने वाला पहला देश होने के नाते, भारत ने कुछ समय से व्यवसायों से नैतिक प्रतिबद्धताओं की मांग करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। इसलिये हमारा मंत्र होना चाहिए. सबका साथ, सबका विकास और सबका प्रयास।

|| जय हिन्द, जय भारत ||

*****

वसुधा गोखले

पदनाम:- मुख्य प्रबंधक (राजभाषा)
संस्था का नाम:- पंजाब नैशनल बैंक
मोबाइल नं. :- 8826152345
ई-मेल:- zoahmraj@pnb.co.in

किसी भी संस्कृति की शुरुआत होती है तो प्राथमिक आवश्यकताओं को सबसे पहले पूरा किया जाता है। मानव संस्कृति में भी पहले रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरतों को पूरा किया गया, फिर धीरे धीरे मानव खेती करने लगा, साथ-साथ समूह बनाकर रहने लगा। पहिये का शोध सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है, जिसके कारण मानव संस्कृति को सही मायने में गति मिली, औद्योगीकरण होने लगा। इस विकास यात्रा के पश्चात कला, संस्कृति और सजगता का विचार होने लगा। इस निसर्ग से हमें जो मिला है उसे अगली पीढ़ी के लिए छोड़ेंगे या सब कुछ ख़तम करते जाएंगे इसपर विचार होने लगा और उस तरीके से शास्त्रज्ञ, विशेषज्ञ सोचने लगे, उपाय करने लगे इसी सिलसिले में **2005** में संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम में पहली बार ईएसजी का उल्लेख किया गया। वैसे तो G इसमें सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं लेकिन उच्चारण में अधिक सुविधाजनक लगने से इसे ईएसजी रूप में प्रस्तुत किया गया।

निवेशक बाजार संचालित करते हैं। निवेश करते समय जागरूकता दिखाना महत्त्वपूर्ण हो चुका है और इसी वजह से इन तीन सरल अक्षरों ने बड़े पैमाने पर स्थायी निवेश आंदोलन की शुरुआत की । अब बाजार में "ईएसजी निगमित" परिसंपत्तियों में वृद्धि हुई है। जैसे-जैसे ईएसजी क्षेत्र परिपक्व होता जा रहा है, निवेशक यह देख रहे होंगे कि संगठनों को उनके घोषित उद्देश्य को पूरा करने के लिए कैसे संरचित किया जाता है।

ई एस जी अर्थात् **Environment, social and Governance** : पर्यावरण ,सामाजिक पहलू और सुशासन।

हम जिसे प्रगति कहते हैं उसे उद्योगों के उपरोक्त घटकों पर होने वाले परिणामों की जांच की जानी चाहिए, निरंतर प्रगति की चाहत में इसे नजरअंदाज करने से होने वाले नुकसान की जानकारी नापी जानी चाहिये और संबंधित चातकों को जानकारी दी जानी चाहिए तथा उसपर कानूनी अंकुश भी होना चाहिए ये इसके पीछे विचार हैं।

पर्यावरणीय पहलू: क्रियाकलापों से होने वाले जलवायु परिवर्तन, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन, जैव विविधता हानि, वनों की कटाई/ पुनर्वनीकरण, प्रदूषण शमन, ऊर्जा दक्षता और जल प्रबंधन इन मामलों को पर्यावरणीय पहलू कहेंगे।

सामाजिक पहलू: कर्मचारी की सुरक्षा और स्वास्थ्य, काम करने की स्थिति, विविधता, समानता, संघर्ष और मानवीय संकटों पर विचार किया जाता है। सेवा क्षेत्र में ग्राहकों की संतुष्टि को बढ़ाने अथवा प्रतिकूल परिणामों के माध्यम से सीधे जोखिम सामाजिक पहलू में आता है।

शासन पहलू: निदेशक मंडल का गठन, उनमें शामिल लोगों में विविधता, साइबर सुरक्षा और गोपनीयता, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार को रोकना।

जिसे अब हम स्थायी निवेश कहते हैं, उसकी शुरुआत कुछ धार्मिक समूहों से हुई, जिन्होंने अपने निवेश पोर्टफोलियो पर नैतिक मानदंड निर्धारित किए। मुसलमान अपने निवेश के लिए इस्लामी कानून या शरिया का अनुपालन करते हैं और इस प्रकार धार्मिक समूह शराब, तम्बाकू और जुए में कारोबार करने वाले व्यवसायों में अपना निवेश नहीं करते। इस प्रकार निवेश पर धार्मिक और व्यक्तिगत मूल्यों का प्रभाव होता है।

युद्ध विरोधी आंदोलन में शामिल सदस्यों द्वारा रासायनिक हथियार तथा युद्ध संबंधी सामग्री निर्माण करने वाले उद्योगों में निवेश करना सही नहीं माना।

चर्च तथा धार्मिक संस्थानों के पास बहुत निधि उपलब्ध होती हैं परन्तु उसका निवेश करने के लिए धार्मिक, नैतिक तथा सामाजिक मद बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। कई देशों में जीवाश्म ईंधन के जलने और वैश्विक तापमान में वृद्धि पर बढ़ती चिंताओं के कारण, जलवायु परिवर्तन पर परिणाम करने वाले उद्योगों में निवेश करने, उसपर निगरानी रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम के साथ गठबंधन स्थापित किया है।

कार्बन उत्सर्जन को कम करने के लिए बहुत से राष्ट्रों के बीच एक समझौते, क्योटो प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर के साथ विश्व स्तर पर ग्रहों का तापमान बढ़ने के बारे में जागरूकता पैदा हो रही है। क्योटो प्रोटोकॉल ग्लोबल वार्मिंग को संबोधित करने के लिए लक्ष्य निर्धारित करने हेतु विश्व नेताओं को बुलाता है।

जैसे-जैसे जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण में गिरावट जैसे मुद्दे सामने आ रहे हैं, उपभोक्ता इन स्थिरता संबंधी मुद्दों पर निवेश तथा खरीदारी संबंधी निर्णय ले रहे हैं।

इससे सार्वजनिक कंपनियों के लिए पर्यावरण का अच्छा प्रबंधन करने, अपने सभी हितधारकों की भलाई का ध्यान रखने और खुद को नैतिक और पारदर्शी तरीके से संचालित करने की ज़िम्मेदारी बढ़ाता है। ईएसजी निवेश बढ़ रहा है और मानकों को और अधिक विनियमित और निर्माण करने का प्रयास किया जा रहा है।

भारत में ई एस जी : पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) कारकों के महत्त्व को भारतीय नियामकों द्वारा मान्यता दी गई है, और उन्होंने उन्हें देश की व्यावसायिक प्रथाओं में एकीकृत करने के लिए उपाय किए हैं। भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (सेबी) ने भारत में ईएसजी प्रथाओं को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

2012 में, सेबी ने बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी रिपोर्टिंग (बीआरआर) फ्रेमवर्क पेश किया, जिसके लिए सूचीबद्ध कंपनियों को अपनी ईएसजी प्रथाओं की जानकारी देना आवश्यक था। बीआरआर ढांचे का उद्देश्य सूचीबद्ध कंपनियों को स्थायी व्यावसायिक प्रथाओं को अपनाने और उनके कॉर्पोरेट प्रशासन मानकों में सुधार करने के लिए प्रोत्साहित करना है। भारतीय रिज़र्व बैंक (RBI) भी बैंकिंग क्षेत्र में ई एस जी प्रथाओं को बढ़ावा देने में सक्रिय रहा है। आरबीआई ने 2016 में, बैंकों को सभी नई परियोजनाओं के लिए पर्यावरण और सामाजिक प्रभाव आकलन (ईएसआईए) आयोजित करने का आदेश दिया। ईएसआईए दिशानिर्देशों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि बैंक नई परियोजनाओं का वित्तपोषण करते समय पर्यावरणीय और सामाजिक जोखिमों को ध्यान में रखें।

2018 में, सेबी ने अपने निवेश निर्णयों में ईएसजी कारकों को एकीकृत करने के लिए म्यूचुअल फंड के लिए दिशानिर्देश जारी किए।इस से म्यूचुअल फंडों को उन कंपनियों की स्थिरता और सामाजिक जिम्मेदारी पर विचार करने के लिए प्रोत्साहित किया है जिनमें वे निवेश करते हैं। भारत सरकार ने भी सतत् विकास प्राप्त करने में ईएसजी कारकों के महत्त्व को पहचाना है। ईएसजी नियम वित्तीय क्षेत्र के साथ अन्य उद्योगों में बढ़ावा देने के लिए भी कदम उठाए हैं।

हाल ही में, 2020 में पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने ECO निवास संहिता 2020 पेश किया, जो ऊर्जा-कुशल आवासीय भवनों के लिए दिशानिर्देशों का एक सेट है। दिशानिर्देशों का उद्देश्य ऊर्जा दक्षता को बढ़ावा देना और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना है। भारत में ईएसजी नियमों का उदय एक सकारात्मक विकास है। यह सतत् विकास और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं के

प्रति देश की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

बैंकों के लिए ईएसजी : बैंकों के लिए, ईएसजी बैंकिंग प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। चूँकि पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) तेजी से स्वैच्छिक से अनिवार्य की ओर परिवर्तित हो रहा है, पहला कदम सतत् विकास सुनिश्चित करने के लिए निवेश को प्राथमिकता देना है। उदाहरण के लिए, ग्राहकों से जुड़ना, डेटा प्रोसेसिंग, धोखाधड़ी का पता लगाना, ग्राहक से कारोबार, धन उधार देना और नियामक अनुपालन से लेकर, संपूर्ण कार्य जोखिम भरे हैं और ईएसजी पालन के कुछ स्तरों को बनाए रखने की उम्मीद है। प्रत्येक बैंक पर्यावरण की रक्षा करने, विविध समाज का निर्माण करने और मजबूत प्रशासन सुनिश्चित करने के लिए ज़िम्मेदार है। पर्यावरणीय और सामाजिक रूप से टिकाऊ दुनिया में परिवर्तन बैंकों और अन्य वित्तीय सेवा संस्थानों के लिए एक तत्काल व्यावसायिक अनिवार्यता बन गया है। पूंजी जुटाने के माध्यम से इस परिवर्तन को करने में वित्तीय सेवा क्षेत्र की बहुत बड़ी भूमिका है। पर्यावरण, सामाजिक और शासन (ईएसजी) एजेंडा न केवल कॉर्पोरेट मूल्यों में बदलाव से, बल्कि ग्राहकों, नियामकों, सहकर्मियों और निवेशकों द्वारा भी संचालित होता है। यह विशाल, बहुआयामी चुनौती कठिन हो सकती है, लेकिन यह एक अवसर भी हो सकती है।

कुछ बैंक पहले से ही ईएसजी पथ पर काफी आगे हैं। उन्होंने कुछ क्षेत्रों की फंडिंग को रोकने या मौलिक रूप से कम करने का विकल्प चुना है। वे सक्रिय रूप से स्थायी वित्तीय उत्पादों को बढ़ावा दे रहे हैं। उन्होंने अपने ग्रीनहाउस गैस (जीएचजी) उत्सर्जन को आधार बनाया है। अपने ग्राहकों, लोगों और समुदायों पर ध्यान केंद्रित करते हुए, हम निरंतर और जिम्मेदार व्यावसायिक प्रथाओं के लिए प्रतिबद्ध हैं |

अपनी ईएसजी रणनीति विकसित करते समय यह सोचने की आवश्यकता होगी कि बैंकों में ईएसजी में क्या शामिल है:

प्रभाव: ऋण, निवेश और अन्य उत्पादों के ईएसजी प्रभाव को देखना होगा। निवेश के लिए नई नीतियां स्थापित करनी हैं जिसमें ईएसजी चिंताओं को ध्यान में रखा जाए।

आय: नए उत्पाद और सेवाएँ बनवाने होंगे जो संस्था के प्रति वफादारी, नई राजस्व धाराएँ और दूरगामी परिणाम दिखा सकें।

जोखिम: जलवायु और सामाजिक कारक वित्तीय जोखिम के सभी पारंपरिक

स्तंभों पर विचार करना होगा यानी क्रेडिट जोखिम, बाजार जोखिम, तरलता जोखिम कैसे प्रभावित हो सकते हैं।

रिपोर्टिंग: सबसे महत्त्वपूर्ण कारक रिपोर्टिंग हैं जिससे जोखिम की जानकारी सभी हितधारकों की दी जा सकें।

संस्कृति: व्यावसायिक प्रक्रियाओं और शासन में ईएसजी मदों को शामिल करें ताकि संस्था के कार्यकलापों की वह संस्कृति बन सकें।

ईएसजी के लिए मानदंड : जैसे-जैसे निवेश के प्रबंधन के लिए ईएसजी फंडों की संख्या बढ़ रही है, कंपनियों में व्यापार और व्यवसाय करने के कार्यात्मक दृष्टिकोण के रूप में ईएसजी पर आई टी विशेषज्ञ ध्यान दे रहे हैं। यहां कंपनियों और निवेशकों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सामान्य ईएसजी मानदंडों का विवरण निम्नानुसार है:

पर्यावरण मानदंड : पर्यावरणीय कारकों में जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों की रक्षा के उपायों के कारण संभावित जोखिमों और अवसरों पर विचार शामिल होता है। साथ ही ऊर्जा की खपत और दक्षता, ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन सहित कार्बन पदचिह्न, कचरे का प्रबंधन, वायु एवं जल प्रदूषण, जैव विविधता हानि, वनों की कटाई, प्राकृतिक संसाधनों की कमी शामिल हैं।

सामाजिक मानदंड: कंपनी लोगों के विभिन्न समूहों - कर्मचारियों, आपूर्तिकर्ताओं, ग्राहकों, समुदाय के सदस्यों और अन्य के साथ कैसा व्यवहार करती है। कर्मचारियों के लिए उचित वेतन, कर्मचारी अनुभव और जुड़ाव, कार्यस्थल स्वास्थ्य और सुरक्षा, डेटा सुरक्षा और गोपनीयता नीतियां, ग्राहकों और आपूर्तिकर्ताओं के साथ उचित व्यवहार, ग्राहक संतुष्टि का स्तर, सामुदायिक संबंध, गरीबों और वंचित समुदायों की मदद करने वाली परियोजनाओं या संस्थानों को वित्त-पोषण, मानवाधिकारों और श्रम मानकों के लिए समर्थन शामिल हैं।

शासन मानदंड : शासन कारक इस बात की जांच करते हैं कि कोई कंपनी नियमों, उद्योग की सर्वोत्तम प्रथाओं और कॉर्पोरेट नीतियों के अनुपालन को बनाए रखने के लिए आंतरिक नियंत्रण और प्रथाओं पर ध्यान केंद्रित करके खुद को कैसे नियंत्रित करती है। कंपनी का नेतृत्व और प्रबंधन, बोर्ड की संरचना, कार्यकारी मुआवजा नीतियां, वित्तीय पारदर्शिता और व्यावसायिक अखंडता, विनियामक

अनुपालन और जोखिम प्रबंधन पहल, नैतिक व्यवसाय प्रथाएँ, भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी, हितों के टकराव और राजनीतिक प्रभाव और पैरवी पर नियम सम्मिलित हैं।

चुनौतियां : ईएसजी प्रथाओं पर पारदर्शी रिपोर्टिंग के लाभों के बावजूद, ऐसा करने का प्रयास करते समय कंपनियों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एक बड़ी चुनौती मानकीकृत रिपोर्टिंग ढाँचे की कमी है। मानकों के एक सामान्य सेट के बिना, निवेशकों के लिए विभिन्न कंपनियों की ईएसजी प्रथाओं की तुलना करना मुश्किल हो सकता है।

इसके अतिरिक्त, ईएसजी प्रथाओं के प्रभाव को मापना मुश्किल हो सकता है। आसानी से मापने योग्य वित्तीय मेट्रिक्स के विपरीत, ईएसजी मेट्रिक्स अक्सर गुणात्मक और व्यक्तिपरक होते हैं। परिणामस्वरूप, अधिक मजबूत रिपोर्टिंग ढाँचे की आवश्यकता है जो कंपनियों को अपनी ईएसजी प्रथाओं को सटीक रूप से मापने और रिपोर्ट करने में सक्षम बनाए।

निष्कर्ष :

अंत में, ईएसजी कंपनियों के लिए लिया गया निर्णय उनकी दीर्घकालिक सफलता को प्रभावित कर सकता है। पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन संबंधी कारकों को प्राथमिकता देकर, कंपनियां अपनी प्रतिष्ठा में सुधार कर सकती हैं, अपने जोखिम प्रोफाइल को कम कर सकती हैं और नियामक परिवर्तनों को अपनाने के लिए बेहतर स्थिति में हो सकती हैं। यह स्पष्ट है कि आने वाले वर्षों में ईएसजी का महत्त्व बढ़ता ही रहेगा।

मानव संस्कृति तभी विकसित मानी जाएगी जब वह उपलब्ध संसाधनों का उचित उपयोग करेगी, कम से कम प्रदूषण करेगी तथा आने वाली पीढ़ी के लिए उनका भविष्य सुरक्षित करेगी। निवेशक भी जागरूक हो चुका है, वह उन्हीं उद्योगों में निवेश करेगा जिसने मानव के निरंतर दीर्घकालीन भलाई की सोच रखी है।

सन्दर्भ:

1) Hindu Business line ***Taking ESG Reporting to the Next Level***

2) ***2) Zee Business***

3) ***3)*** Readers blog : sukruti shrivastav

*****

सौरभ मिश्रा

पदनाम:- राजभाषा अधिकारी
संस्था का नाम:- बैंक ऑफ़ बड़ौदा
मोबाइल नं. :- 9644696012
ई-मेल:- pandit09saurabh@gmail.com

मानव सभ्यता के उदय के साथ ही मानवीय आवश्यकताएं सृजित हुईं और उनकी ही पूर्ति के लिए मानव ने तरह-तरह के अनुप्रयोग करना प्रारम्भ किया। इन्हीं अनुप्रयोगों एवं लेन-देन का परिणाम हुआ कि एक पूरा समाज निर्मित हो गया और सबकी अलग-अलग भूमिकाएँ निर्धारित हो गईं। तब से लेकर आज तक सभ्यता के विकास के चरणों में समाज में अनेक परिवर्तन हुये किन्तु मूल संरचना ज्यों कि त्यों बनीं रही। भारतीय मनीषा द्वारा दिया गया संदेश **"वसुधैव कुटुम्बकम्"** तब भी शिरोधार्य था और आज तो इसकी प्रासंगिकता किसी से छिपी नहीं है। शासक/ प्रशासक तब भी समाज के पालन पोषण के लिए प्रतिबद्ध थे, आज भी शासन की नई प्रणालियों के अंतर्गत सरकारें लोक कल्याण के लिए प्रतिबद्ध हैं, श्रेष्ठी वर्ग या व्यवसाय करने वाले लोग तब भी आम जनता की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए उपलब्ध थे, आज भी बाजार व्यवस्था के माध्यम से लोग अपनी जरूरतों की पूर्ति कर रहे हैं, समाज के विभिन्न अवयवों को सुचारु रूप से संचालित करने के लिए तब भी लोग स्वयं ही आगे आकर अपने सामाजिक दायित्वों का निर्वहन करते थे और आज भी यह आवश्यकता पूर्ण रूप से विद्यमान है। इस मूल संरचना के स्थिर रहते हुये भी कुछ बहुत महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हमारी सामाजिक प्रणाली में दृष्टिगोचर होते हैं।

आज का युग वैश्वीकरण, तकनीकीकरण, डिजिटलीकरण का युग है। इसी कारण कॉर्पोरेट क्षेत्र की महत्ता को कम करके आंकना एक बड़ी भूल होगी। ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के अनुसार "कॉर्पोरेट क्षेत्र" का अर्थ एक ऐसा क्षेत्र है जो बड़ी व्यावसायिक कंपनियों से जुड़ा हुआ हो। आज मनुष्य का स्थान मशीनों ने लेना शुरू कर दिया है और इन मशीनों का निर्माण एवं नियंत्रण इन बड़ी व्यावसायिक कंपनियों के द्वारा किया जा रहा है। इसलिए यह कहना युक्तियुक्त ही होगा कि आज विश्व की अर्थव्यवस्था का

एक बड़ा भाग इसी कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा संचालित हो रहा है। इतने व्यापक दायित्व का निर्वहन करते हुए केवल व्यावसायिक लाभ को ध्यान में रखकर नीतियों का निर्धारण करना देश और समाज के हित में नहीं है। इसी बात को केंद्र में रखकर **ईएसजी** अर्थात् **Environmental, Social and Governance** की अवधारणा प्रस्तुत की गई।

ईएसजी क्या है?

आधुनिकता की ओर उन्मुख समाज जब सुख सुविधाओं की खोज में पर्यावरण, समाज एवं सामाजिक उपबंधों का दुरुपयोग करने लगता है तब इन महत्त्वपूर्ण क्षेत्रों के उपभोग की अधिकतम सीमा निर्धारित करने एवं इनके संरक्षण हेतु कुछ सकारात्मक योगदान सुनिश्चित करने हेतु ईएसजी जैसे कारकों की आवश्यकता होती है। यद्यपि ईएसजी मानवता के सभी घटकों के लिए आवश्यक है किन्तु यहाँ हम अपना ध्यान केवल कॉर्पोरेट क्षेत्र में इसकी उपयोगिता पर केन्द्रित करेंगे। वस्तुतः यह निवेशकों, व्यवसायों और हितधारकों द्वारा किसी कंपनी के प्रदर्शन और संवहनीयता प्रथाओं का आकलन करने के लिए उपयोग किए जाने वाले मानदंडों का एक सेट है। कॉर्पोरेट क्षेत्र का पर्यावरणीय, सामाजिक एवं प्रशासन के क्षेत्र में क्या प्रभाव है और कॉर्पोरेट सैक्टर के फुटप्रिंट इन क्षेत्रों में किस तरह के बदलाव ला रहे हैं, इसका सटीक मूल्यांकन करने के लिए ईएसजी एक महत्त्वपूर्ण कुंजी की तरह उपयोग में लाया जा रहा है

ईएसजी क्यों महत्त्वपूर्ण है?

विकास की चतुर्दिक फहरा रही ध्वजा ने हमारे जीवन में कुछ बहुत आवश्यक एवं लाभकारी परिवर्तन जरूर किए हैं किन्तु इसने नैसर्गिक नियमों एवं नैसर्गिक रूप से प्राप्त संसाधनों की अवहेलना करनी शुरू कर दी है, जिससे उनकी भावी उपयोगिता/उपलब्धता पर प्रश्न चिन्ह खड़े हो गए हैं। विकास की इस नकारात्मक बाह्यता(नेगेटिव एक्सटरनलिटी) का सर्वाधिक प्रभाव हमारे समाज एवं पर्यावरण पर ही हुआ है। इन नकारात्मक बाह्यताओं को कम करके समाज एवं पर्यावरण को कुछ सकारात्मक प्रदान करने की उत्कंठा ने ईएसजी को जन्म दिया। ईएसजी का प्रत्येक घटक अपने आप में अलग व्याख्या का आयाम संजोए हुए है जिसे निम्नवत समझने का प्रयास करते हैं:-

पर्यावरण(Environmental):

ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस) में **पर्यावरण स्तंभ** को वैश्विक स्तर पर पेश की जा रही पर्यावरण संबंधी चुनौतियों के कारण आज के परिप्रेक्ष्य में सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभों में से एक माना जाता है। "**पृथिवीं परितो व्याप्य तामाच्छाद्य स्थितं च यत्।**

जगदाधाररूपेण, पर्यावरणमुच्यते" अर्थात् जो संसार के आधार स्वरूप पृथ्वी के चारो ओर परिव्याप्त है तथा उसे आच्छादित करता हुआ स्थित है, वह पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण की यह परिभाषा ही उसकी महत्ता प्रतिपादन हेतु पर्याप्त है। फिर पर्यावरण के महत्त्वपूर्ण घटक **वृक्षों** के बारे में कहा गया-

अहो एषां वरं जन्म सर्व प्राण्युपजीवनम्।
धन्या महीरूहा येभ्यो निराशां यान्ति नार्थिन:॥

अर्थात् वृक्ष, जिनके पास से कभी कोई याचक निराश नहीं लौटता, ऐसे वृक्षों का जन्म श्रेष्ठ है। किन्तु आज पर्यावरण के इन घटकों का तेजी से हो रहा क्षरण मानवता के समक्ष सबसे बड़ी चुनौती बन गया है। बढ़ती हुई जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्राकृतिक संसाधनों का अधिकतम दोहन करने हेतु तकनीकी का सहारा लिया जा रहा है, जिससे एक तरफ पारिस्थिकीय संतुलन बिगड़ गया है तो दूसरी तरफ जीवन के लिए आवश्यक तत्वों जैसे जल, वायु, मृदा, ओज़ोन परत आदि की गुणवत्ता पर भी बहुत विपरीत प्रभाव पड़ा है। इससे **जलवायु परिवर्तन**, **जैव विविधता की हानि, ग्लेशियर एवं ध्रुवीय बर्फ का पिघलना, वातावरण के औसत तापमान में वृद्धि** जैसी गंभीर समस्याएँ, जो कि सम्पूर्ण मानव सभ्यता के भविष्य पर संकट हैं, उत्पन्न हो गई हैं। बढ़ती वैश्विक आबादी और उपभोग के बढ़ते स्वरूप ने जल, ऊर्जा और कच्चे माल जैसे सीमित संसाधनों पर अत्यधिक दबाव डाल दिया है। वातावरण संबंधी खतरे, जैसे कि प्रतिकूल मौसमी घटनाएं और संसाधनों की कमी, कारोबार के लिए काफी बड़ा खतरा हैं।

ईएसजी के माध्यम से पर्यावरण संबंधी चुनौतियों का समाधान करके, कंपनियां अपनी आघात-सहनीयता (रेज़िलिएन्स) बढ़ा सकती हैं और पर्यावरण संबंधी जोखिमों में एक्सपोज़र को कम कर सकती हैं। अनवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों की जगह नवीकरणीय ऊर्जा स्त्रोतों के उपयोग हेतु तकनीक को विकसित करके कॉर्पोरेट क्षेत्र संयुक्त राष्ट्र द्वारा निर्धारित मानदंडों की प्राप्ति में सकारात्मक योगदान दे सकता है।

पर्यावरण की संवहनीयता पर जोर देने से न केवल पर्यावरण की रक्षा होती है बल्कि दीर्घकालिक आर्थिक व्यवहार्यता, सामाजिक कल्याण और जिम्मेदार गवर्नेंस प्रथाओं के लिए भी आधार तैयार होता है।

आज की दुनिया में, सामाजिक समानता और समावेशन को बढ़ावा देने पर जोर दिया जा रहा है। ईएसजी के भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देने वाली कंपनियां **श्रम कानूनों का पालन** और मानव अधिकारों के प्रति सम्मान सुनिश्चित करती हैं। यह दृष्टिकोण **कामगारों के अधिकारों की रक्षा** करता है, शोषण को रोकता है और विश्व भर में काम करने की स्थिति में सुधार लाता है। सामाजिक विचार, **स्थानीय समुदायों और हितधारकों के साथ सकारात्मक संबंध** बनाने पर जोर देते हैं। कंपनियां जो समुदायों के साथ सक्रिय रूप से जुड़ी रहती हैं और उनकी चिंताओं का समाधान करती हैं, वे आपसी विश्वास और सतत् विकास को बढ़ावा देती हैं। व्यवसाय की निरंतरता और प्रतिष्ठा के लिए कर्मचारियों, **ग्राहकों और समुदायों के स्वास्थ्य और सुरक्षा** को सुनिश्चित करना महत्त्वपूर्ण है। सामाजिक रूप से उत्तरदायी कंपनियां अपने ग्राहकों की कुशलता और सुरक्षा को प्राथमिकता देती हैं। इसमें सुरक्षित उत्पाद और सेवाएं, नैतिक विपणन और डेटा की गोपनीयता का संरक्षण शामिल हैं।

आज के परिप्रेक्ष्य में ईएसजी में सामाजिक स्तम्भ महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने में सक्षम है जो समग्र रूप से कारोबार और समाज दोनों को प्रभावित करते हैं। सामाजिक उत्तरदायित्व को प्राथमिकता देकर, कंपनियां एक सकारात्मक प्रभाव डाल सकती हैं, हितधारकों का विश्वास बढ़ा सकती हैं और एक अधिक समावेशी, समान और संवहनीय विश्व में योगदान दे सकती हैं।

गवर्नेंस (Governance):

सुशासन पर जितना गहरा विचार और विश्लेषण भारतीय मनीषियों ने किया उतना संभवत: किसी ने भी नहीं किया। प्राचीन भारतीय चिंतन में नैतिक सुशासन का आधार तीन बिन्दुओं पर केन्द्रित था। प्रथम बिन्दु **सर्वलोककल्याणकारी कर्मा** (सार्वभौमिक कल्याण), द्वितीय बिन्दु **सर्वलोकसंग्रहामवापि** (सृष्टि में प्रत्येक व्यक्ति का रखरखाव और उनकी सुरक्षा करना) तथा तृतीय बिन्दु **सर्वहितेरथा:** (सभी के लिए सार्वभौमिक देखभाल सुनिश्चित करना) है। इस त्रिकोण का केन्द्रीय बिन्दु **सर्वे भवन्तु सुखिन:** (सभी के लिए सुख की कामना) है। इसी कारण ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस) के संदर्भ में गवर्नेंस/ सुशासन को कई कारणों से सबसे महत्त्वपूर्ण स्तंभ माना जाता है। जहां तीनों स्तंभ स्थायी और जिम्मेदार कारोबारी प्रथाओं में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, वहीं गवर्नेंस एक ऐसे आधार के रूप में कार्य करता है जिस पर अन्य दो

स्तंभ निर्मित किए जाते हैं और प्रभावी ढंग से कार्यान्वित किए जाते हैं। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि कंपनी की निर्णय लेने की प्रक्रिया पारदर्शी, जवाबदेह और समावेशी हो। मजबूत गवर्नेंस प्रथाओं से **जोखिमों की पहचान, आकलन और प्रभावी प्रबंधन** में मदद मिलती है। गवर्नेंस फ्रेमवर्क में ईएसजी विचारों को एकीकृत करके, **जलवायु परिवर्तन, सामाजिक मुद्दों और विनियामक परिवर्तनों** से संबंधित उभरते जोखिमों से निपटने के लिए कंपनियां बेहतर ढंग से तैयार हो सकती हैं।

सुशासन नैतिक आचरण और कानूनों, विनियमों और उद्योग के मानकों के अनुपालन को प्रोत्साहित करता है। मजबूत गवर्नेंस के लिए प्रतिबद्ध कंपनियों के **पर्यावरण और सामाजिक दायित्वों का पालन** करने की संभावना अधिक होती है। आज के परिदृश्य में, निवेशक, निवेश संबंधी निर्णय लेते समय ईएसजी कारकों पर अधिक ध्यान देते हैं। मजबूत गवर्नेंस प्रथाओं वाली कंपनियों को **सामाजिक रूप से जिम्मेदार, निवेशकों के लिए कम जोखिम भरा और अधिक आकर्षक** माना जाता है।

ईएसजी का गवर्नेंस पहलू कंपनी की आंतरिक प्रक्रियाओं, नीतियों और संरचनाओं की गुणवत्ता का मूल्यांकन करता है। इसमें निदेशक मंडल की विविधता, पारदर्शिता, नैतिक व्यवसाय प्रथाएं, कानूनों और विनियमों का अनुपालन, जोखिम प्रबंधन और शेयरधारकों के अधिकार जैसे कारक शामिल हैं। सुशासन यह सुनिश्चित करता है कि कंपनी नैतिक रूप से, जवाबदेही के साथ और सभी हितधारकों के सर्वोत्तम हित में कार्य करती है जो कि सभी के लिए लाभदायक है।

ईएसजी अनुपालन के लिए उठाए गए कदम:

भारतीय प्रतिभूति बाजार का विनियामक, भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड **(सेबी)** विभिन्न पहलों के माध्यम से भारत में ईएसजी निवेश को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता रहा है।

वर्ष 2012 में सेबी ने ईएसजी प्रकटीकरण पर **एक मार्गदर्शी नोट** जारी किया, जिसमें सिफारिश की गई थी कि भारतीय स्टॉक एक्सचेंजों में सूचीबद्ध कंपनियों को अपनी वार्षिक रिपोर्टों में ईएसजी कार्यनिष्पादन का प्रकटीकरण करना चाहिए। इस मार्गदर्शी नोट को 2015 में अद्यतन किया गया था ताकि अधिक विस्तृत रिपोर्टिंग आवश्यकताओं, जैसे कि जल उपयोग, ऊर्जा उपभोग और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन पर

रिपोर्टिंग को शामिल किया जा सके। उसके बाद से सेबी समय-समय पर ईएसजी प्रकटीकरण पर परिपत्र और दिशानिर्देश जारी करता रहा है, और कई कंपनियों ने अपने ईएसजी प्रदर्शन पर रिपोर्टिंग शुरू कर दी है।

2020 में, सेबी ने भारत में ईएसजी निवेश को बढ़ावा देने की दिशा में एक बड़ा कदम उठाया और शीर्ष **1,000 सूचीबद्ध कंपनियों** को वित्तीय वर्ष 2021-22 से अपनी वार्षिक रिपोर्टों में **ईएसजी से संबंधित जानकारी का प्रकटीकरण** करने के लिए अनिवार्य कर दिया। प्रकटीकरण आवश्यकताओं में कार्बन उत्सर्जन, जल उपयोग, अपशिष्ट प्रबंधन, विविधता और समावेशन, कर्मचारी स्वास्थ्य और सुरक्षा, और बोर्ड की संरचना सहित ईएसजी के कई मुद्दे शामिल हैं।

भारतीय रिज़र्व बैंक **(आरबीआई)** भी भारत में ईएसजी निवेश को बढ़ावा देता रहा है। वर्ष 2020 में, भारतीय रिज़र्व बैंक ने एक परिपत्र जारी किया जिसमें बैंकों को अपनी वार्षिक रिपोर्टों में ईएसजी से संबंधित जानकारी का प्रकटीकरण करने को कहा गया, जिसमें जलवायु जोखिम प्रबंधन, संवहनीय वित्त और सामाजिक उत्तरदायित्व पर उनकी नीतियों का प्रकटीकरण भी शामिल है। परिपत्र में बैंकों से यह भी कहा गया है कि वे हरित और सामाजिक परियोजनाओं के वित्तपोषण के बारे में रिपोर्ट करें।

अन्य राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं ईएसजी अनुपालन के लिए विभिन्न मानदंडों का सृजन कर कॉर्पोरेट क्षेत्र को उनके अनुपालन हेतु प्रेरित कर रहीं हैं जो कि एक अच्छा संकेत है।

ईएसजी अनुपालन में चुनौतियाँ

जहां ईएसजी को अपनाने में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, वहीं इसके व्यापक कार्यान्वयन में चुनौतियां बनी हुई हैं। कंपनियों को डेटा एकत्र करने, प्रभाव को मापने और सार्थक लक्ष्य निर्धारित करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। इसके अलावा, मानकीकृत रिपोर्टिंग फ्रेमवर्क के अभाव में ईएसजी प्रकटीकरण में असंगतता आती है। इन चुनौतियों का सामना करने के लिए सरकारों, व्यवसायों, निवेशकों और अन्य हितधारकों के बीच सहयोग आवश्यक है। सरकारें नीतिगत ढांचों और प्रोत्साहनों के माध्यम से ईएसजी प्रथाओं को बढ़ावा देने में प्रयासरत हैं फिर भी कॉर्पोरेट क्षेत्र की सक्रिय प्रतिभागिता के बिना वांछित लक्ष्यों की प्राप्ति नहीं हो पाएगी।

निष्कर्ष:

हाल के वर्षों में ईएसजी को काफी महत्त्व मिला है क्योंकि निवेशक और समाज इस बात से और अधिक अवगत हो गए हैं कि कारोबार का वातावरण और समाज पर कितना प्रभाव पड़ता है। ईएसजी प्रथाओं को प्राथमिकता देने वाली कंपनियों को अधिक जिम्मेदार, टिकाऊ और दीर्घकालिक चुनौतियों का सामना करने के लिए बेहतर रूप से तैयार माना जा रहा है। इसके अलावा, निवेशक और उपभोक्ता निर्णय लेते समय ईएसजी कारकों पर तेजी से विचार कर रहे हैं, जिससे कंपनियों को अधिक जिम्मेदार और टिकाऊ कारोबारी प्रथाओं को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

ईएसजी प्रतिफलों का एकीकरण व्यवसायों को न केवल अपने शेयरधारकों के लिए मूल्य सृजित करने की अनुमति देता है, बल्कि पर्यावरण और सामाजिक कल्याण में भी सकारात्मक योगदान देता है, जिससे आगे चलकर अधिक समावेशी और टिकाऊ विकास होता है।

यदि ईएसजी मानदंडों का कॉर्पोरेट क्षेत्र द्वारा ज़िम्मेदारी पूर्वक अनुपालन किया जाता है तो सतत् विकास लक्ष्यों को अधिक आसानी से प्राप्त किया जा सकेगा एवं एक खुशहाल, साधनसंपन्न, भविष्य के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने वाले समाज का निर्माण अवश्यंभावी हो सकेगा।

*****

जयपाल सिंह

पदनाम:- वरिष्ठ प्रबंधक (राजभाषा)
संस्था का नाम:- बैंक ऑफ़ बड़ौदा
मोबाइल नं. :- 9950393161
ई-मेल:- kunwarjaipal04@gmail.com

उपलब्ध संसाधनों का सम्पूर्ण दोहन हमेशा से मानव सभ्यता की प्रवृत्ति रही है। पुरा-पाषाण काल में अग्नि के आविष्कार से लेकर इक्कीसवीं सदी के अविश्वसनीय आविष्कारों तक, मनुष्य की तकनीकी महत्त्वकांक्षा बढ़ती ही गयी है। इसी के साथ बढ़ता गया है प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का अंतहीन सिलसिला जो आज भी बदस्तूर जारी है। कल की चिंता किए बिना प्रकृति के असीमित दोहन ने आज विश्व को ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर दिया है जहां ग्लोबल वार्मिंग, बढ़ते तापमान के साथ पिघलते ग्लेशियर, विकास के नाम पर चलती जेसीबी के कारण दरकते पहाड़, उफनती नदियां, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण और प्लास्टिक एवं कचरे के पहाड़ जैसी समस्याएं उसके सामने मुंह बाए खड़ी हैं। समाधान के नाम पर आयोजित वैश्विक सम्मेलनों में लिए गए संकल्पों के परिणामों को जमीन पर आने में बहुत वक़्त लगेगा। ऐसे में जरूरी ये है कि हर व्यक्ति और संस्थान अपनी ज़िम्मेदारी को समझे और प्रकृति के संरक्षण को प्राथमिकता पर रखते हुए आजीविका और व्यावसायिक लाभ अर्जित करने की सोच रखे। इसी सोच के इर्द-गिर्द ईएसजी अर्थात पर्यावरणीय, सामाजिक शासन व्यवस्था की संकल्पना बुनी गयी है।

ईएसजी क्या है ?

वस्तुतः ईएसजी एक संगठन-व्यापी दृष्टिकोण है जो व्यावसायिक स्थिरता बढ़ाने के लिए संगठन में पर्यावरणीय, सामाजिक और शासन प्रथाओं को समायोजित करने की वकालत करता है। इसमें व्यवसाय की सफलता और वृद्धि सीधे एक ठोस ईएसजी रणनीति से जुड़ी हुई होती है जो पर्यावरण या समाज पर कोई नकारात्मक प्रभाव पैदा किए बिना दीर्घकालिक परिणाम प्राप्त करने पर केन्द्रित होती है। ईएसजी में गवर्नेंस शब्द को कॉर्पोरेट क्षेत्र में कहीं-कहीं कॉर्पोरेट गवर्नेंस शब्द से भी संदर्भित किया जाता है।

किसी भी कॉर्पोरेट संस्थान के लिए एक अच्छी ईएसजी रणनीति क्या हो सकती है ? इसका निर्धारण करते समय यह ध्यान में रखना जरूरी है कि इसके अंतर्गत की जाने वाली पहलें व्यवसाय उन्मुखी हों, इनका कार्यान्वयन आसान हो और यह कंपनी के लिए निवेशकों का विश्वास हासिल करने, ग्राहकों का भरोसा अर्जित करने, परिचालन लागत को कम करने और परिसंपत्ति प्रबंधन और वित्तीय प्रदर्शन दोनों में सुधार करने वाली हो। एक आदर्श ईएसजी रणनीति में निम्नलिखित तीन महत्त्वपूर्ण कारकों का समावेश होना जरूरी है, जैसे – संस्थान में हरित संस्कृति का विकास, कार्बन फुटप्रिंट में कमी के उपाय करना और कर्मचारी कल्याण कार्यक्रमों को प्रस्तुत करने की दिशा में कंपनी के प्रयास करना।

संस्थान में हरित संस्कृति का विकास :

किसी भी कॉर्पोरेट संस्थान के लिए ईएसजी लागू करने का पहला कदम है हरित संस्कृति का विकास। कंपनी के हर कदम में इसकी झलक मिलनी चाहिए। उदाहरण के लिए विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रोनिक और अन्य उपहारों के स्थान पर संस्थान में नन्हें पौधे प्रदान किए जाने की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाना ताकि और लोग भी इस और प्रेरित हों।

कार्बन फुटप्रिंट में कमी के उपाय :

ईएसजी का मुख्य उद्देश्य ही है, कार्बन फुटप्रिंट में कमी लाकर पर्यावरण को भावी नुकसान से बचाना। इससे किसी भी कंपनी को परिचालनगत लाभ भी प्राप्त होते हैं। उदाहरण के लिए वो बैंक जो पेपरलेस बैंकिंग की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं, वे तेजी से ग्राहक आधार तो जुटा ही रहे हैं, दूसरी ओर लाखों पेपर्स के खर्च से स्वयं को बचाकर परिचालन खर्च में भी कमी लाने के साथ ही पर्यावरण संरक्षण की ओर से कदम बढ़ा रहे हैं।

कर्मचारी कल्याण कार्यक्रम :

एक संपन्न व्यवसाय के लिए, आपको संपन्न कर्मचारियों की आवश्यकता होती है। जब एक कर्मचारी आनंदित होकर अपना काम करता है तो उसके दूसरे नौकरी पर स्विच करने की संभावना कम होती है। किसी व्यवसाय के लिए मानव संसाधन का छोड़ कर जाना जहां एक ओर प्रशिक्षित स्टाफ की कमी के रूप में सामने आता है, वहीं दूसरी ओर नए स्टाफ की भर्ती प्रक्रिया सहित फिर से प्रशिक्षित करने तक की लागत संस्था को वहन करनी पड़ती है। ईएसजी के अंतर्गत मानव संसाधन प्रबंधन का मूल मंत्र है कार्य स्थल पर कार्मिकों की देखभाल। एक नियोक्ता के रूप में, कर्मचारियों

का स्वास्थ्य और खुशहाली उन्हें काम पर खुश करने से कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। यह साबित हो चुका है कि कार्यस्थल पर स्वास्थ्य को बढ़ावा देने से कर्मचारी अधिक उत्पादक बनता है। कार्मिकों के लिए कर्मचारी कल्याण योजनाओं को लागू करने से सामान्य कर्मचारी के संस्थान से जुड़ाव में सुधार होता है जो कहीं न कहीं उत्पादकता बढ़ाता है।

कॉर्पोरेट जगत के लिए ईएसजी के लाभ

ईएसजी ढांचे का उपयोग कॉर्पोरेट्स और निवेशकों दोनों के लिए लाभ का सौदा है। कॉर्पोरेट्स के लिए यह पूंजी के एक बड़े पूल तक पहुंच सुनिश्चित करता है और एक मजबूत ब्रांड इमेज को बढ़ावा देता है, वहीं दूसरी ओर निवेशक ईएसजी-केंद्रित ब्रांड में निवेश के माध्यम से बेहतर रिटर्न प्राप्त कर सकते हैं जो पारंपरिक दृष्टिकोण वाले संस्थानों के माध्यम से अधिक स्थायित्व का भाव देते हैं।

व्यवसायों के लिए ईएसजी के पांच लाभ यहां दिए गए हैं:

1. प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्रदान करता है

ईएसजी पहल करने वाली कंपनियां अक्सर व्यावसायिक प्रतिद्वंद्वियों पर प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त करती हैं। उदाहरण के लिए अधिकतर ग्राहक रासायनिक उत्पादों की तुलना में पर्यावरण के अनुकूल उत्पादों को खरीदने के लिए अतिरिक्त पैसा खर्च करने के लिए तैयार होंगे। कंपनी उन विक्रेताओं से आईटी उत्पादों के लिए प्रीमियम का भुगतान करेगी जिनके पास मजबूत ईएसजी प्रथाएं हैं। कंपनियों द्वारा ट्रैक और रिपोर्ट किए गए विभिन्न ईएसजी मैट्रिक्स उपभोक्ताओं, कर्मचारियों, उधारदाताओं और नियामकों के लिए भी महत्त्वपूर्ण हैं। वे कॉर्पोरेट संस्थान जो श्रम स्थितियों में सुधार के प्रयास करते हैं, विविधता को बढ़ावा देते हैं, सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर एक स्टैंड लेते हैं, वे अपनी कंपनी के ब्रांड को मजबूत करने में बना रहे हैं।

2. निवेशकों और उधारदाताओं को आकर्षित करता है

कॉर्पोरेट सेक्टर में आजकल अपनी बैलेन्स शीट में या अलग-अलग प्रकटीकरण में ईएसजी रिपोर्टिंग को शामिल करना ट्रेंड कर रहा है। निवेशक और ऋणदाता उन संगठनों के प्रति अत्यधिक आकर्षित हो रहे हैं जो ईएसजी में निवेश करते हैं और संस्थागत स्थायित्व के लिए ईएसजी प्रकटीकरण का उपयोग करते हैं। एक अनुमान के मुताबिक आने वाले तीन वर्षों में ईएसजी निवेश के दोगुने से भी अधिक हो जाने की संभावना है। महामारी, जलवायु परिवर्तन और प्राकृतिक संसाधनों के दुरुपयोग के कारण उत्पन्न चिंताएं निवेशकों को स्थायी व्यवसायों की ओर अपना निवेश

स्थानांतरित करने और पुरानी प्रथाओं जैसे अनुचित मजदूरी, जीवाश्म ईंधन में निवेश, अस्थिर कृषि विधियों और गैर-पुनर्नवीनीकरण योग्य उत्पादों के निर्माण के क्षेत्र से बाहर निकालने के लिए प्रेरित कर रही हैं। अब कम जोखिम प्रोफ़ाइल के साथ स्थायी भविष्य प्रदान करने वाले ईएसजी पहल से जुड़े व्यवसाय निवेशकों को अधिक आकर्षित कर रहे हैं।

3. वित्तीय प्रदर्शन में सुधार

ईएसजी न केवल एक व्यवसाय को निवेशकों के अनुकूल बनाता है, बल्कि यह एक व्यवसाय के समग्र वित्तीय प्रदर्शन में भी सुधार करता है। स्थिरता की दिशा में किए गए छोटे-छोटे प्रयास जैसे - पेपरलेस होना, रीसाइक्लिंग या ऊर्जा-कुशल अपडेशन करना - व्यवसाय में परिचालनगत सुधार कर लाभ उन्मुख बना सकते हैं। कॉर्पोरेटस को ईएसजी कार्यक्रमों के प्रमुख मैट्रिक्स को हमेशा ट्रैक करना चाहिए - जैसे ऊर्जा की खपत, कच्चे माल का उपयोग और अपशिष्ट उपचार - जो अंततः ऊर्जा बिलों को कम करते है और लागत में कटौती करते हैं। ईएसजी से संबंधित नियमों का अनुपालन करने वाले संस्थानों को जुर्माना, दंड और अन्य व्यावसायिक जोखिमों का भी कम जोखिम होता है, जो उनकी लाभप्रदता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, उन क्षेत्रों में जहां प्लास्टिक पैकेजिंग के उपयोग के खिलाफ सख्त कानून हैं, वहाँ ऐसी कंपनियाँ जो इको-फ्रेंडली कैरी बेग्स के विनिर्माण से जुड़ी हैं, का भविष्य उज्ज्वल और अधिक स्थायी है।

4. ग्राहकों का विश्वास बढ़ाता है

बदलते दौर के साथ उत्पादों की खरीदारी करते समय ग्राहकों ने अपनी प्राथमिकताओं को फिर से तय किया है। अब उपभोक्ता उन ब्रांडों के लिए अतिरिक्त भुगतान करने के लिए तैयार हैं जो उनके मूल्यों के साथ संरेखित होते हैं और उन संगठनों के प्रति अधिक वफादार होते हैं जो लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करते हैं। आज के सामाजिक रूप से जागरूक उपभोक्ता यह जानने में दिलचस्पी रखते हैं कि वे जिन व्यवसायों का समर्थन करते हैं, वे सामाजिक उत्थान के लिए क्या कर रहे हैं। ईएसजी सिद्धांतों का पालन करने वाली कंपनियां पारदर्शी होने और ग्राहकों को अपने ईएसजी प्रयासों को प्रभावी ढंग से संवाद करके अधिक ग्राहकों को आकर्षित और बनाए रख सकती हैं।

5. कंपनी के परिचालन तंत्र में स्थायित्व लाता है

ईएसजी पहल में निवेश करने वाली कंपनियां एक बदलते परिदृश्य को अपने अनुसार

ढाल सकती हैं। जो व्यवसाय अपने परिचालन में ईएसजी सिद्धांतों का ठीक से एकीकरण करते हैं, वे लागत-बचत के अवसरों की पहचान करने और कम ऊर्जा खपत, कम संसाधन अपशिष्ट और परिचालन लागत में समग्र कमी का आनंद लेने में सक्षम होते हैं। कॉर्पोरेट विश्व अब स्वेच्छा से ईएसजी रिपोर्टिंग की दिशा में आगे बढ़ रहा है। ईएसजी नीतियों की अनदेखी करने वाली कंपनियों को बाद में कानूनी, नियामक, प्रतिष्ठा और अनुपालन मुद्दों के रूप में उनसे निपटना पड़ सकता है।

चुनौतियां

उपरोक्त लाभों के बावजूद भी, कभी-कभी, संसाधनों की कमी से ईएसजी रणनीति को अपनाने में समस्या हो सकती है और तुलनात्मक रूप से छोटे व्यवसायों को लग सकता है कि उनके ईएसजी प्रयास लंबे समय तक परिणाम नहीं देंगे। हालांकि, ईएसजी में निवेश - यहां तक कि छोटे पैमाने पर भी - हमेशा एक व्यवसाय पर सकारात्मक प्रभाव डालेगा। छोटे व्यवसाय अक्सर अपने ग्राहकों के करीब होते हैं और उनके पास अपनी स्थिरता की कहानियों को साझा करने और गहरे स्तर पर जुड़ने के पर्याप्त अवसर होते हैं। इधर, बड़े संगठनों के पास ईएसजी नीतियों को स्थापित करने या उच्च-स्तरीय स्थिरता प्राप्त करने के लिए अतिरिक्त संसाधन हो सकते हैं, किन्तु यहाँ नौकरशाही और लालफीताशाही के सामना एक ऐसी चुनौती है जिसका बड़े संगठनों का सामना करना होता है।

निष्कर्ष

ईएसजी पर्यावरण, सामाजिक और शासन मैट्रिक्स का उपयोग करके एक स्थिरता मूल्यांकन है ताकि यह मूल्यांकन किया जा सके कि एक कंपनी अपने स्थिरता के दावों के लिए जवाबदेह बनाने के लिए कितनी टिकाऊ और लचीली है। एक प्रभावी ईएसजी योजना जोखिम प्रबंधन, लागत में कमी और पर्यावरण की देखभाल के लिए कंपनी की प्रतिबद्धता को प्रदर्शित करती है। साथ ही, यह ये भी इंगित करता है कि एक कंपनी के पास सामाजिक आर्थिक मुद्दों पर एक मजबूत रुख है - जिसमें ग्राहक संतुष्टि, श्रम मानक, सामाजिक अन्याय और टिकाऊ निवेश शामिल हैं और वो बदलते बाजार के साथ सक्रिय रूप से विकसित होने के लिए तैयार है। हाल के वर्षों में, जिस प्रकार से ईएसजी में निवेशकों और अन्य कॉर्पोरेट हितधारकों की रुचि आसमान छू गई है, इसे देखते हुए इसे दशक की सबसे बड़ी प्रवृत्ति भी कहा जा सकता है।

*****

बसंत कुमार

पदनाम:- वरिष्ठ सहयोगी
संस्था का नाम:- भारतीय स्टेट बैंक
मोबाइल नं. :- 9904320968
ई-मेल:- basant.kumar5@sbi.co.in

ईएसजी क्या है:

ईएसजी वैश्विक स्तर पर कॉर्पोरेट व्यवस्था का एक मापदंड है जिसे पर्यावरण, सामाजिक और शासन मापदंड के रूप में व्यक्त किया जाता है। आज सतत विकास लक्ष्यों को ध्यान में रखकर विभिन्न कंपनियों द्वारा अपनाए जाने वाले व्यापक प्रक्रियाओं और व्यवस्थाओं में **ईएसजी** यानी **पर्यावरण, सामाजिक और कॉर्पोरेट प्रशासन** का महत्त्वपूर्ण स्थान है। ईएसजी किसी भी संगठन की विश्वसनीयता या प्रतिष्ठा को बनाए रखने में मदद करता है।

लाभ किसी भी उद्यम का केन्द्रबिन्दु होता है तो वहीं ई एस जी उस परिधि के सदृश्य है जिसके भीतर ही केंद्र की परिकल्पना संभव है।

हाल के वर्षों में जलवायु परिवर्तन के साथ- साथ सामाजिक क्षेत्र में समानता, विविधता और जन-कल्याण तथा कंपनियों की संरचना, पारदर्शिता जोखिम प्रबंधन आदि मानकों संबंधी चुनौतियों ने ईएसजी के मापदंडों तथा अनुपालनों को अति महत्त्वपूर्ण बना दिया है।

ईएसजी के विकास में महत्त्वपूर्ण पड़ाव:

- वर्ष 1960-70 के बीच में जागरूक उद्यमियों के द्वारा SRI यानी सोसियली रेस्पोंसिबल इन्वेस्टिंग के तर्ज पर नई सोच की अवधारणा विकसित हुई। इसमें निवेश संबंधी निर्णय करते समय वित्तीय प्रदर्शनों के अलावा पर्यावरण और सामाजिक असर को भी ध्यान में रखने की बात की गई।
- वर्ष 1970-80 के बीच में CSR यानी कॉर्पोरेट सोशल रेस्पोंसीबीलिटी की बात कही गई और उत्पादन प्रक्रिया तथा सम्पूर्ण उद्यम व्यवस्था में पर्यावरण और उसके कारण होने वाले सामाजिक असर पर काफी जोर दिया गया।

- वर्ष 1997 में GRI यानी ग्लोबल रिपोर्टिंग इनिसिएटिव के द्वारा सतत रिपोर्टिंग दिशानिर्देशों की स्थापना हुई।
- वर्ष 2000 में संयुक्त राष्ट्र ने ग्लोबल कॉम्पैक्ट की शुरुवात की। स्वैच्छिक पहल के द्वारा जो कंपनियाँ इसे स्वीकारती थी वे पर्यावरण, मानव अधिकार, श्रम और भ्रष्टाचार विरोधी आदि से संबंधित अनुमोदित दस सिद्धांतों के प्रति अपनी प्रतिबद्धतता दिखाती थी।
- वर्ष 2006 में UN-PRI यानी यूनाइटेड नेशंस प्रिन्सिपल फॉर रेस्पोंसिबल इनवेस्टमेंट में ईएसजी को ढांचागत रूप में आधुनिक समय के उद्यम की अविभाज्य कड़ी के रूप में मान्यता प्रदान की गई है।
- ईएसजी मानदंडों के आधार के रूप मे वर्ष 2015 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा सतत विकास लक्ष्य एस डी जी(SUSTAINABLE DEVELOPEMENTAL GOALS) ढांचे को विकसित किया गया। इसमें पर्यावरण और सामाजिक मुद्दों से जुड़े 17 बिन्दुओं को रेखांकित किया गया है।
- वर्ष 2020 में विश्व आर्थिक मंच (world economic forum) से इस सोच को मुख्यधारा प्रदान की गई। इस व्यवस्था के तहत परिसंपत्ति प्रबंधन और सम्पूर्ण व्यवसाय तेजी से ईएसजी कारकों को तेजी से अपनी रणनीतिक, जोखिम प्रबंधन प्रथाओं और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल कर रहे है।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: वर्तमान परिदृश्य

- **पर्यावरणीय महत्त्व:**

जलवायु परिवर्तन संबंधी चिंताएं व्यवसायों पर जलवायु परिवर्तन से निपटने और अपने कार्बन पदचिह्न को कम करने का दबाव बढ़ा रही हैं। इसलिए टिकाऊ प्रथाओं की ओर परिवर्तन और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों को अपनाना आवश्यक कदम हैं।

संसाधन प्रबंधन: जल संरक्षण और अपशिष्ट कटौती जैसे जिम्मेदार संसाधन प्रबंधन, कंपनियों को अधिक कुशल और पर्यावरण के अनुकूल बनने में मदद करता है।

विनियामक अनुपालन: पर्यावरणीय नियम अधिक कठोर होते जा रहे हैं, और जो व्यवसाय ऐसे नियमों का पालन करते हैं, वे अपने जोखिम और संभावित कानूनी देनदारियों को कम करते हैं।

♦ **सामाजिक महत्त्व:**

हितधारक संबंध: मजबूत सामाजिक प्रतिबद्धताओं वाली कंपनियां कर्मचारियों, ग्राहकों, आपूर्तिकर्ताओं और समुदायों सहित हितधारकों के बीच विश्वास और वफादारी का निर्माण करती हैं। सामुदायिक विकास परियोजनाओं में संलग्न होने से कंपनी की प्रतिष्ठा बढ़ती है।

कर्मचारी कल्याण: सकारात्मक कार्य वातावरण को बढ़ावा देना, विविधता और समावेशन को बढ़ावा देना तथा कर्मचारी कल्याण को प्राथमिकता देना ऐसे कारक हैं जो उच्च उत्पादकता, नौकरी से संतुष्टि और कारोबार में योगदान करते हैं।

उपभोक्ता प्राथमिकताएँ: उपभोक्ता तेजी से ऐसे व्यवसायों को पसंद कर रहे हैं जो सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक प्रथाओं को प्रदर्शित करते हैं। सामाजिक मूल्यों के साथ जुड़ने से ब्रांड प्रतिष्ठा और ग्राहक वफादारी बढ़ती है।

♦ **शासन महत्त्व:**

पारदर्शिता और जवाबदेही: मजबूत शासन पद्धतियाँ पारदर्शी और जवाबदेह निर्णय लेने की प्रक्रिया सुनिश्चित करती हैं। शेयरधारक और हितधारक उन कंपनियों की सराहना करते हैं जो ईमानदारी के उच्च मानक बनाए रखते हैं।

प्रभावी जोखिम प्रबंधन: मजबूत प्रशासन संरचनाएं संभावित जोखिमों को अधिक कुशलता से पहचानने और संबोधित करने में मदद करती हैं, जिससे कंपनी की दीर्घकालिक स्थिरता और लचीलेपन में योगदान होता है।

निवेशकों का विश्वास: निवेशक निवेश संबंधी निर्णय लेते समय शासन पद्धतियों पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। बेहतर प्रशासन वाली कंपनियां अधिक निवेश आकर्षित करती हैं और पूंजी तक बेहतर पहुँच बना पाती हैं।

विभिन्न देशों में नियामक निकाय ईएसजी प्रकटीकरण को अनिवार्य करने या प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठा रहे हैं, जिससे कंपनियों को पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करने के लिए प्रेरित किया जा रहा है। आज ईएसजी से जुड़े हर घटक जैसे पर्यावरणविद्, समाजशास्त्री, अर्थशास्त्री, रणनीतिकार, प्रौद्योगिकीविद् आदि इस बात पर ध्यान केन्द्रित कर रहे है कि पर्यावरण, समाज और शासन का मुदा केवल बातों में सिमट कर न रह जाए बल्कि इसे यथार्थ रूप में धरातल पर उतारा जाए।

Who cares, wins के सिद्धान्त इस परिप्रेक्ष में वर्तमान और दीर्घकालिक सत्य हैं।

वर्तमान में इस दिशा में किए जा रहे कार्य की रूप-रेखा

ईएसजी एकीकरण: कई कंपनियों ने ईएसजी कारकों को अपनी समग्र व्यावसायिक रणनीतियों, जोखिम प्रबंधन प्रक्रियाओं और निर्णय लेने में एकीकृत करना शुरू कर दिया है। इस एकीकरण में प्रदर्शन और दीर्घकालिक स्थिरता का आकलन करने के लिए पारंपरिक वित्तीय मैट्रिक्स के साथ-साथ पर्यावरण, सामाजिक और शासन पहलुओं पर विचार करना शामिल है।

ईएसजी रिपोर्टिंग में वृद्धि: निगम अधिक व्यापक स्थिरता रिपोर्ट प्रकाशित कर रहे हैं और निवेशकों, नियामकों और अन्य हितधारकों को ईएसजी से संबंधित जानकारी का खुलासा कर रहे हैं। ये रिपोर्ट स्थिरता लक्ष्यों और जिम्मेदार प्रथाओं की दिशा में उनके प्रयासों और प्रगति को प्रदर्शित करती हैं।

जलवायु परिवर्तन पर ध्यान: जलवायु परिवर्तन, व्यवसायों और निवेशकों दोनों के लिए ईएसजी एक महत्त्वपूर्ण चिंता के रूप में उभरा है। कंपनियाँ ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने, नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों में परिवर्तन और उनके पर्यावरणीय प्रभाव को संबोधित करने के लिए पहल कर रही हैं।

सामाजिक प्रभाव और विविधता: कंपनियां अपने सामाजिक प्रभाव, कर्मचारी कल्याण और विविधता और समावेशन प्रथाओं पर अधिक ध्यान दे रही हैं। श्रम मानकों में सुधार, कार्यस्थल विविधता को बढ़ावा देने और स्थानीय समुदायों का समर्थन करने के प्रयासों को महत्त्व मिला है।

शासन और नैतिकता: निवेशकों के विश्वास और जोखिम प्रबंधन के लिए मजबूत कॉर्पोरेट प्रशासन प्रथाओं को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। कंपनियां अपने शासन ढांचे को तेजी से बदल रही हैं और अपने हितधारकों के प्रति अधिक पारदर्शी और जवाबदेह हो रही हैं।

नियामक परिवर्तन: कई देशों और क्षेत्रों ने ईएसजी रिपोर्टिंग और प्रकटीकरण आवश्यकताओं से संबंधित नियम पेश या प्रस्तावित किए हैं। इन विनियमों का अनुपालन उन क्षेत्रों में काम करने वाली कंपनियों के लिए महत्त्वपूर्ण हो गया है।

निवेशकों की रुचि: ईएसजी मापदंडों ने निवेशकों के बीच प्रमुखता हासिल की है। संस्थागत निवेशक, आस्ति प्रबंधक और व्यक्तिगत निवेशक, निवेश संबंधी निर्णय लेते समय ईएसजी प्रदर्शन का एक प्रमुख कारक के रूप में मूल्यांकन कर रहे हैं।

स्थिरता पहल: कंपनियां विभिन्न स्थिरता पहल कर रही हैं, जैसे उत्सर्जन में कमी के लक्ष्य निर्धारित करना, नवीकरणीय ऊर्जा लक्ष्य स्थापित करना, अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना और आपूर्ति श्रृंखला स्थिरता में सुधार करना।

भारत में इस दिशा में अद्यतन कार्य :

भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) ने 2021 में एक **बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग (BRSR)** फ्रेमवर्क पेश किया। इस फ्रेमवर्क के लिए भारत में शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों को अपनी वार्षिक रिपोर्ट में ESG से संबंधित जानकारी रिपोर्ट करने की आवश्यकता बताई गई है। बीआरएसआर दिशानिर्देश कंपनियों को अपनी स्थायी प्रथाओं के बारे में अधिक पारदर्शी होने को प्रोत्साहित करते हैं।

कॉर्पोरेट सामाजिक उत्तरदायित्व (सीएसआर) अधिनियम: भारत में कंपनी अधिनियम, 2013 के तहत एक अनिवार्य सीएसआर का प्रावधान है। कुछ वित्तीय मानदंडों को पूरा करने वाली कंपनियों को सीएसआर गतिविधियों पर पिछले तीन वित्तीय वर्षों से अपने औसत शुद्ध लाभ का कम से कम 2% खर्च करना आवश्यक है। ये गतिविधियाँ आम तौर पर शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल, पर्यावरणीय स्थिरता और गरीबी उन्मूलन जैसी सामाजिक और पर्यावरणीय पहलों को कवर करती हैं।

सतत वित्त पहल: भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) और सेबी स्थायी वित्त पहल को प्रोत्साहित कर रहे हैं, जिसमें ग्रीन बांड, सामाजिक बांड और स्थिरता से जुड़े बांड शामिल हैं। ये उपकरण पर्यावरण और सामाजिक रूप से जिम्मेदार परियोजनाओं के लिए वित्त पोषण को बढ़ावा देते हैं।

सरकारी योजनाएँ और अन्य पहल: भारत सरकार ने नवीकरणीय ऊर्जा, ऊर्जा दक्षता और सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न पहल शुरू की हैं। उदाहरण के लिए, **"आत्मनिर्भर भारत अभियान"** में हरित और स्वच्छ ऊर्जा, विद्युत गतिशीलता और पर्यावरण संरक्षण को बढ़ावा देने के प्रावधान शामिल हैं।

ग्रीन बिल्डिंग इनीसिएटिव: भारत में ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणीकरण और टिकाऊ निर्माण प्रथाओं में वृद्धि देखी गई है। इंडियन ग्रीन बिल्डिंग काउंसिल (आईजीबीसी) और लीडरशिप इन एनर्जी एंड एनवायर्नमेंटल डिजाइन (एलईईडी) प्रमाणन देश के कुछ प्रसिद्ध ग्रीन बिल्डिंग प्रमाणन कार्यक्रम हैं।

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व: भविष्य

कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस) का महत्त्व भविष्य में और भी बढ़ जाएगा। आने वाले समय में ईएसजी की महत्त्वपूर्ण भूमिका है क्योंकि यह कंपनियों के लिए वित्तीय विकास, समाजिक प्रतिष्ठा, और वातावरणीय संरक्षण में मदद करता है।

आने वाले वर्षों में ईएसजी द्वारा व्यावसायिक प्रथाओं, वित्तीय निर्णयों और हितधारकों की अपेक्षाओं के बने रखने की संभावना है। इस क्षेत्र में कथनी और करनी में अभी भी काफी अंतर है। अतएव यह जरूरी होगा कि टेक्नोलोजी कि मदद से इस दिशा में किए गए कार्यों पर निगरानी रखी जाए और उसका सतत विश्लेषण भी किया जाए। उम्मीद है कि भविष्य में इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों को और अधिक पारदर्शी बनाया जाएगा और लक्ष्य निर्धारित कर इसके समयबद्ध प्राप्ति पर बल दिया जाएगा। संयुक्त राष्ट्र ने भी 2030 तक, वैश्विक चुनौतियों का समाधान करने और अधिक टिकाऊ तथा समावेशी दुनिया बनाने के लिए सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) को प्राप्त करने का संकल्प लिया है।

निम्नलिखित कुछ कारण बताते हैं कि भविष्य में ईएसजी का महत्त्व बढ़ता रहेगा:

- **पर्यावरणीय बदलाव के प्रति जागरूकता**: भविष्य में भूकंप, बाढ़, तूफ़ान, और जलवायु परिवर्तन जैसे पर्यावरणीय बदलाव की जागरूकता बढ़ने के साथ, कंपनियों को अपने उत्पादन और व्यावसायिक कार्यक्रमों को वायु प्रदूषण, पानी की बचत, और ऊर्जा की उपयोगिता की दिशा में बदलने की आवश्यकता है।
- **स्थायी और जिम्मेदार विकास**: उच्च जलवायु रिस्क और पर्यावरणीय प्रतिष्ठा बढ़ने के साथ, कंपनियों को विकसित करने के लिए संसाधनों का सुरक्षित और सामर्थ्यपूर्ण उपयोग करने के लिए सुरक्षित करने की आवश्यकता है। पर्यावरणीय उत्थान, जल संसाधन के बचत, और वृद्धि, और विद्युत उत्पादन में नई तकनीकों का उपयोग ईएसजी का महत्त्वपूर्ण हिस्सा होंगे।

- **समाज सेवा और सहयोग**: सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए, कंपनियों को नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को अपनाने में सक्षम होने की आवश्यकता है। शिक्षा, स्वास्थ्य और गरीबी उन्मूलन जैसे क्षेत्रों में सामाजिक प्रतिष्ठा के साथ कंपनियों को योजनाएं और परियोजनाएं चलाने की जरूरत होती है।
- **कर्मचारियों की संख्या में विविधता और सम्मान**: भविष्य में ईएसजी कंपनियों को कर्मचारियों के बीच विविधता और सम्मान बढ़ाने के लिए मदद करेगा। धार्मिकता, स्वास्थ्य और वेतन-भत्ते के मानकों का पालन करना, कंपनियों को उत्कृष्टता और विकास के माध्यम से कर्मचारियों के साथ उच्च संबंध स्थापित करने में मदद करेगा।
- **संवेदनशीलता और उत्कृष्टता**: सशक्त गवर्नेंस अनुसार कंपनियों को संवेदनशीलता और उत्कृष्टता को बढ़ाने में मदद मिलती है। शेयरधारकों और साझेदारों के लिए एक स्पष्ट और जवाबदेह निर्णय लेने के लिए मजबूत गवर्नेंस योजनाएं अपनाने से कंपनियाँ अधिक भरोसेमंद होती हैं।
- **प्रशासनिक सुशासन**: संबंधित सरकारी नियंत्रण नीतियों का पालन करने में सक्षमता बढ़ाने के लिए गवर्नेंस अपडेट करना जरूरी होता है। कंपनियां जो अच्छी गवर्नेंस योजना अपनाती हैं, उन्हें आवश्यकतानुसार रख-रखाव और परिसरद्वारा उत्पन्न समस्याओं का सामना करने की क्षमता होती है।

भविष्य में, ईएसजी का महत्त्व व्यापारिक क्षेत्र में और भी बढ़ जाएगा, क्योंकि लोग और संगठन विज्ञान के साथ पर्यावरणीय, सामाजिक, और गवर्नेंस मुद्दों के प्रति संवेदनशीलता दिख रहे हैं। भविष्य में पर्यावरणीय, सामाजिक, और गवर्नेंस दृष्टिकोण से विचार करने वाली कंपनियां ही अधिक सफल होंगी और दुनिया के संतुलित विकास में सहायता प्रदान करेंगी।

संदर्भ:

- **https://dristiias.com**
- **www.sebi.gov.in**
- **https://cleartax.in**
- **https://en.wikipidia.org**

*****

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा दिनांक 14-15 सितंबर, 2023 को पुणे में आयोजित हिंदी दिवस समारोह-2023 एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में समिति को श्रेष्ठ कार्यनिष्पादन हेतु 'ख' क्षेत्र में प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। समिति की ओर से यह पुरस्कार प्रमुख (राजभाषा एवं संसदीय समिति), श्री संजय सिंह एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा के सदस्य सचिव एवं सहायक महाप्रबंधक (राजभाषा एवं संसदीय समिति) श्री पुनीत कुमार मिश्र ने प्राप्त किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा द्वारा राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन

दिनांक 07 अगस्त, 2023 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (बैंक), वडोदरा के संयोजन में वड़ोदरा, गुजरात में क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत कार्यरत सभी नगर समितियों के लिए **"कॉर्पोरेट क्षेत्र में ईएसजी का महत्त्व"** विषय पर हिंदी माध्यम से राष्ट्रीय सेमिनार का आयोजन किया गया। इस सेमिनार में नराकास (बैंक), वडोदरा के सदस्य कार्यालयों के स्टाफ सदस्यों सहित क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, मुंबई के अंतर्गत कार्यरत नगर समितियों के कुल 80 सदस्यों ने प्रतिभागिता की। इस अवसर पर डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य, उप निदेशक (का.), भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, मुंबई विशेष रूप से उपस्थित थीं।